वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 157

सहस्रनाम विधान

-रचयित्री-

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका
युगप्रवर्तिका गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष (अप्रैल 2006-अप्रैल 2007) के अन्तर्गत
उनकी जन्मदात्री माँ पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की
36वीं दीक्षा तिथि के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280236

चतुर्थ संस्करण	मगशिर कृष्णा 3	मूल्य
500 प्रतियाँ	वीर.नि.सं. 2533	60/-
	8 नवम्बर 2006	

प्रस्तावना

❑ *आर्यिका चन्दनामती*

प्रस्तुत "सहस्रनाम विधान" नामक काव्यकृति भक्त पाठकों के हाथों में पहुँच रही है। अनेक पूजन विधानों की तरह यह भी परमपूज्य गणिनी शिरोमणि आर्यिका रत्न श्री 105 ज्ञानमती माताजी की सरस लेखनी द्वारा विभिन्न छन्दों में निबद्ध किया गया है।

इस विधान में कुल 11 पूजाएँ हैं, जिसमें प्रथम तो समुच्चय पूजन है पुनः द्वितीयादि पूजाओं में 100-100 अर्घ्य हैं और अन्त में समुच्चय जयमाला है। इस प्रकार 160 पृष्ठों में मुद्रित इस कृति में 11 पूजा, 12 जयमाला, 1008 अर्घ्य, 11 पूर्णार्घ्य और 1 प्रशस्ति है जो विधान रचयित्री की प्राचीन जिनेन्द्र भक्ति को सूचित करती है। उन्होंने सन् 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा लेने के पश्चात् जब सर्वप्रथम "कातन्त्र रूपमाला" नामक संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया था, उसी का प्रयोग उन्होंने सन् 1955 में जिनसहस्रनाम मंत्रों को रचकर किया।

यह एक प्रेरणास्पद विषय है कि चूँकि आर्यिका श्री की लेखनी का शुभारम्भ ही जिनेन्द्र भगवान के 2-4 नहीं, पूरे एक हजार नाम का स्मरण करके उन्हीं के प्रति नमन और समर्पण से हुआ था, इसलिए उनकी लेखनी में ऐसा चमत्कार पैदा हो गया कि पुनः सन् 1969 से 1995 तक दो सौ ग्रन्थ लिखे हैं। वे सभी ग्रन्थ आगम से अनुस्यूत होने से विद्वज्जगत में पूर्ण प्रामाणिक हुए हैं। समस्त ज्ञानी आचार्य, उपाध्याय, मुनि, आर्यिका, सिद्धान्तशास्त्री, न्यायाचार्य, साहित्याचार्य आदि सभी इनकी एक-एक पंक्ति को श्रद्धापूर्वक ग्रहण करते हैं तथा अपने संघ में भी इनके द्वारा अनूदित कातंत्र रूपमाला, मूलाचार, नियमसार, समयसार, अष्टसहस्री आदि ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन कराते हैं।

सन् 1955 के बाद 1968 तक 13 वर्षों में पूज्य माताजी ने कोई विशेष ग्रन्थ लेखन न करके फुटकर स्तुतियाँ वगैरह तो रचीं किन्तु उस अन्तराल में मुख्य रूप से शिष्य-शिष्याओं को अध्ययन कराया तथा आचार्य श्री शिवसागर महाराज एवं आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के संघस्थ मुनि-आर्यिका, क्षुल्लक आदि को

भी आचार्य श्री के कहने पर अपने ज्ञान का लाभ प्रदान कर अध्ययन कराया। सन् 1969 में जयपुर चातुर्मास के मध्य मैंने स्वयं देखा कि सुबह से शाम तक 6-7 घंटे तक मेंहदी चौक के मन्दिर में पूज्य माताजी चतुर्विध संघ को अध्ययन कराती थीं तथा रात्रि में 4-5 घंटे तक अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद करती थीं। धन्य है इनका परिश्रम एवं साहित्य सृजन के प्रति लगन कि संग्रहणी रोग से ग्रसित शरीर के द्वारा इस प्रकार की कड़ी मेहनत करके अपने जीवन को अमर बना लिया।

जो भी कृति इनकी लेखनी से प्रसवित हुई, उसकी एक-एक पंक्ति जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती है। इस सहस्रनाम विधान में संस्कृत टीका के आधार से भगवान् के 1-1 नाम का अर्थ विश्लेषित कर प्रत्येक पाठक और पूजक के समझने लायक बना दिया है। जैसे–प्रथम पूजन की जयमाला में भगवान के दस स्वरूपों का वर्णन करके पुनः कहा है–

शेर छन्द–

मैं आप विविध नाम पुष्प गूँथ-गूँथ के।
स्तोत्र की माला बनाई पूजहूँ उससे॥
हे नाथ ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्ष महल में चढ़ें॥

आगे इसी जयमाला में समवसरण विभूति से युक्त जिनेन्द्र के बिहार का वर्णन करते हुए लिखा है–

जिनवर स्वयं तैयार श्री विहार के लिए।
बस इन्द्र की ये प्रार्थना नियोग के लिए॥

अर्थात् भगवान् न तो इन्द्र की प्रार्थना से विहार करते हैं और न ही बुद्धिपूर्वक वे विहार करते हैं, प्रत्युत भव्यों के पुण्य से भगवान् का श्री विहार होता है। पुनः पूजा नं० 3 की जयमाला में सोलहकारण भावनाओं का माहात्म्य दर्शाया गया है कि उनको भाने से तीर्थंकर जैसा महान् पद प्राप्त होता है। पूजा-भक्ति के साथ-साथ विधान की प्रत्येक जयमालाओं का यदि सूक्ष्मता से स्वाध्याय किया जावे तो अनेक ग्रन्थों का सार जानने में कोई परिश्रम नहीं होगा।

एक हजार आठ नामों में से भगवान् का एक नाम "विजितांतक" भी है उसका अर्थ बताते हुए पृ० 40 पर लेखिका ने लिखा है–

नरेन्द्र छन्द–

"विजितांतक" अन्तक यम जीता मृत्युंजयी तुम्हीं हो।
निज भक्तों को मृत्युमल्ल से सदा छुड़ाते तुम हो॥

अर्थात् स्वयं मृत्यु को जीतने वाले वीतरागी भगवान् अपने भक्तों को भी मृत्युमल्ल से छुड़ाकर मृत्युंजयी बना देते हैं, इसलिए गुरुजन प्रभु भक्ति करने की प्रबल प्रेरणा प्रदान करते हैं।

पूजा नं० 5 की जयमाला तो इतनी हृदयग्राही है कि पृ० नं० 64-65 से उसे प्रत्येक व्यक्ति को कंठस्थ कर लेनी चाहिए। प्रथमानुयोग में वर्णित अनेक महापुरुषों के ऊपर आए संकट एवं उनका निवारण कैसे हुआ ? यह जानने की तीव्र इच्छा के साथ-साथ इसे पढ़कर कष्ट सहन की क्षमता प्राप्त होती है। रोला छंद में इसके कुछ पद देखें–

सीता को जब राम, अग्नि प्रवेश कराया।
लिया आपका नाम, अग्नी नीर बनाया॥
वारिषेण के घात, हेतू शस्त्र चलायो।
आप नाम तत्काल, रत्ननहार बनायो॥
मनोरमा जप नाम, वज्र किवाड़े खोले।
विद्युच्चर तुम नाम, जप भव बंधन तोड़े।

पुनः इसी से आगे मनोवती सती, पूज्यपाद मुनिराज, मानतुंगाचार्य आदि का कथानक दर्शाया है और अपने लिए इसी तरह शक्ति प्रदान करने की माँग की है।

पूजा नं० 8 की जयमाला में अष्टप्रातिहार्य का वर्णन है जो प्रत्येक तीर्थंकर के बाह्य विभव के प्रतीक हैं।

पृ० नं० 121 पर भगवान् का एक नाम "शंकर" कहकर अर्घ्य चढ़ाते हुए बताया है कि शं अर्थात् सुख को करने वाले हे शंकर भगवान्! मेरे रागद्वेषादि

दुख नष्ट करके मुझे भी सुखी कीजिए। पूजा नं. 9 में समवसरण का अतिशय है जो दृष्टव्य है।

अंतिम 10 वीं पूजन में भगवान का एक नाम 'त्रिपुरारि' आया है जिसके दो अर्थ किए हैं कि हे भगवन्! द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म रूप तीन पुर को तुमने नाश कर दिया एवं जन्म, जरा और मरण रूप तीन नगरों को भस्म कर देने से आप त्रिपुरारि हैं।

इस विधान में 11 पूजाएँ हैं, 1008 अर्घ्य हैं और 12 जयमालाएँ हैं। इस विधान में जाप्यानुष्ठान के मंत्र निम्नलिखित हैं-

मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्रनामधारक श्री जिनेन्द्राय नमः।

2. ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरोभ्यो नमः।

इन दोनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र का अनुष्ठान करें।

वास्तव में पुस्तक का असली आनंद तो विधान करने वालों को ही प्राप्त हो सकता है। भक्ति गंगा में स्नान करने के इच्छुक भक्त पूज्य माताजी के नये-नये विधानों का सतत् इंतजार करते रहते हैं। सन् 1994 में अपनी जन्मभूमि टिकैतनगर में चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने इस विधान को लिखना शुरू किया और अपनी षष्ठिपूर्ति पर शरदपूर्णिमा के दिन 19 अक्टूबर को पूर्णकर प्रातः भगवान पार्श्वनाथ के श्रीचरणों में इसे समर्पित किया। साथ ही निज आत्मा को सिद्ध बनाने की उत्कट भावना भाते हुए भक्तों के लिए नई कृति प्रदान की।

प्रस्तुत कृति प्रत्येक साधक को परम्परा से सिद्ध प्राप्त कराने में कारण बने, यही मंगल भावना है।

❋ सहस्रनाम विधान ❋

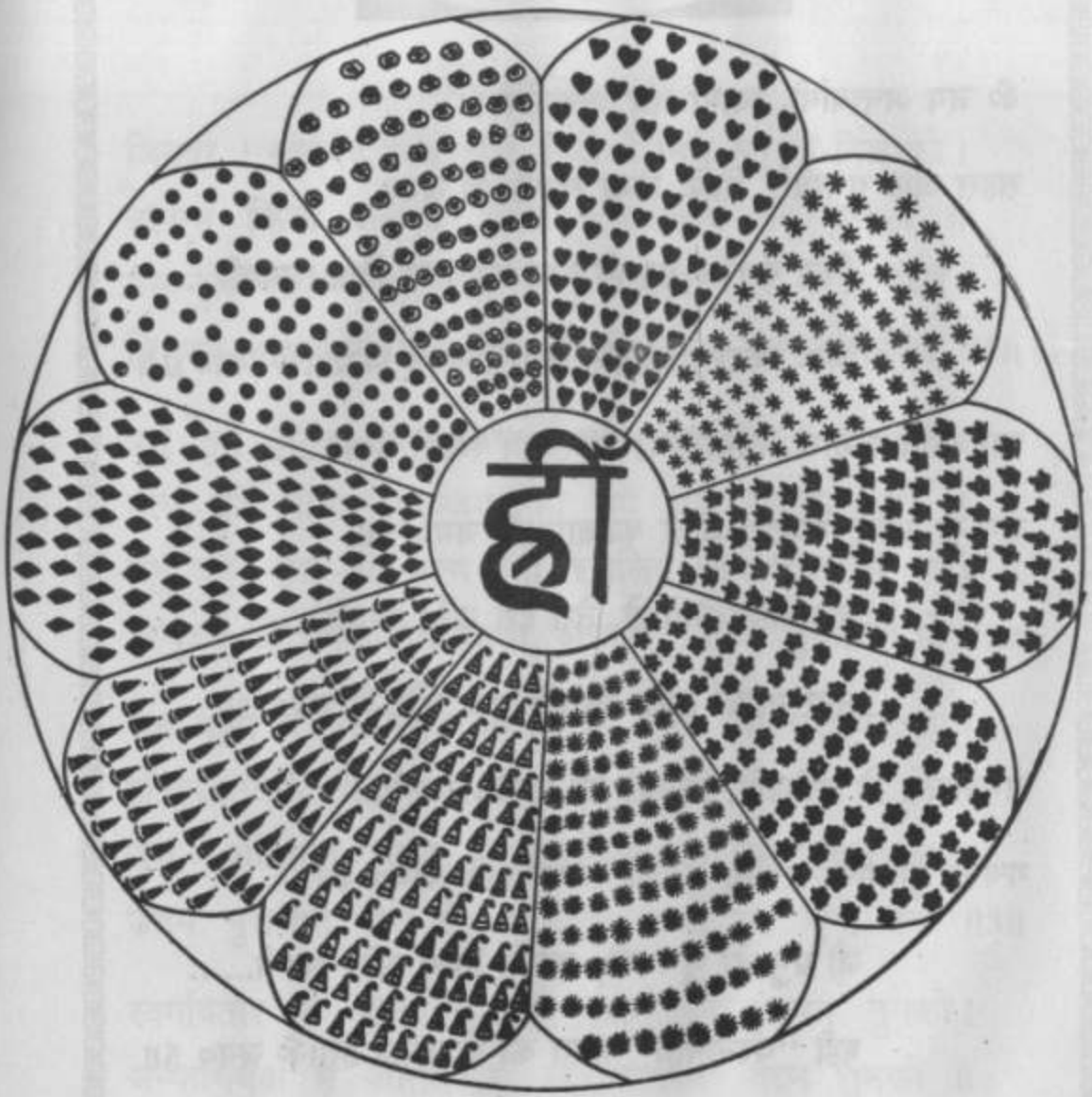

आरती

ॐ जय अन्तर्यामी, स्वामी जय अन्तर्यामी।

सहस आठ गुणधारी, सिद्धि प्रिया स्वामी॥ॐ जय॥

निज में निज हेतु ही निज को जन्म दिया। स्वामी.....

अतः स्वयम्भू कहकर, जग ने नमन किया॥ॐ जय० 1॥

घार घातिया नाश अर्धनारीश्वर कहलाए। स्वामी ईश्वर.....

जग के शांति विधाता, शंकर कहलाए॥ॐ जय० 2॥

इन्द्र सहस नेत्रों से, तेरा दर्श करें। स्वामी.....

नाम सहस्रों द्वारा, संस्तुति नृत्य करें॥ॐ जय० 3॥

समवसरण के अधिपति, जिनवर की वाणी। स्वामी.....

गणधर मुनिगण नरपति, सबकी कल्याणी॥ॐ जय० 4॥

जो प्रभु तेरे गुण की, आरति नित्य करें। स्वामी.....

वही "चंदनामती" जगत की पीड़ा सर्व हरे॥ॐ जय० 5॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

सहस्रनाम विधान

मंगलाचरण-शंभुछंद

जिनवर ! स्वयमेव स्वयं द्वारा, निज में निज हेतू ही निज को।
उत्पन्न किया अतएव 'स्वयंभू' कहलाये वंदूं तुमको ॥
प्रभु तुम माहात्म्य अचिन्त्य कहा, अतएव कोटि कोटी वंदन।
त्रिभुवन के स्वामी शत इंद्रों, से वंद्य अतः तव अभिनंदन ॥1॥

प्रभु तुम अनंत संसार नष्ट, करके 'अनंतजित' कहलाये।
मृत्यू को जीता 'मृत्युंजय, हो गये यही गणधर गायें ॥
प्रभु जन्म जरा अरु मरण हना, इसलिये आप 'त्रिपुरारी' हो।
त्रिभुवन को त्रयकालिक जाना, अतएव 'त्रिनेत्र' तुम्हीं तो हो ॥2॥

अठ कर्मों में चउ घाति अरी, नहिं अतः 'अर्धनारीश्वर' हो।
शिवपद पाया 'शिव' बने पाप, हर के 'हर' महादेव भी हो ॥
जग में शांतीकर 'शंकर' हो, जग श्रेष्ठ अतः तुम 'वृषभ' कहे।
उत्तम गुणधारी होने से, 'पुरुदेव' तुम्हीं यह मुनी कहें ॥3॥

स्वर्गावतार के होने से, प्रभु 'सद्योजात' नमन तुमको।
जन्माभिषेक में अतिसुन्दर, हो 'वामदेव' वंदन तुमको ॥
दीक्षा ले 'परम शांत' माने, केवलज्ञानी 'ईशान' बने।
शिवगामी भगवन् ! नमूं तुम्हें, मेरे सब वांछित कार्य बने ॥4॥

प्रभु ज्ञानावरण विनाश किया, अतएव 'अनंतचक्षु' तुम हो।
दर्शन आवरण विनाश किया, अतएव 'विश्वदृश्वा' जिन हो ॥
प्रभु दर्शन मोह नाश क्षायिक-दृष्टी हो तुमको शत वंदन।
चारित्रमोह हन 'वीतराग', बन गये कोटि-कोटी वंदन ॥5॥

प्रभु अंतराय नाशा अनंत, शक्ती अनंत सुख प्राप्त किया।
संपूर्ण अनंतों जीवों को, दे अभयदान 'प्रभु' नाम लिया ॥
नव केवललब्धी के स्वामी, अर्हंत परमपद के धारी।
मैं नमूं अनंतों बार तुम्हें, हे नाथ ! तुम्हीं भव भय हारी ॥6॥

हे नाथ ! मोक्षगति पाने से, बस आप 'सुगत' कहलाते हो।
इन्द्रिय मन रहित अतीन्द्रिय हो, ज्ञानी अनन्त कहलाते हो ॥
प्रभु अनाहार फिर भी 'परिपूर्ण, तृप्त' माने हो इस जग में।
अतएव सभी गणधर मुनिगण, तुम पादपद्म को नित प्रणमें ॥7॥

प्रभु समवसरण में द्वादश गण, बैठे क्रम से ध्वनि सुनें सभी।
पहले में गणधरगण मुनिगण, दूजे में कल्पवासि देवी ॥
तीजे में आर्यिका श्राविकायें, चौथे में भवनवासि देवी।
पंचम में व्यंतरनी छट्ठे में, बैठी ज्योतिष्की देवी ॥8॥

सप्तम में भावनसुर अष्टम में, व्यंतर नवमें ज्योतिष सुर।
दशवें में कल्पवासि सुर हैं, ग्यारहवें चक्री श्रावक नर ॥
बारहवें में पशुगण बैठे, सब बाधा रहित बैठते हैं।
संख्यात मनुज तिर्यंच, असंख्याते सुरवृंद तिष्ठते हैं ॥9॥

सब निज निज भाषा में प्रभु की, ध्वनि सुनते सम्यग्दृष्टी हैं।
अठरा महभाषा सात शतक, लघु भाषा में ध्वनि खिरती है ॥
जब सहस्राक्ष ही स्वयं सहस्रों, नामों से संस्तुति करता।
तव नाम मंत्र ये अतिशायी, इन जपते ही भव भय नशता ॥10॥

मैं सहस्रनाम विधान रचूं, ये मंत्र सहस्रों पाप हरें।
वांछा सहस्र भी पूर्ण करें, अरु विघ्न हजारों चूर करें ॥
इस विधि मंगलकारी विधान, संपूर्ण अमंगल दूर करें।
मैं पुष्पांजलि कर आरंभू, शुभ क्षेम परम आनंद भरे ॥11॥

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

समुच्चय पूजा नं० 1

अथ स्थापना–शंभु छंद

जिनवर की प्रथम दिव्य देशना, नंतर सुरपति अति भक्ती से।
निज विकसित नेत्र हजार बना, प्रभु को अवलोके विक्रिय से ॥
प्रभु एक हजार आठ लक्षणधारी सब भाषा के स्वामी।
शुभ एक हजार आठ नामों, से स्तुति करता वह शिवगामी ॥
दोहा– एक हजार सु आठ ये, श्री जिननाम महान्।
उनकी मैं पूजा करूँ, करके इत आह्वान ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-चाल–नंदीश्वर पूजा

सरयू नदि का शुचिनीर, सुवरण भृंग भरूँ।
मिल जावे भवदधि तीर, जिनपद धार करूँ॥
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुख प्रद स्वात्म भजूँ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

काश्मीरी केशर शुद्ध, चंदन संग घिसूँ।
जिनपद चर्चत अविरुद्ध, भव संताप नशूँ॥शुभ०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः चंदन.....।

मोती सम उज्जवल धौत, तंदुल पुंज धरूँ।
मिल जावे, अक्षय सौख्य, प्रभु पद पूज करूँ॥शुभ०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

जूही केवड़ा गुलाब, सुरभित सुमनों से।
पूजत छुट जाऊँ नाथ, भव भव भ्रमणों से॥शुभ॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्य पुष्पं.....।

पूरण पोली घृतपूर, हलुआ भर थाली।
पूजत हो अमृतपूर, मनरथ नहिं खाली॥
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुख प्रद स्वात्म भजूँ ॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
भगता मन का तम जाल, ज्योती प्रगटे ही ॥शुभ०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

दस गंधी धूप सुगंध, खेवूँ अगनी में।
सब जलते कर्म प्रबंध, पाऊँ निजसुख मैं ॥शुभ०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

अंगूर आम फल सेव, अर्पण करते ही।
निज आतम सम्पति लेव, फल से जजते ही ॥शुभ०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

जलचंदन अक्षत आदि, अर्घ बनाऊँ मैं।
अर्पण करते भव व्याधि, सर्व नशाऊँ मैं ॥शुभ०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा– सहस नाम को पूजहूँ, शांतीधारा देय।
सर्वसौख्य सम्पति मिले, आत्मसुधा वरसेय॥10॥

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प बहु, सुरभित दिक् महकंत।
पुष्पांजलि अर्पण किये, आतम सुख विलसंत॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

नाप्य– ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– महातेज के धाम प्रभु, नमूं नमूं त्रयकाल।
एक हजार सु आठ तुम, नाममंत्र जयमाल॥1॥

चाल-शेर हे दीनबंधु....

जय जय जिनेंद ! तुम असंख्य नाम गुण भरें।
जय जय जिनेंद्र ! तुम अनंत सौख्य गुण भरें॥
हे नाथ ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़े।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्ष महल में चढ़े॥2॥
हे नाथ ! यदपि आप नाम वचन से कहें।
फिर भी वचन अगोचर मुनिगण तुम्हें कहें ॥हे नाथ०॥3॥
तुम नाम संस्तवन सदा अभीष्ट को फले।
भगवन् तुम्हीं तो भक्तों के बंधु हो भले ॥हे नाथ०॥4॥
स्वामिन् ! जगत्प्रकाशी हो 'एक' ही तुम्हीं।
हो ज्ञान दर्श गुण से 'दोरूप' भी तुम्हीं ॥हे नाथ० ॥5॥
रत्नत्रयी शिवमार्ग से प्रभु 'तीनरूप' हो।
आनन्त्य चतुष्टय से प्रभु 'चाररूप' हो ॥हे नाथ० ॥6॥
हो पंच परमेष्ठी स्वरूप 'पांचरूप' भी।
प्रभु पंच कल्याणक से भी 'पांचरूप ही ॥हे नाथ० ॥7॥
जीवादि छहों द्रव्य जानते 'छहरूप' हो।
प्रभु सात नयों को निरूप 'सातरूप' हो ॥हे नाथ० ॥8॥
सम्यक्त्व आदि आठ गुण से 'आठरूप' हो।
नव केवली लब्धी से आप 'नवस्वरूप' हो ॥हे नाथ० ॥9॥
अवतार दश[1] महाबलादि 'दशस्वरूप हो।
हे ईश ! दया कीजिए त्रैलोक्य भूप हो ॥हे नाथ० ॥10॥
मैं आप विविध नाम पुष्प गूँथ-गूँथ के।
स्तोत्र की माला बनाई पूजहूँ उससे ॥हे नाथ० ॥11॥
भगवन् प्रसन्न होय अनुग्रह करो मुझपे।
स्तोत्र से वच हों पवित्र शीश नमें से ॥हे नाथ० ॥12॥
प्रभु नाम स्मृतिमात्र से भाक्तिक पवित्र हों।
जो भक्ति से पूजा करें कल्याण पात्र हों ॥हे नाथ० ॥13॥

इस विध समवसरण में इंद्र ने स्तुति किया।
फिर श्री विहार हेतु प्रभु से प्रार्थना किया॥
हे नाथ ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़े।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्ष महल में चढ़े॥14॥
हे नाथ ! भव्य धान्य पाप अनावृष्टि से।
सूखें उन्हें सींचो सुधर्म सुधावृष्टि से ॥हे नाथ० ॥15॥
भगवंत ! आप विजय की उद्योग सूचना।
ये धर्मचक्र है तैयार शोभता घना ॥हे नाथ० ॥16॥
हे देव ! आप मोह शत्रु पे विजय किया।
शिवमार्ग के उपदेश का अवसर ये आ गया ॥हे नाथ० ॥17॥
जिनवर स्वयं तैयार श्रीविहार के लिए।
बस इंद्र के ये प्रार्थना नियोग के लिए ॥हे नाथ० ॥18॥
तत्क्षण समवसरण सभी विलीन हो गया।
इंद्रों ने प्रभु विहार का उत्सव महा किया ॥हे नाथ० ॥19॥
जय जय ध्वनी ऊँची उठी बाजे बजे घने।
संगीत गीत नृत्य करें देवगण घने ॥हे नाथ० ॥20॥
आकाश में अधर सुवर्ण कमल रच दिए।
सुरभित कमल पे नाथ चरण धरत चल दिए ॥हे नाथ० ॥21॥
गंधोद वृष्टि, पुष्पवृष्टि मंद पवन है।
अतिशय विभूति आप के विहार समय है ॥हे नाथ० ॥22॥
आरे हजार धर्मचक्र चमचमा रहा।
जिनराज आगे-आगे चले शोभता महा ॥हे नाथ० ॥23॥
हे देव ! मेरी प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।
'कैवल्यज्ञानमती' नाथ ! तूर्ण[2] दीजिए ॥हे नाथ० ॥24॥

---

1. भगवान आदिनाथ के महाबल
2. जल्दी

घत्ता– जय जिन नामावलि, स्तुति हारावलि, जो भविजन कंठे धरहीं।
उन स्मृति शक्ती, क्षण क्षण बढ़ती, 'अतिशय ज्ञान करें सबहीं ॥25॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणांअष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद– जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें॥

इत्याशीर्वादः

पूजा नं० 2

स्थापना-शंभु छंद

तीर्थंकर प्रभु के गुण अनंत, ऐसे ही नाम अनंते हैं।
शारद मां कहने में अक्षम, गणधर भी नहिं कह सकते हैं॥
उनमें से कुछ कुछ नाममंत्र, लेकर हम पूजा करते हैं।
आह्वानन आदि विधी करके, निज स्वात्म संपदा भरते हैं ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव

वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक-स्रग्विणी छंद

घातिया पापमल धो लिया आपने।
नीर ले मैं जजूं स्वात्ममल धोवने ॥
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूं।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूं ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

सर्व संताप को नाशिया आपने।
गंध से पूजहूँ शांतिकर पाद मैं ॥आपके०॥2॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदन.....।

आप सौख्याब्धि में आप अवगाहते।
शालि से जो जजें स्वात्मसुख पावते॥आपके०॥3॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

कामशर जीत के आप विष्णू बने।
कल्पतरु के सुमन लेय अर्चूं तुम्हें॥आपके०॥4॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

वेदना भूख की ना कभी छोड़ती।
यदि चरू से जजें शीघ्र मुख मोड़ती॥आपके०॥5॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

मोह अंधेर हन पूर्ण ज्योती धरें।
दीप से पूजते ज्ञान ज्योती भरें॥आपके०॥6॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

धूप को खेवते कर्म ईंधन जले।
आपके पाद ही सब तीरथ भले॥आपके०॥7॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

इन्द्रियों के विषय छोड़ निज सुख लिया।
आपको फल चढ़ा स्वात्मरस चख लिया॥आपके०॥8॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

अष्ट द्रव्यादि से अर्घ्य सुन्दर लिया।
आपको अर्चते पाप सब क्षय किया॥आपके०॥9॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा– नाममंत्र को पूजहूँ, शांतीधारा देय।
सर्व सौख्य संपति मिले, आत्मसुधा बरसेय ॥10॥
शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प बहु, सुरभित दिक् महकंत।
पुष्पांजलि अर्पण किये, आतम सुख विलसंत ॥11॥
दिव्य पुष्पांजलि।

अर्थ प्रत्येक अर्घ्यं

सोरठा

गुण अनंत भंडार, नाम असंख्यों धारते।
स्वात्म सौख्य कर्तार, पुष्पांजलि से पूजहूँ॥1॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

'श्रीमान्' आप अन्तर अनन्त सुख ज्ञान वीर्य दर्शन श्रीपति।
बहिरंग समवसरणादि महावैभव प्रातिहार्यमयी श्रीपति॥
इन अन्तरंग बहिरंग श्री के स्वामी प्रभु श्रीमान् बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'स्वयंभू' हुये प्रभु निज में निज ज्ञान प्रगट करके।
नहिंगुरु की तनिक अपेक्षा थी निज को गुरु स्वयं बना करके॥
निज द्वारा निज को निज में ध्या, स्वयमेव स्वयंभू आप बनें ॥मैं।2।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'वृषभ' धर्मघन मेघ सतत् दिव्यध्वनि वर्षा करते हैं।
'वृष' धर्म अहिंसा लक्षण से 'भा' शोभित होते रहते हैं ॥
अथवा भक्तों के लिये सदा इच्छित वर्षाकर वृषभ बने ॥मैं।3 ।

ॐ ह्रीं वृषभाय नमः अर्घ्यं.....।

'शंभव' शं-सुख भव-हो तुमसे इससे शंभव कहलाते हो।
अथवा 'संभव' सं-समीचीन भव-जन्म धरा मुस्काते हो ॥
हे संभव शांतमूर्ति प्रभु तुम वंदन करते हम शांत बने ॥ मैं।4।

ॐ ह्रीं शंभवाय नमः अर्घ्यं.....।

'शम्भू' शं-परमानन्दरूप सुख देने वाले आप प्रभो।
इंद्रिय विषयों से रहित अतीन्द्रिय सौख्य सुधारस लीन विभो ॥
परमानन्दामृत पीने की शक्ती दीजे हे नाथ ! हमें ॥मैं।5।

ॐ ह्रीं शंभवे नमः अर्घ्यं.....।

आत्मा से हुये 'आत्मभू' हैं आत्मा शुध बुद्ध स्वभावी है।
चिच्चमत्कार लक्षण परमैक ब्रह्ममय सौख्य स्वभावी है॥
टंकोत्कीर्ण स्फटिकमणी आत्मा भू-धरा पाइ तुमने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें॥6॥

ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'स्वयंप्रभ' आप स्वयं, प्रकृष्ट शोभते रहते हैं।
निज प्रभा-कांति से त्रिभुवन को भी आप प्रकाशित करते हैं॥
मेरी निज आत्मप्रभा मुझको, मिल जावे गुणमणि तेज घने ॥मैं।7।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! आप 'प्रभु' हो सबके स्वामी होने से इस जग में।
परिपूर्ण समर्थ नाथ तुमही, भक्तों के मनरथ भरने में ॥
मैं स्वयं समर्थ बनूँ निज़ को, पाने में सब पुरुषार्थ बनें ॥मैं।8।

ॐ ह्रीं प्रभवे नमः अर्घ्यं.....।

'भोक्ता' प्रभु आप सदा परमानंदसुख के अनुभव कर्ता हैं।
निजके अनंत दृग ज्ञान वीर्य सुखरूप चतुष्टय भर्ता हैं ॥
निज आत्मा से उत्पन्न परम आह्लाद सौख्य हो प्राप्त हमें ॥मैं।9।

ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'विश्वभू' केवलज्ञान अपेक्षा व्याप्त विश्व में हो।
अथवा भू-मंगल करें विश्व का या वृद्धी भी करते हो ॥
भू गत्यर्थक-ज्ञानार्थक है त्रैलोक्य ज्ञान है नाथ तुम्हें॥मैं।10।

ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः अर्घ्यं.....।

'अपुनर्भव' नाथ पुवर्भव नहिं प्रभु जन्म मरण से छूट चुके।
अथवा भव-रुद्र विष्णु ब्रह्मा इन देवरूप नहिं हो सकते ॥
अर्हत सर्वज्ञ आप भगवन् नहिं पुनर्जन्म धरते जग में ॥मैं।11।

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं.....।

'विश्वात्मा' आप विश्व को निज सदृश गिनते विश्वात्मा हैं।
या विश्व-सुकेवल ज्ञानमयी आत्मा-स्वरूप विश्वात्मा हैं॥
त्रिभुवनस्थित प्राणीगण को, निज सदृश गिना सु दयालु बने ॥मैं।12।

ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'विश्वलोकेश' विश्वके-तीनलोक के जीवों के।
प्रभु ईश-नाथ बस एक आप, नहिं अन्य कोई भी बन सकते॥
जो खुद की रक्षा कर न सके वो जग के ईश कभी न बनें॥मैं।13।

ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! 'विश्वतश्चक्षु' आप सब विश्व-लोक में व्याप्त हुआ।
चक्षू-केवल दर्शन प्रभु का इससे प्रभु ने सब देख लिया॥
श्रुतचक्षू से केवलचक्षू पाया जगदर्शी आप बने॥मैं।14।

ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं.....।

'अक्षर' प्रभु क्षरण न होता है, नहिं चलित आप हो सकते हैं।
या अक्ष-इन्द्रियों को मन को, वश में कर अक्षर बनते हैं॥
तुम नाम स्तुति करते करते, मेरा भी अक्षर नाम बने॥मैं।15।

ॐ ह्रीं अक्षराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'विश्ववित्' ज्ञानरश्मि से विश्व माहिं सुप्रविष्ट हुये।
सब विश्व-चराचर जग जाना, अतएव विश्ववित् प्रगट हुये॥
यह आत्मा ज्ञानस्वभावी है मुझ अल्पज्ञान भी पूर्ण बने॥मैं।16।

ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'विश्वविद्येश' आपकी विद्या विश्वा-सकला है।
वह सकल विमल कैवल्य ज्ञानमय पूर्ण स्वरूप अविकला है॥
तुम गुण गा गा कर भव्य जीव, सब विद्याओं के ईश बने॥मैं।17।

ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वयोनि' संपूर्ण पदार्थों की उत्पति के कारण हो।
संपूर्ण पदार्थों के उपदेशक विश्वयोनि जगतारण हो॥
तुम नाम मंत्र जपते जपते, भाक्तिक जन तुम सम नाथ बने॥मैं।18।

ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'अनश्वर' कभी नाश, नहिं हो सकता युग युग तक भी।
आत्मा के नाशक गुणघातक, कर्मों का नाश किया है भी॥
प्रभु मुझे अनश्वर पद दे दो, इस हेतु वंदना करूँ तुम्हें॥मैं।19।

ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'विश्वदृश्वा' हो जग को इक क्षण में ही देख लिया।
तुम गुणस्तुति करते करते, भव्यों ने तुमको देख लिया ॥
मैं भी तुमको अवलोकन कर, निज को देखूँ यह युक्ति बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें॥20॥

ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं.....।

'विभु' आप विशेष करें मंगल, भविके तारन में समरथ हैं।
निज समवसरण में प्रभू राजते लोकालोक विजानत हैं ॥
निजकेवलज्ञानकिरण से लोकालोक व्याप्त कर विभू बनें ॥मैं।21।

ॐ ह्रीं विभवे नमः अर्घ्यं.....।

'धाता' चहुंगति में पड़े जीव को निकाल कर मुक्तीपद में।
धर देते अथवा सर्व प्राणियों, का पालन करते जग में ॥
प्रभु परम कारुणिक आप, सर्व रक्षा कर धाता स्वयं बनें ॥मैं।22।

ॐ ह्रीं धात्रे नमः अर्घ्यं.....।

'विश्वेश' विश्व-त्रैलोक्य ईश-स्वामी त्रिभुवन के रक्षक हो।
उपदेश अहिंसामयी दिया, सबके बंधू प्रतिपालक हो ॥
प्रभु धर्म आपका विश्व धर्म, भवसागर तारण सेतु बने ॥मैं।23।

ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'विश्वलोचन' त्रिभुवन, प्राणी के चक्षु समान कहें।
सबको हित का उपदेश दिया,इस कारण सबके नेत्र कहें ॥
अथवा सब जगका इक क्षण में, अवलोकन करते आप घने ॥मैं।24।

ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'विश्वव्यापी' कण कण में ज्ञान आपका व्याप रहा।
त्रिभुवन के सर्वपदार्थ आप, जाने ऐसा विज्ञान लहा ॥
नहिं आत्म प्रदेशों से व्यापक, तन में ही रहें प्रदेश घने ॥मैं।25।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं.....।

हरिगीतिका–छंद

'विधु'[1] आप कर्म विधान करते कर्म विधि बतलावते।
निजज्ञान केवल किरण से, मोहान्धकार भगावते ॥

1. आदि पु० में 'विधि' पाठ है।

निज ज्ञान ज्योती प्रगट हेतू नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ॥26।

ॐ ह्रीं विधवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'वेधा' धर्म की सृष्टी करें सुखहेतु हैं।
जिनधर्म तीर्थ चलावते, इस हेतु भवदधि सेतु हैं ॥निज।27।

ॐ ह्रीं वेधसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु नाम 'शाश्वत' धारते, शश्वत विराजें मोक्ष में।
निज भक्त को शाश्वत, परमपद दे रहे हैं लोक में ॥निज।28।

ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वतोमुख' समवसृति में, चारदिश चउमुख दिखें।
या जल सदृश भवि पाप कीचड़, धोय स्वच्छ सु कर सकें ॥निज।29।

ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वकर्मा' कर्मभूमी, की व्यवस्था के समय।
असि मषि प्रभृति सब क्रिया, उपदेशी सभी को उस समय ॥निज।30।

ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'जगज्जेष्ठ' त्रिलोक में, भी ज्येष्ठ-श्रेष्ठ महान हैं।
तुमसे बड़ा नहिं और कोई, अतः सर्व प्रधान हैं ॥निज।31।

ॐ ह्रीं जगज्जेष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु'विश्वमूर्ति' अनंत गुणमय देहधारी आप हैं।
या सर्व वस्तु ज्ञान दर्पण में, झलकते साफ हैं ॥निज।32।

ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

भगवन् ! 'जिनेश्वर' भव्य, सम्यग्दृष्टि मुनिगण आदि के।
ईश्वर कहाते आप इस, हेतू जिनेश्वर सार्व के ॥निज।33।

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वदृक्' संसार की, सब वस्तु सत्तामात्र से।
अवलोकते हैं आप नित, प्रति सर्वदर्शी नाम से ॥निज।34।

प्रभु 'विश्वभूतेशा' तुम्हीं, सब प्राणिगण के ईश हैं।
या विश्वभू-त्रैलोक्य लक्ष्मी, ईश सब भूतेश हैं ॥
निज ज्ञान ज्योती प्रगट हेतू नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मन्त्र अमोघ शक्ती, उसी की चर्चा करूँ ॥निज।35।

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वज्योती' विश्व के लोचन जगत में ख्यात हैं।
प्रभु आप केवलज्ञान ज्योती, सर्व जग में व्याप्त है ॥निज।36।

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

भगवन्!'अनीश्वर' आपसम, नहिं अन्य,ईश्वर लोक में।
प्रभु ईश सबके आप नहिं कोई, आपका प्रभु लोक में ॥निज।37।

ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

जिन आप घाती कर्मशत्रू, जीतकर 'जिन' हो गये।
मन इंद्रियों को जीतकर, 'जिन' नाम सार्थक कर दिये ॥निज।38।

ॐ ह्रीं जिनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'जिष्णु' तुम कर्मारि जीतन, का स्वभाव प्रसिद्ध है।
जयशील शासन आपका, जग में सदैव विशुद्ध है ॥निज।39॥

ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अमेयात्मा' आप में, आनन्त्य गुण अतिशय भरे।
नहिं जान सकता अन्य कोई, माप नहिं सकता खरे ॥निज।40।

ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वरीश' तुम्हीं मही के ईश जग में ख्यात हैं।
इस हेतु भविजन नित्य ही, तुम को नमाते माथ हैं ॥41॥

ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु जगत्पति' त्रैलोक्य के, स्वामी भविक त्राता तुम्हीं।
रक्षा करो सब द्वंद्व से, सुख शांति होवे आज ही ॥निज।42।

ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! आप 'अनंतजित्' मिथ्यात्व आदी जीत के।
प्रभु नाम सार्थक कर दिया, संसार अनंत सुजीत के ॥निज।43।

ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अचिन्त्यात्मा' तुम स्वरूप, अचिन्त्य जन मन वचन से।
नहिं चिंतवन कर सके कोई, आप आत्मा चित्त से॥निज॥44॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'भव्यबंधु' भव्य जन के, बंधु उपकारक तुम्हीं।
जो रत्नत्रय के योग्य हैं उनके हितंकर हो तुम्हीं॥निज॥45॥

ॐ ह्रीं भव्यबंधवे नमः अर्घ्यं.....।

भगवन् ! 'अबंधन' कर्म बंधन, से रहित गुणखान हो।
सब मोहद्वय आवरण विघ्न विघात कर जग मान्य हो॥निज॥46॥

ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः अर्घ्यं.....।

भगवन् 'युगादीपुरुष' चौथे काल युग की आदि में।
प्रभु तीर्थकर पहले हुये युग आदि पुरुष भरत में ॥निज॥47॥

ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं.....।

'ब्रह्मा' सुकेवल ज्ञान आदिक गुण सुवृद्धिंगत हुये।
निज शुद्ध आत्मजनित सुखामृत तृप्त ब्रह्मा तुम्हीं हुये॥निज॥48॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'पंचब्रह्मामय' सु पांचों ज्ञानमय विख्यात हो।
या पंचपरमेष्ठी स्वरूप अनंत गुण से सार्थ हो॥निज॥49॥

ॐ ह्रीं पंचब्रह्मामयाय नमः अर्घ्यं.....।

'शिव' मोक्ष हो आनंदमय, हो सर्व दोष विहीन हो।
निर्वाण अक्षय शांत परम कल्याण पद में लीन हो॥निज॥50॥

ॐ ह्रीं शिवाय नमः अर्घ्यं.....।

रोला छंद

प्रभु 'पर' नाम सुआप, सब जीवों को पालें।
ज्ञान आदि गुण सर्व, पूरण करने वाले ॥
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से॥51॥

ॐ ह्रीं पराय नमः अर्घ्यं.....।

'परतर' नाम धरंत, सबसे श्रेष्ठ तुम्हीं हो।
हित उपदेश करंत, प्रभु सर्वेश तुम्हीं हो॥नाम०॥52॥

ॐ ह्रीं परतराय नमः अर्घ्यं.....।

'सूक्ष्म' आप मन इंद्रिय, इनके विषय नहीं हो।
केवलज्ञान अतीन्द्रय उनके विषय सही हो॥
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से॥53॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं.....।

'परमेष्ठी' प्रभु परम, उत्तम पद में तिष्ठो।
अर्हत सिद्धाचार्य आदि पाँचपद तिष्ठो॥नाम०॥54॥

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं.....।

नाम 'सनातन' आप सदा एक से रहते।
सदा सदा विद्मान, रूप पुरातन धरते॥नाम०55॥

ॐ ह्रीं सनातनाय नमः अर्घ्यं.....।

'स्वयंज्योति' प्रभु आप, स्वयं आत्मा ज्योती।
चक्षू जगत्प्रकाश, स्वयं सूर्यमय ज्योती॥नाम०56॥

ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! आप 'अज' नाम, जग में नहिं उत्पत्ती।
सदा जपूँ तुम नाम, मिले निजातम शक्ती॥नाम०57॥

ॐ ह्रीं अजाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'अजन्मा' आप, जन्म कभी नहिं धारो।
गर्भवास नहिं आप, मेरा जन्म निवारो॥नाम०58॥

ॐ ह्रीं अजन्मने नमः अर्घ्यं.....।

'ब्रह्मयोनि' प्रभु आप, द्वादशांगमय वेदा।
इनकी उत्पति आप, से होती बिन खेदा॥नाम०॥59॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'अयोनिज' आप, योनि लाख चुरासी।
इनमें नहिं उत्पाद, हरो सकल दुख राशी॥नाम०॥60॥

ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः अर्घ्यं.....।

'मोहारीविजयीश', मोहशत्रु को जीता।
या अरि मोह के आप, विजयशील शिवनीता'॥नाम०॥61॥

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः अर्घ्यं.....।

मृत्यु मल्ल को जीत, 'जेता' आप कहाये।
सर्व जगत के मीत,[2] कर्म शत्रु जय पाये॥नाम०॥62॥

ॐ ह्रीं जेत्रे नमः अर्घ्यं.....।

धर्मचक्र के ईश, श्रीविहार कर जग में।
भव्यों को संबोध, 'धर्मचक्रि' त्रिभुवन में॥नाम०॥63॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'दयाध्वज' आप, दया ध्वजा फहरायी।
अथवा दया सुमार्ग, प्रगटाया सुखदायी॥नाम०॥64॥

ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रशान्तारि' प्रभु आप, कर्म शत्रु बलवंता।
उनको किया प्रशांत, पूर्ण शांत भगवंता॥नाम०॥65॥

ॐ ह्रीं प्रशांतारये नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'अनन्तात्मा' अनंत केवलज्ञानी।
या अनंत अविनाश, अंतरहित शिवगामी॥नाम०॥66॥

ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः अर्घ्यं.....।

'योगी' चित्त निरोध, करके निज को ध्याया।
मन वच तन कर शुद्ध, परम समाधि लगाया॥नाम०67॥

ॐ ह्रीं योगिने नमः अर्घ्यं.....।

योगी मुनि के ईश, गणधर से भी अर्चित।
'योगिश्वरार्चित' गीत, तीन भुवन में चर्चित॥नाम०॥68॥

ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'ब्रह्मवित्' आप, ब्रह्म-आत्म को जाना।
उसका अनुभव-स्वाद, कर लीना शिव थाना॥नाम०॥69॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' आत्मतत्त्व के ज्ञानी।
ज्ञान दया का मर्म, जान हुये निज ज्ञानी॥नाम०॥70॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

'ब्रह्मोद्याविद्' आप, ब्रह्म विद्या के वेत्ता।
आत्म विद्या के नाथ, त्रिभुवन के गुरु नेता॥नाम०॥71॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'यतीश्वर' आप, यतियों के ईश्वर हो।
रत्नत्रय में यत्न करें यती उन गुरु हो॥
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से॥72॥

ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

'शुद्ध' आप रागादि, भाव कर्ममल रहिता।
स्फटिकमणी सम नाथ, करो मुझे मल रहिता॥नाम०॥73॥

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं.....।

'बुद्ध' आप संपूर्ण, वस्तु जानते ज्ञानी।
केवलज्ञान सुबुद्धि, पायी अंतर्यामी॥नाम०॥74॥

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रबुद्धात्मा' आप, सदा आपकी आत्मा।
शुद्ध ज्ञान से जगमगती सर्व गुणात्मा॥नाम०॥75॥

ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं.....।

चौपाई

नाम 'सिद्धार्थ' धरें जगसिद्धा।
सर्व प्रयोजन हुये सुसिद्धा॥
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ।
परमानंदमय निजसुख भजहूँ॥76॥

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सिद्धशासन' तुम जग में।
शासन सर्व हितंकर सच में॥मैं०॥77॥

ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'सिद्ध' निजगुणमणि नंते।
प्राप्त किया शिवगामी संते॥मैं०॥78॥

ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सिद्धांतविद्' सर्वप्रकाशी।
द्वादशांग जानो निज भासी॥मैं०॥79॥

ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः अर्घ्यं.....।

'ध्येय' आप, मुनिगण आराध्या।
योगिध्यान के ध्येय सुसाध्या॥मैं०॥80॥

ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः अर्घ्यं.....।

'सिद्धसाध्य' प्रभु के सब कार्या।
सिद्ध हो चुके हैं निरबाध्या॥मैं०॥81॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'जगद्धित' जग हितकर्ता।
सबके लिए 'पथ्य' सुखभर्ता॥मैं०॥82॥

ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सहिष्णु' गुण क्षमा धरे हो।
सहनशील हो सौख्य भरे हो॥मैं०॥83॥

ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

'अच्युत' निज स्वभाव से च्युत ना।
ज्ञानादिकगुण युत परमात्मा॥मैं०॥84॥

ॐ ह्रीं अच्युताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अनंत' अन्तक से रहिता।
गुण अनंत सुख आदिक सहिता॥मैं०॥85॥

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रभविष्णू' बहु प्रभावशाली।
शक्ती अनंती समरथशाली॥मैं॥86॥

ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'भवोद्भव' भव सब श्रेष्ठा।
पंचविधा संसार विनष्टा॥मैं०॥87॥

ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'प्रभूष्णु' सब शक्तीशाली।
इंद्रादिक के प्रभु गुणमाली॥मैं०॥88॥

ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

'अजर' वृद्ध नहिं होते कबहूँ।
सर्व दुःख नाशो मुझ अबहूँ॥मैं०॥89॥

नाथ 'अजर्य'[1] नाम के धारी।
तुम गुण जीर्ण न हों अविकारी॥मैं०॥90॥

ॐ ह्रीं अजर्याय नमः अर्घ्यं.....।

'भ्राजिष्णू' ज्ञानादि गुणों से।
अतिशय दीप्तमान् निज सुख से॥मैं०॥91॥

ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

'धीश्वर' केवलज्ञानमयी जो।
बुद्धी उसके ईश्वर प्रभु हो॥मैं०॥92॥

ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

'अव्यय' व्यय नहिं नाथ तुम्हारा।
शिवपद प्राप्त किया सुखकारा॥मैं०॥93॥

ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः अर्घ्यं.....।

कर्मेंधन को अग्निसमाना।
'विभावसु' तमहर रवि माना॥मैं०॥94॥

ॐ ह्रीं विभावसवे नमः अर्घ्यं.....।

पुनि उत्पन्न जगत में नहिं हों।
'असंभूष्णु' मुझ जन्मविलय हो॥मैं०॥95॥

ॐ ह्रीं असम्भूष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

'स्वयंभूष्णु' स्वयमेव हुये हो।
सिद्ध अवस्था प्राप्त किये हो॥मैं०॥96॥

ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'पुरातन' बहु प्राचीना।
द्रव्यदृष्टि से आदि विहीना॥मैं०॥97॥

ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः अर्घ्यं.....।

'परमात्मा' अतिशय उत्कृष्टा।
परम ज्ञानसुख गुणमणि निष्ठा॥मैं०॥98॥

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घ्यं.....।

---

1. टीकाकार ने 'अयज्यः' पाठ माना है।

परमोत्कृष्ट ज्योतिमय ज्ञानी।
'परंज्योति' गुणमणि रजधानी॥
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ।
परमानंदमय निजसुख भजहूँ॥99॥

ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

तीन जगत् के परमेश्वर हो।
'त्रिजगत्परमेश्वर' तुम हो ॥मैं०॥100॥

ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

'श्रीमान' नाम से लेकर के, 'त्रिजगत्परमेश्वर' तक नामा।
सौ नाम आपके सार्थक हैं, इंद्रों से स्तुत गुणधामा॥
इन नाममंत्र को जप जप के, बस 'सिद्ध' नाम इक पा जाऊँ।
प्रभु तुम सम शुद्ध अवस्था हो, नहिं बार बार जग में आऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- जन्म मरण व्याधी महा, उसके नाशन हेतु।
आप भिषग्वर विश्व में, नमूं नमूं शिव हेतु॥1॥

पंच चामर छंद

जयो जिनेश ! आपही अनंत ज्ञान पुंज हो।
जयो जिनेश ! आपही अनंत दर्शकुंज हो॥
जयो जिनेश ! आपही अनंत वीर्यवान् हो।
जयो जिनेश ! आपही अनंत सौख्यधाम हो॥2॥
स्वयंवरा अनंत ऋद्धियाँ स्वयं तुम्हें वरें।
हितंकरा अनंत सिद्धियाँ स्वयं चरण पड़ें॥

शुभंकरा ध्वनी अनंत भव्य को सुखी करें।
प्रियंकरा सभी असंख्य भव्य को सुखी करें॥3॥
गणेश आपको नमें गुणानुवाद गायके।
मुनीश आपको जपें अनूप रूप ध्यायके॥
सुरेश आपको जजें त्रिलोक पूज्य मानके।
नरेश आपको भजें त्रिकालविज्ञ जानके॥4॥
हितोपदेश आपका समूल मोह को हरे।
प्रभो ! विहार आपका समस्त शोक को हरे॥
जिनेन्द्र ! भक्ति आपकी अपूर्वशक्ति को भरे।
जिसेक शक्ति के प्रताप मृत्यु मल्ल भी डरे॥5॥
प्रभो ! अपूर्व शक्ति से करूं त्रिकाल वंदना।
प्रभो ! अपूर्व शक्ति हेतु मैं करूँ उपासना॥
प्रभो ! मुझे स्वभक्त जानके संभाल लीजिये।
प्रभो ! स्वयं के तीन रत्न दे खुशाल कीजिये॥6॥

दोहा– निजानंद पीयूष रस, निर्झरणी निर्मग्न।
'ज्ञानमती' सुख शासता, दे मुझ करो प्रसन्न॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पाप कर्म सहस्र नाशें, सहस्र मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें॥1॥

इत्याशीर्वादः

पूजा नं० 3

अथ स्थापना—गीताछंद

जो पंच कल्याणकपती, शत इन्द्र गण से वंद्य हैं।
जिनदेव जिनेंद्र जिनेश जिनवर, नाम से अभिनंद्य हैं॥
वे दिव्य देशना दे करके सब भाषा के अधिपती बने।
उनका आह्वानन कर पूजें, हम स्वपर ज्ञान के धनी बने॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—अडिल्लछंद

पद्माकर को नीर कमल वासित सुरभि।
जिनपद धारा देय लहूं आतम सुरभि॥
श्रीतीर्थंकर नाम जजूं मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

अष्टगंध ले जिन पद चर्चूं भाव से।
रोग शोक भय ताप हरूँ शुभ भाव से॥श्री०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं.....।

वासमती तंदुल सौगंधित ले लिये।
पुंज धरा तुम आगे नित ध्याऊँ हिये॥श्री०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

सुरतरु के सुरभित सुमनों को लायके।
कामजयी जिनपद को पूजूं आयके॥श्री०4॥॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

पायस फेनी बरफी मोदक ले लिया।
परमामृत से तृप्त जिनेश्वर अर्चिया॥श्री०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

घृतदीपक की ज्योति सर्वदिश तम हरे।
जिनपद पूजत भेदज्ञान ज्योती भरे॥
श्रीतीर्थंकर नाम जजूं मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

कृष्णागरु वरधूप अग्नि में खेवते।
कर्मजलें सब अशुभ नाथपद सेवते॥श्री०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

पिस्ता द्राक्ष बदाम चिरौंजी लायके।
मोक्ष महाफल हेतु जजूं गुण गायके॥श्री०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

नीर गंध आदिक ले अर्घ्य बनायके।
पूजूं भक्ति समेत हर्ष उर लायके॥श्री०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा– जिनवर चरणसरोज को, जल धारा से नित्य।
पूजत ही शांती मिले, चउसंघ में भी इत्य[1]॥10॥

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते मिले सौख्य भंडार॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः

अर्थ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– गुणीजनों में गुण रहें, बिन आश्रय न वसंत।
गुणयुत नामों को यजत, गुणी स्वयं पूजंत॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल–हे दीनबन्धु

हे नाथ 'दिव्यभाषापति' आप कहाये।
अठरा महाभाषा व लघू सात सौ गाये॥
तुम नाम मंत्र पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी॥101॥

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं.....।

1. यहां।

हे नाथ 'दिव्य' तुम हो, अतिशय सुरूप से।
नर सुर से अधिक सुंदर तन आपका दिपे॥तुम०॥102॥

ॐ ह्रीं दिव्याय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'पूतवाक्' आपकी वाणी पवित्र है।
सब दोष से विवर्जित अतिशय विशुद्ध है॥तुम०॥103॥

ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'पूतशासन' तुम मत पवित्र है।
वह पूर्व अपर के विरोध दोष रहित है॥तुम०॥104॥

ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

'पूतात्मा' प्रभु आपकी आत्मा पवित्र है।
अरु आप भव्यजीव को करते पवित्र हैं॥तुम०॥105॥

ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'परमज्योति' आप ज्योतिपुंज हैं।
उत्कृष्ट ज्ञानज्योति रूप तेजपुंज हैं॥तुम०॥106॥

ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'धर्माध्यक्ष' चरित के अधीश हो।
दशधर्म के अध्यक्ष ज्ञान के अधीश हो॥तुम०॥107॥

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

इंद्रियजयी दमी मुनी के ईश आप हैं।
हे नाथ 'दमीश्वर' प्रसिद्ध मुक्तिनाथ हैं॥तुम०॥108॥

ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

संसार मोह संपदा लक्ष्मी के पती हो।
हे नाथ आप श्रीपति मुक्ती के पती हो॥तुम०॥109॥

ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः अर्घ्यं.....।

'भगवान्' आप ज्ञान व ऐश्वर्य पूर्ण हो।
सुरपूज्य आठ प्रातिहार्य विभव पूर्ण हो॥तुम०॥110॥

ॐ ह्रीं भगवते नमः अर्घ्यं.....।

---

1. अरि-मोह कर्म, रज-ज्ञानावरण, दर्शनावरण कर्म, रहस्य-अंतराय कर्म।

'अर्हंत' इन्द्र आदि से पूजा को प्राप्त हो।
अरि रज[1] रहस्य चार कर्म रहित आप हो॥
तुम नाम मंत्र पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी॥111॥

ॐ ह्रीं अर्हते नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'अरज' आप कर्मधूलि हीन हो।
ज्ञानावरण व दर्शनावरण विहीन हो॥तुम०॥112॥

ॐ ह्रीं अरजसे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'विरज' आप कर्मरज विहीन हो।
भव्यों की कर्मधूलि नाश में प्रवीण हो॥तुम०॥113॥

ॐ ह्रीं विरजसे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'शुचि' ब्रह्मचर्य से पवित्र हो।
निज शुद्ध आत्म तीर्थ स्नान से पवित्र हो॥तुम०॥114॥

ॐ ह्रीं शुचये नमः अर्घ्यं.....।

हे 'तीर्थकृत्' भवोदधि से भव्य तारते।
श्रुत द्वादशांग तीर्थ के कर्ता बखानते॥तुम०॥115॥

ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः अर्घ्यं.....।

संपूर्ण मोह आवरण व विघ्न[1] नाशिया।
कैवल्य पाय 'केवली' हो मुनि भाषिया॥तुम०॥116॥

ॐ ह्रीं केवलिने नमः अर्घ्यं.....।

'ईशान' आप अनंत शक्ति से समर्थ हो।
अहमिंद्र आदि के भि ईश जग प्रसिद्ध हो॥तुम०॥117॥

ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घ्यं.....।

'पूजार्ह' पांचविधा अर्चना के योग्य हो।
मह कल्पतरु ऐन्द्रध्वज आदि पूज्य हो॥तुम०॥118॥

ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः अर्घ्यं.....।

सब कर्म मल कलंक धोय शुद्ध आत्मा।
हे नाथ 'स्नातक' सुज्ञान चंद्रपूर्णिमा[2]॥तुम०॥119॥

ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः अर्घ्यं.....।

---

1. अंतराय कर्म। 2. पूर्णज्ञान सहित हैं।

हे नाथ 'अमल' देह मलादि विहीन हो।
नैर्मल्य आप राग आदि दोष क्षीण हो॥तुम०॥120॥
ॐ ह्रीं अमलाय नमः अर्घ्यं.....।

'अनंतदीप्ति' नाथ ज्ञानदीप्ति धारते।
निजदेह दीप्ति से समस्त ध्वांत वारते॥तुम०॥121॥
ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु पांच विधे ज्ञान से 'ज्ञानात्मा' कहे।
कैवल्यज्ञानदेहमयी आत्मा कहे॥तुम०॥122॥
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ! 'स्वयंबुद्ध' स्वयं ही प्रबुद्ध हो।
गुरु की सहाय बिन समस्त ज्ञान युक्त हो॥तुम०॥123॥
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रजापति' त्रिलोक जीव रक्षते पती।
संपूर्ण प्रजा को सदा पालें प्रजापती॥तुम०॥124॥
ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'मुक्त' कर्म बंधनादि मुक्त हो।
संपूर्ण दोष से विमुक्त भ्रमण मुक्त हो॥तुम०॥125॥
ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः अर्घ्यं.....।

चाल—नन्दीश्वर पूजा

प्रभु 'शक्त' नाम है आप, परिषह सहन किया।
तुम भक्ति करे निष्पाप, इससे शरण लिया॥
तुम नाम मंत्र की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे॥126॥
ॐ ह्रीं शक्ताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'निराबाध' उपसर्ग, बाधा विरहित हो।
निज भक्तों को सुख स्वर्ग, देते शिवप्रद हो॥तुम०॥127॥
ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'निष्कल' देह विमुक्त, काल कला हीना।
विज्ञान कलागुण युक्त, कवलाहार बिना॥
तुम नाम मंत्र की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे॥128॥

ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः अर्घ्यं.....।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन ईश, भविजन के त्राता।
मैं जजूं नमाकर शीश, पाऊँ सुख साता॥तुम०॥129॥

ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'निरंजन' आप, कर्मांजन शून्या।
सब द्रव्यभाव नोकर्म, विरहित सुख पूर्णा॥तुम०॥130॥

ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'जगज्ज्योति' जिनराज, केवलज्ञान लहा।
सब लोक अलोक प्रकाश, अनुपम ज्योतिमहा॥तुम०॥131॥

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'निरुक्तोक्ती' य, सार्थक वचन धरो।
सब पूर्वापर अविरोधि, हित उपदेश करो॥तुम०॥132॥

ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'निरामय' आप, व्याधि विवर्जित हो।
पूजत ही स्वास्थ्य सुलाभ, भविजन हर्षित हों॥तुम०॥133॥

ॐ ह्रीं निरामयाय नमः अर्घ्यं.....।

'अचलस्थिति' हे जिननाथ, तुम थल अचल कहा।
हो अचल आत्म थल वास, पूजूं हरस महा॥तुम०॥134॥

ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः अर्घ्यं.....।

'अक्षोभ्य' नाथ नहिं क्षोभ, तुममें कभी हुआ।
सब मिटे चित्त का क्षोभ, ये ही विनय किया॥तुम०॥135॥

ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं.....।

'कूटस्थ' कूट-लोकाग्र, ऊपर तिष्ठे हो।
करिये मुझ मन एकाग्र, ईप्सित देते हो॥तुम०॥136॥

ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ आप 'स्थाणु', गमनागमन नहीं।
हे लोकशिखर विश्राम, काल अनंत सही॥तुम०॥137॥

ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अक्षय' क्षय नहिं होय, काल अनंते भी।
याइंद्रिय सुख नहिं कोय, आप अतीन्द्रिय भी॥तुम०॥138॥
ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! 'अग्रणी' आप , जग में मुख्य सही।
ले जाते तुम लोकाग्र, भवि को सौख्य मही॥तुम०॥139॥
ॐ ह्रीं अग्रण्ये नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ 'ग्रामणी' आप, जग में भव्यों को।
करवाते मुक्ती प्राप्त, निज सुख दो मुझको॥तुम०॥140॥
ॐ ह्रीं ग्रामण्ये नमः अर्घ्यं.....।

भविजन को हितपथ माहिं, ले जाते 'नेता'।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाय, शिवपथ के नेता॥तुम०॥141॥
ॐ ह्रीं नेत्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु द्वादशांगमय शास्त्र रचना करते हो।
इसलिये 'प्रणेता' आप, हित उपदिशते हो॥तुम०॥142॥
ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु न्यायशास्त्र उपदेश, करते आप सदा।
तुम 'न्यायशास्त्रवित्' नाम, कहते इंद्र मुदा॥तुम०॥143॥
ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रविदे नमः अर्घ्यं.....।

नित धर्मामृत उपदेश, देते गुरु 'शास्ता'।
हित अनुशास्ता परमेश, देवो मुझ साता॥तुम०॥144॥
ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'धर्मपती' तुम नाम, धर्माधीश्वर हो।
दश धर्मों के तुम धाम, शिवप्रद ईश्वर हो॥तुम०145॥
ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु चउविध[1] धर्मसमेत, धर्म्य कहाते हो।
रत्नत्रय[2] जीवदयादि,[3] वस्तुस्वभाव[4] कहो॥तुम०॥146॥
ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः अर्घ्यं.....।

---

1. क्षमादि धर्म। 2. रत्नत्रय धर्म। 3. जीवदया धर्म। 4. वस्तु स्वभाव धर्म।

तुम आत्मा धर्मस्वरूप, शिवफल प्राप्त किया।
'धर्मात्मा' नाम अनूप, सुरपति आन दिया॥तुम०॥147॥
ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'धर्मतीर्थकृत' आप, धर्म सुतीर्थ किया।
सम्यक् चारितमय तीर्थ, का उपदेश दिया॥तुम०॥148॥
ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'वृषध्वज' आप प्रसिद्ध, धर्मध्वजा धारो।
तुम वृषभ चिन्ह से सिद्ध, पाप सु परिहारो॥तुम०॥149॥
ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं.....।

वृष-धर्म अहिंसारूप, उसके स्वामी हो।
हो 'वृषाधीश' निज रूप, अंतर्यामी हो॥तुम०॥150॥
ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः अर्घ्यं.....।

चामर छन्द

नाथ 'वृषकेतु' आप धर्म की ध्वजा करो।
जन धर्म की ध्वजा त्रिलोक में भि फरहरो॥
आप नाममंत्र की सदा करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंचना॥151॥
ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः अर्घ्यं.....।

कर्म शत्रु नाश हेतु धर्मशास्त्र धारते।
नाथ ! 'वृषायुध' अनंत जन्म को निवारते॥आप०॥152॥
ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'वृष' नामधारि धर्मरूप विश्व में।
धर्ममय पियूष वृष्टि कारि मेघ भव्य में॥आप०॥153॥
ॐ ह्रीं वृषाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'वृषपती' दयामयी सुधर्म के पती।
आप शर्ण पाय भव्य लेय पंचमी गती॥आप०॥154॥
ॐ ह्रीं वृषपतये नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'भर्तृ' आप भव्य जीव पोषते सदा।
दुख से निकाल श्रेष्ठ सौख्य में धरें सदा॥आप०॥155॥
ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'वृषभांक' बैल चिन्ह आपका कहा।
श्रेष्ठ धर्म चिन्ह से समस्त को सुखी किया॥आप०॥156॥
ॐ ह्रीं वृषभांकाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'वृषोद्भव' सुआप धर्म को जनम दिया।
धर्म से हि तीर्थनाथ होय जन्म धारिया॥आप०॥157॥
ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं.....।

भो 'हिरण्यनाभि' स्वर्ण रूप नाभि धारते।
आप गर्भ पूर्व इन्द्र स्वर्णवृष्टि कारते॥आप०॥158॥
ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं.....।

'भूत आतमा' जिनेश ! सत्यरूप आतमा।
आप पाद शीश नाय होउं अंतरातमा॥आप०॥159॥
ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः अर्घ्यं.....।

'भूभृत्' प्रभो ! समस्त भव्यजीव पोषते।
आप शर्ण आय साधु सर्व कर्म धोवते॥आप०॥160॥
ॐ ह्रीं भूभृते नमः अर्घ्यं.....।

'भूत भावनो' सुआप भावना सुउत्तमा।
हाथ जोड़ शीश नाय भव्य जांय मुक्ति मा॥आप०॥161॥
ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'प्रभव' आप मुक्ति प्राप्ति हेतु भव्य को।
आप जन्म है प्रशंस सौख्य हेतु विश्व को॥आप०॥162॥
ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'विभव' भव विमुक्त भव्य भव विनाशते।
भव विशिष्ट पाय धर्मचक्र को चलावते॥आप०॥163॥
ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'भास्वान्' आप ज्ञानदीप्ति रूप हो।
आत्म को प्रकाश्य भव्य को प्रकाश हेतु हो॥आप०॥164॥
ॐ ह्रीं भास्वते नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'भव' उत्पत्ति व्यय व ध्रौव्य सत् रूप हो।
भव्य चित्त मांहि होय पापपंक धोत हो॥आप०॥165॥

ॐ ह्रीं भवाय नमः अर्घ्यं.....।

'भाव' आप चित्स्वरूप स्वात्म में हि लीन हो।
साधुवृन्द के हृदय निलीन दुःख हीन हो॥आप०॥166॥

ॐ ह्रीं भावाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'भवांतको' चतुर्गती भवों कुनाशिया।
भव्य के अनंतभव क्षणेक में विनाशिया॥आप०॥167॥

ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः अर्घ्यं.....।

भो ! 'हिरण्यगर्भ' गर्भ पूर्व स्वर्ण वर्षते।
आपके पिता कि जीत ना किसी से हो सके॥168॥

ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

'श्रीगरभ' सुआप अन्तरंग नंतसंपदा।
श्री सु आदि देवियों ने मात सेव की मुदा॥आप०॥169॥

ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

भो ! 'प्रभूतविभव' आपका विभव महान है।
तीन लोक साम्राज्य पाय सुख निधान हैं॥आप०॥170॥

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'अभव' आप जन्म ना धरें कभी यहाँ।
आप पाद सेय भव्य जनम नाशते यहाँ॥आप०॥171॥

ॐ ह्रीं अभवाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'स्वयंप्रभु' आप ही स्वयं समर्थ हैं।
सर्व कर्म नाश हेतु आप पूर्ण दक्ष हैं॥आप०॥172॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'प्रभूतात्मा' सुआप आतमा यहाँ।
ज्ञान से समस्त लोक व्यापता सुखावहा[1]॥आप०173॥

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं.....।

---

1. सुख को देने वाला।

'भूतनाथ' सर्वजीव के हि आप नाथ हो।
आप भक्ति से मुनीशवृंद भी सनाथ हों॥आप०॥174॥

ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'जगतत्प्रभु' त्रिलोक स्वामि हो समर्थ हो।
सर्व सौख्यदान हेतु आप पूर्ण दक्ष हो॥आप०॥175॥

ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं.....।

सखी–छन्द

'सर्वादि' सर्व-जग आदी। तुमसे सृष्टी उत्पादी।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ॥तुम०॥176॥

ॐ ह्रीं सर्वादये नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! 'सर्वदृक्' तुम हो। सब वस्तु देखते प्रभु हो॥तुम०॥177॥

ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सार्व' सभी को पालें। सबका हित करने वाले॥तुम०॥178॥

ॐ ह्रीं सार्वाय नमः अर्घ्यं.....।

'सर्वज्ञ' सर्व जग जानो। त्रैलोक्य त्रिकालिक जानो॥तुम०॥179॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम्हीं 'सर्वदर्शन' हो। सब कुमतों के मर्दक हो॥तुम०॥180॥

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं.....।

'सर्वात्मा' तुम अंतर में। सब वस्तु झलकती क्षण में॥तुम०॥181॥

ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सर्वलोकेशा'। तिहुँलोक अलोक अधीशा॥तुम०॥182॥

ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सर्वविद्' मानें। इक क्षण में सबको जानें॥तुम०॥183॥

ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सर्वलोकजित्' तुम हो। पणविध संसार विजित् हो॥तुम०॥184॥

ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सुगति' मोक्षगति सुन्दर। कैवल्यज्ञान उत्तम धर॥तुम०॥185॥

ॐ ह्रीं सुगतये नमः अर्घ्यं.....।

'सुश्रुत' अतिशायि प्रसिद्धा। सब भावश्रुतों के धर्ता॥तुम०॥186॥

ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः अर्घ्यं.....।

'सुश्रुत्' सब अरज सुना है। भव्यों हित मार्ग भणां है।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ॥तुम०॥187॥
ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप वचन उत्तम हैं। अतएव 'सुवाक्' प्रथम हैं॥तुम०॥188॥
ॐ ह्रीं सुवाचे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सूरि' सभी के गुरु हो। सब विद्याओं के धुरि हो॥तुम०॥189॥
ॐ ह्रीं सूरये नमः अर्घ्यं.....।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञानी। तुमसे प्रकटी जिनवाणी॥तुम०॥190॥
ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं.....।

'विश्रुत' त्रिभुवन विख्याता। श्रुत बिना चराचर ज्ञाता॥तुम०॥191॥
ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः अर्घ्यं.....।

'विश्वतःपाद' तम घाती। तुम ज्ञान किरण जग व्यापी॥तुम०॥192॥
ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' सिरताजो तुम लोक शिखर पर राजो॥तुम०॥193॥
ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'शुचिश्रवा' तुम कर्णा। भवि वचन सुनें दें शर्णा॥तुम०॥194॥
ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम 'सहस्रशीर्षा' हो। आनन्त्य सुखी कीर्ता हो॥तुम०॥195॥
ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं.....।

'क्षेत्रज्ञ' क्षेत्र-आत्मा को। जाना सब पर आत्मा को॥तुम०॥196॥
ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सहस्राक्ष' जग मानें। आनन्त्य पदार्थ सुजानें॥तुम०॥197॥
ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सहस्रपात्' जगव्यापा। तुम बल अनंत जगख्याता॥तुम०॥198॥
ॐ ह्रीं सहस्रपदे नमः अर्घ्यं.....।

'भूत भव्यभवद्भर्ता' हो। त्रैकालिक सुख कर्ता हो॥तुम०॥199॥
ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

'विश्वविद्यामहेश्वर' तुम ही। सब विद्या के ईश्वर ही॥तुम०॥200॥
ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य–शंभु छन्द

दिवभाषापति से ले करके, सुविश्वविद्यामाहेश्वर तक।
सौ नाम मंत्र तुम जपने से, शतखंड खंड हो जावें अघ॥
मैं अतिशय भक्ती श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र को नित पूजूँ।
निज आतम अमृतरस पीकर, सब जन्म मरण दुख से छूटूँ॥2॥

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– पूरब भव में आपने, सोलह कारण भाय।
तीर्थंकर पद पायके, तीर्थ चलाया आय॥1॥

रोलाछंद– दर्शविशुद्धि प्रधान, नित्य प्रती प्रभु पाके।
अष्ट अंग से शुद्ध, दोष पचीस हटाके॥
मन वचकाय समेत, विनय भावना भायी।
मुक्ति महल का द्वार, खोल दिया सुखदायी॥2॥
व्रत शीलों में आप, नहिं अतिचार लगाया।
संतत ज्ञानाभ्यास, करके निजसुख पाया॥
भव तन भोग विरक्त, मन संवेग बढ़ाया।
शक्ती के अनुसार, चउविध दान रचाया॥3॥
बारह विध तप धार, आतम शक्ति बढ़ाई।
धर्म शुक्ल से सिद्ध, साधु समाधि कराई॥
दशविध मुनि की नित्य, वैयावृत्य किया था।
सर्व शक्ति से पूर्ण, बहु उपकार किया था॥4॥
श्री अर्हंत जिनेश, भक्ति हृदय में धरके।
सूरि परम परमेश, गुणस्तवन उचरते॥
उपाध्याय गुरुदेव, शिवपथ के उपदेष्टा।
प्रवचन भक्ति समेत, गुणगण भजा हमेशा॥5॥
षट् आवश्यक नित्य, करके दोष नशाया।
हानि रहित परिपूर्ण, निज कर्त्तव्य निभाया।
मार्ग प्रभावन पाय, धर्म महत्व बढ़ाया।

सोलह कारण साध, पंच कल्याणक पाया।
दिव्य ध्वनी से नित्य, धर्म सुतीर्थ चलाया॥
भव्य अनंतानंत, भव से पार किया है।
मुक्तिरमा को पाय, शिवपुर धाम लिया है॥7॥
मैं पूजूँ नित आप, प्रणमूं भक्ति बढ़ाऊँ।
जिस विध हो उस रीति, जिनगुण संपति पाऊँ॥
चिच्चैतन्य स्वरूप, चिन्मय ज्योति जलाऊँ।
पूर्ण 'ज्ञानमति' रूप, परम ज्योति प्रगटाऊँ॥8॥
दोहा- तुम प्रसाद से नाथ ! अब, पूरी हो मम आश।
इसलिये तुम पद कमल, नमूं नमूं धर आश॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद- जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्रनाशें सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमती' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें॥1॥

इत्याशीर्वादः

पूजा नं० 4

स्थापना—नरेन्द्र छंद

एक सौ सत्तर कर्मभूमि में, तीर्थंकर होते हैं।
धर्मचक्र का सफल प्रवर्तन, कर जगमल धोते हैं॥
गणधर मुनिगण सुरपति नरपति, उनकी भक्ति करे हैं।
हम भी उनका आह्वानन कर पूजन भक्ति करे हैं॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्यविष्ठादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्यविष्ठादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्यविष्ठादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—मोतीदाम छंद

लिया है झारी में शुचिनीर, त्रिधारा दे पाऊँ भवतीर।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूं मैं पाऊँ शिव साम्राज॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

लिया है चंदन घिस घनसार।
चढ़ाऊँ चरणों में हिमसार॥जिनेश्वर०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदन.....।

धुले हैं तंदुल शशिसम श्वेत।
मिले आतम निधि पुंज धरेत॥जिनेश्वर०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाम मंत्रेभ्यः अक्षत्.....।

खिले हैं पुष्प संगधित सार,
करूं पुष्पांजलि काम निवार॥जिनेश्वर०॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

सुधारस सम उत्तम पकवान।
चढ़ाकर लूं समतारस पान॥जिनेश्वर०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्य नैवद्यं.....।

शिखा जगमग दीपक की होत।
जजूं दीपक से निज उद्योत॥जिनेश्वर०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

सुगंधी धूप अगनि में ज्वाल।
जलाऊं कर्म अरी तत्काल॥जिनेश्वर०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

मुसम्बी आम सरस फल लाय।
चढ़ाकर लूं समकित सुखदाय॥जिनेश्वर०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

लिया है अर्घ्य चढ़ाकर थाल।
चढ़ाऊं भक्ती से नत भाल॥जिनेश्वर०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा– सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार॥10॥

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य दुख अंत॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा– महापुण्य फल राशि, तीर्थंकर प्रकृति यहां।
मिले सर्वसुख राशि, पुष्पांजलि से पूजते॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र–छंद

समीचीन गुणसहित आप, अतिशय स्थूल कहे हो।
'स्थविष्ठ' नाम के धारी, त्रिभुवन पूज्य भये हो॥
प्रभु तुम नाम मंत्र को पूजत, आतम निधि को पाऊँ।
परमाल्हाद परमसुख अमृत, पीकर शिवपद पाऊँ॥201॥

ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

वृद्ध आप ज्ञानादिगुणों से, अत 'स्थविर' कहाये।
मुक्तीपद में तिष्ठ रहे हो, मुनिगण शीश नमायें॥प्रभु०॥202॥

ॐ ह्रीं स्थविराय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'ज्येष्ठ' तीनों लोकों में, सबसे बड़े तुम्हीं हो।
इन्द्रादिक से प्रशंसनीया, गुणमणि जड़े तुम्हीं हो॥प्रभु०॥203॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

सबके अग्रगामि होने से 'प्रष्ठ' आप कहलाये।
तुम गुणमाला जपते भविजन, दुख दारिद्र नशायें॥प्रभु०॥204॥

ॐ ह्रीं प्रष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

इंद्र फर्णींद्र नरेन्द्र चंद्र रवि, सबको अतिशय प्रिय हो।
सब मुनीन्द्र से वंद्य 'प्रेष्ठ' प्रभु, त्रिभुवन जनमन प्रिय हो॥प्रभु०॥205॥

ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

केवलज्ञान सुविस्तृत धीधर, प्रभु 'वरिष्ठधी' मानें।
स्वपर भेद विज्ञान बुद्धि दो, जिससे भव दुख हानें॥प्रभु०॥206॥

ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नमः अर्घ्यं.....।

अत्यंत स्थिर-नित्य आप हैं, अतएव 'स्थेष्ठ' बखानें।
शत इन्द्रों के मध्य विराजें, कर्म कुलाचल हानें॥प्रभु०॥207॥

ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

सब द्वादशगण में अतिशयगुरु, आप 'गरिष्ठ' कहे हो।
भक्तों को शिवमार्ग दिखाकर, कर्म कलंक दहे हो॥प्रभु०॥208॥

ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

गुण अनंत से प्रभू आप ही, रूप अनेक धरे हो।
अतः नाथ ! 'बंहिष्ठ' नामसे, अतिशय रूप धरे हो॥प्रभु०॥209॥

ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

सबमें अतिशय प्रशस्य हो प्रभु, 'श्रेष्ठ' नाम जग जाने।
सर्व दोष निरवारण करिये गुण से भरूँ खजानें॥प्रभु०॥210॥

ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

अतिशय सूक्ष्म मात्र योगी के, ध्यान गम्य ही तुम हो।
अतः 'अणिष्ठ' नाम से पूजें, सर्व सुखाकर तुम हो॥प्रभु०॥211॥

ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

वाणी आप सर्व जगपूज्या, गौरवमयी बखानी।
प्रभु 'गरिष्ठगी' इसीलिये हो तुम वाणी कल्याणी॥प्रभु०॥212॥

ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नमः अर्घ्यं.....।

चतुर्गती संसार नष्ट कर, आप 'विश्वमुट्' मानें।
सर्वविश्व के पालन कर्ता, सुननर मुनिगण जानें॥प्रभु०॥213॥

ॐ ह्रीं विश्वमुषे[1] नमः अर्घ्यं.....।

सर्वविश्व की करो व्यवस्था, नाथ 'विश्वसृज्' तुम हो।
धर्मसृष्टि के आदि विधाता, मुक्तिप्रदाता तुम हो॥प्रभु०॥214॥

ॐ ह्रीं विश्वसृजे नमः अर्घ्यं.....।

तीनलोक के ईश तुम्हीं, 'विश्वेट्' मुनी कहते हैं।
सुरपति नरपति फणपति तुमको, निजस्वामी गिनते हैं॥प्रभु०॥215॥

ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः अर्घ्यं.....।

---

1. विश्वभृज् भी पाठ हैं।

सब जग की रक्षा करते हो, अतः 'विश्वभुज्' तुमही।
सर्व जीवगण सुतवत् पालन, पोषण करते तुमही॥प्रभु०॥216॥
ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः अर्घ्यं.....।

अखिल लोक के स्वामी तुमही, धर्मनीति सिखलाते।
अतः 'विश्वनायक' बन सबको, मोक्षमार्ग दिखलाते॥प्रभु०॥217॥
ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं.....।

सब जगका विश्वास आप में, अतः आप 'विश्वासी'।
तुम आशिष पा सभी प्राणिगण, बने मुक्ति के वासी॥प्रभु०॥218॥
ॐ ह्रीं विश्वासिने नमः अर्घ्यं.....।

केवलज्ञानरूप तुम आत्मा, अतः 'विश्वरूपात्मा'।
लोकपूर्ण के समय प्रदेशों, से त्रिलोकमय आत्मा॥प्रभु०॥219॥
ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं.....।

विश्व-पांचविध भवको जीता, अतः 'विश्वजित्' तुम हो।
कर्म मल्ल यममल्ल विजेता, विश्वविजेता तुम हो॥प्रभु०॥220॥
ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः अर्घ्यं.....।

'विजितांतक' अंतक-यम जीता, मृत्युंजयी तुम्हीं हो।
निज भक्तों को मृत्युमल्ल से, सदा छुड़ाते तुम हो॥प्रभु०॥221॥
ॐ ह्रीं विजितांतकाय नमः अर्घ्यं.....।

'विभव' आपका भवविशेष है, शतइन्द्रों से पूजित।
भव-संसार नष्टकर्ता तुम, सर्व गुणों से भूषित॥प्रभु०॥222॥
ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं.....।

'विभय' सर्व कांती को जीता, सात भयों से छूटे।
तुम आश्रय लेकर भविप्राणी, सर्व भयों से छूटें॥प्रभु०॥223॥
ॐ ह्रीं विभयाय नमः अर्घ्यं.....।

'वीर' मोक्षलक्ष्मी के दाता, कर्मशत्रु के विजयी।
तुम पदपंकज भक्ति करें जो, बने कर्मरिपु विजयी॥प्रभु०॥224॥
ॐ ह्रीं वीराय नमः अर्घ्यं.....।

विगत शोक प्रभु तुम 'विशोक' हो, भविजन शोक हरंता।
शं-सुख रूप आप की आत्मा, सौख्य अनंत धरंता॥प्रभु०॥225॥
ॐ ह्रीं विशोकाय नमः अर्घ्यं.....।

पद्धड़ी–छंद

प्रभु 'विजर' वृद्ध नहिं कभी आप, तुमही 'पुराणपूरुष' विख्यात।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज॥226॥

ॐ ह्रीं विजराय नमः अर्घ्यं.....।

'अजरन्'[1] नहिं जीरण होंय आप।
परमानंद क्रीड़ा करें आप॥तुम०॥227॥

ॐ ह्रीं अजरते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु रागरहित हो तुम 'विराग।
सब रागद्वेष को दिया त्याग॥तुम०॥228॥

ॐ ह्रीं विरागाय नमः अर्घ्यं.....।

सत पापरहित हैं 'विरत' आप।
भवसुखविरहित हो हरो पाप॥तुम०॥229॥

ॐ ह्रीं विरताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम 'असंग' परिग्रह विहीन।
मेरे दुख संकट करो क्षीण॥तुम०॥230॥

ॐ ह्रीं असंगाय नमः अर्घ्यं.....।

सब विषयों से ही पृथग्भूत।
अतएव 'विविक्त' तुम्हीं अनूप॥तुम०॥231॥

ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु विरहित मत्सर रागद्वेष।
अतएव 'वीत्मत्सर' जिनेश॥तुम०॥232॥

ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'विनेयजनताबंधु' आप।
सब शिष्यों को करते सनाथ॥तुम०॥233॥

ॐ ह्रीं विनेयजनताबंधवे नमः अर्घ्यं.....।

'विलीनाशेषकल्मष' जिनेश।
कुछ पाप पंक नहिं रहे शेष॥तुम०॥234॥

ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं.....।

---

1. टीका की प्रति में अजरन् शब्द है। आदिपु० में जरन् शब्द है।

प्रभु मुक्तिरमा के साथ योग।
अतएव तुम्हें कहते 'वियोग'॥
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज,
मुझको दे दीजे मुक्तिराज॥235॥

ॐ ह्रीं वियोगाय नमः अर्घ्यं.....।

सब योग-ध्यान जानो जिनेश।
अतएव 'योगवित्' हो महेश॥तुम०॥236॥

ॐ ह्रीं योगविदे नमः अर्घ्यं.....।

सब त्रिभुवन को जाना महान्।
'विद्वान्' तुम्हीं हो ज्ञानवान्॥तुम०॥237॥

ॐ ह्रीं विदुषे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु धर्मसृष्टि को करो आप।
अतएव 'विधाता' हरो पाप॥तुम०॥238॥

ॐ ह्रीं विधात्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम उत्तम चारित्रवान्।
अतएव 'सुविधि' विज्ञानवान्॥तुम०॥239॥

ॐ ह्रीं सुविधये नमः अर्घ्यं.....।

तुम बुद्धी केवलज्ञान रूप।
अतएव 'सुधी' तुम हो अनूप॥तुम०॥240॥

ॐ ह्रीं सुधिये नमः अर्घ्यं.....।

तुम पूर्ण क्षमानिधि के निधान।
हो 'क्षान्तिभाक्' जग में महान॥तुम०॥241॥

ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'पृथिवीमूर्ति' तुम्हीं जिनेश।
सर्वंसह मेरे हरो क्लेश॥तुम०॥242॥

ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'शांतिभाक्' तुम शांतरूप।
मुझको भी शांती दो अनूप॥तुम०॥243॥

ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः अर्घ्यं.....।

'सलिलात्मक' प्रभु जल के समान।
शीतलता करते हो महान॥तुम०॥244॥

ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'वायुमूर्ति' जगप्राणरूप।
त्रिभुवन में व्यापी ज्ञानरूप॥तुम०॥245॥

ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'असंगात्मा' महान।
परिग्रहविहीन भविसुख निधान॥246॥

ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'वह्निमूर्ति' अग्नी समान।
कर्मेधन भस्म किया महान॥तुम०॥247॥

ॐ ह्रीं वन्हिमूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम 'अधर्मधक्' पाप क्षीण।
सब भस्म अधर्म किया प्रवीण॥तुम०॥248॥

ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः अर्घ्यं.....।

सब कर्मों का कर दिया होम।
अतएव 'सुयज्वा'[1] शांत सौम्य॥तुम०॥249॥

ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः अर्घ्यं.....।

'यजमानात्मा' निज का स्वभाव।
आराधन करते तज विभाव॥तुम०॥250॥

ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सुत्वा' निजानंद भरके।
निजात्मोदधी में सदा स्नान करते॥
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ।
जगत के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ॥251॥

ॐ ह्रीं सुत्वने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप 'सुत्रामपूजित' कहाये।
सभी इन्द्र पूजें तुम्हें शीश नायें॥प्रभु०॥252॥

ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो! आप 'ऋत्विक्' किया यज्ञ भारी।
जला ज्ञान अग्नी करम सर्व जारी॥प्रभु०॥253॥

ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः अर्घ्यं.....।

---

1. टीका में 'यज्य' शब्द है।

प्रभो ! 'यज्ञपति' यज्ञ के ईश माने।
करम का किया होम जग सर्व जाने॥
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ।
जगत के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ॥254॥

ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'याज्य' हो सर्व पूजा करे हैं।
सभी इंद्र मिल आप अर्चा करें हैं॥प्रभु०॥255॥

ॐ ह्रीं याज्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो! आप 'यज्ञांग' माने जगत् में।
नहीं आप बिन पूज्य हो कोइ जग में॥प्रभु०॥256॥

ॐ ह्रीं यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो मृत्युजित् आप 'अमृत' कहाये।
तृषा रोगहर सौख्य अमृत पिलायें॥प्रभु०257॥

ॐ ह्रीं अमृताय नमः अर्घ्यं.....।

अगनिज्ञान में होम दीया अशुभ को।
'हवी' आप को सौख्य दीया सभी को॥प्रभु०॥258॥

ॐ ह्रीं हविषे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो 'व्योममूर्ती' करमलेप हीना।
सभी लोक को ज्ञान से व्याप्त कीना॥प्रभु०॥259॥

ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

'अमूर्तातमा' वर्ण रस गंध हीना।
सदा भक्त को सौख्य देते प्रवीणा॥प्रभु०॥260॥

ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो! आप 'निर्लेप' सब लेप हीना।
करम लेप नाश निजानंद लीना॥प्रभु०॥261॥

ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः अर्घ्यं.....।

सदा आप निर्मल सभी मल विहीना।
करम पंक धोकर महासौख्य लीना॥प्रभु०॥262॥

ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं.....।

सदा एकसे आप रहते 'अचल' हो।
अचलथान निर्वाण पाया अचल हो॥प्रभु०॥263॥

ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो! 'सोममूर्ती' शशीवत् धवल हो।
सदा शांत सुन्दर प्रकाशी अमल हो॥प्रभु०॥264॥

ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

'सुसौम्यातमा' सौम्य छवि आपकी है।
सभी के नयन चित्त को मोहती है॥प्रभु०॥265॥

ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'सूर्यमूर्ती' महाध्वांत नाशा।
महातेज से सर्व जगको प्रकाशा॥प्रभु०॥266॥

ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

'महाप्रभ' तुम्हीं केवलज्ञान धारी।
महातेज से भव्य अंधेर टारी॥प्रभु०॥267॥

ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

सभी मंत्र को जानते 'मंत्रविद्' हो।
महामोक्ष का मंत्र भी दे रहे हो॥प्रभु०॥268॥

ॐ ह्रीं मंत्रविदे नमः अर्घ्यं.....।

महामंत्र करते प्रभो! 'मंत्रकृत' हो।
तथा चार अनुयोग शास्त्रादि कृत हो॥प्रभु०॥269॥

ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः अर्घ्यं.....।

सभी मंत्र से युक्त 'मंत्री' तुम्हीं हो।
महाध्यान मंत्रादि देते तुम्हीं हो॥प्रभु०॥270॥

ॐ ह्रीं मंत्रिणे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! मंत्र सप्ताक्षरी मूर्तिमय हो।
अतः 'मंत्रमूर्ति' मुनी के विषय हो॥प्रभु०॥271॥

ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

अनंते पदारथ सभी जानते हो।
महामोक्षगत हो 'अनंतग' तुम्हीं हो॥प्रभु०॥272॥

ॐ ह्रीं अनंतगाय नमः अर्घ्यं.....।

'स्वतंत्रः' स्व-आत्मा वही तंत्र-तनु है।
सभी कर्म बंधनरहित स्वात्मवश हो॥प्रभु०॥273॥

ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं.....।

महाद्वादशांगीमयी शास्त्रकृत् हो।
अतः 'तंत्रकृत' जैनसिद्धांतकृत् हो॥
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ।
जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ॥274॥

ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो! 'स्वन्त' अन्तःकरण शोभना है।
तुम्हारा हि सामीप्य सुखप्रद घना है॥प्रभु०॥275॥

ॐ ह्रीं स्वन्ताय नमः अर्घ्यं.....।

अडिल्ल–छंद

'कृतान्तान्त' प्रभु मृत्युराज को नाशिया।
अष्टकर्म को चूर मोक्षपद पा लिया॥
नाम मंत्र मैं जपूं सर्व दुख दूर हों।
निज में परमानंदामृत सुख पूर हो॥276॥

ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'कृतान्तकृत्' आगम कर्ता आप हो।
दिव्यध्वनि से भावग्रन्थकृत् आप हो॥नाम०॥277॥

ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः अर्घ्यं.....।

'कृती' पुण्यफलरूप कुशल विख्यात हो।
केवलज्ञान सौख्यमय हो विद्वान हो॥नाम०॥278॥

ॐ ह्रीं कृतिने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'कृतार्थ' निजके पुरुषार्थ सफल किये।
भक्ती से भविजन कृतार्थ भी हो गये॥नाम०॥279॥

ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सत्कृत्य' इन्द्र संत्कार किया करें।
आप भली विध सर्वप्रजा पोषण करें॥नाम०॥280॥

ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'कृतकृत्य' आत्मकार्य सब कर चुके।
तुम पदभक्त स्वयं कृतकृत्य बनें सबे॥नाम०॥281॥

ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं.... ।

प्रभु 'कृतक्रतू' इन्द्रशत मिल पूजा करें।
तुम पूजा नहिं निष्फल निश्चित ही फले॥282॥

ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः अर्घ्यं.....।

आप 'नित्य' हैं काल अनंतों भी रहें।
आपभक्त भी नित्य मोक्षपदवी लहें॥नाम०॥283॥

ॐ ह्रीं नित्याय नमः अर्घ्यं.....।

मृत्यु जीत 'मृत्युंजय' प्रभु तुम हो गये।
तुमपद भक्त स्वयं मृत्युंजय पद लहें॥नाम०॥284॥

ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'अमृत्यु' मरण रहित हैं लोक में।
तुम पद आश्रय पाय भव्य मृत्यू हने॥नाम०॥285॥

ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः अर्घ्यं.....।

'अमृतात्मा' अमृतवत् सुखदायि हो।
भव्य भजें निज आतम अमृतपायि हों॥नाम०॥286॥

ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'अमृतोद्भव' कहलाते आप हैं।
अमृत-शिवपद में उत्पन्न सनाथ हैं॥नाम०॥287॥

ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं.....।

'ब्रह्मनिष्ठ' प्रभु शुद्ध आत्म में लीन हैं।
केवलज्ञान व मोक्ष निष्ठ भवहीन हैं॥नाम०॥288॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

'परंब्रह्म' उत्कृष्ट ब्रह्ममय आप हैं।
पंचम ज्ञानस्वरूप विश्व के तात' हैं॥नाम०॥289॥

ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे नमः अर्घ्यं.....।

'ब्रह्मात्मा' तुम ज्ञानस्वरूपी आतमा।
केवलज्ञानगुणादि वृद्धिमय आतमा॥नाम०॥290॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं.....।

आप 'ब्रह्मसंभव' आत्मा से उद्भवे।
भक्त आपसे ज्ञानरूप हों उद्भवें॥नाम०॥291॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं.....।

'महाब्रह्मपति' पंचमज्ञानपती तुम्हीं।
गणधर इंद्रादिक के स्वामी हो तुम्हीं॥नाम०॥292॥

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं.....।

आप प्रभो ! 'ब्रह्मेट्' ब्रह्म के ईश हो।
ज्ञान चरित अरु मुक्ती के परमेश हो॥नाम०॥293॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः अर्घ्यं.....।

'महाब्रह्मपदेश्वर' मुक्ती ईश्वरा।
गणधर मुनिगण सुरगण तुम वंदनपरा॥नाम०॥294॥

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

'सुप्रसन्न' प्रभु प्रहसितमुख शान्तीछवी।
भविजन स्वर्ग मोक्ष, सुखदायक हो तुम्हीं॥नाम०॥295॥

ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'प्रसन्नात्मा' अति निर्मल आतमा।
भवि कषाय मल धोय बने शुद्धातमा॥नाम०॥296॥

ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं.....।

'ज्ञानधर्मदमप्रभू' आप विख्यात हैं।
केवलज्ञान क्षमादिधर्म तप नाथ हैं॥नाम०॥297॥

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं.....।

'प्रशमात्मा' क्रोधादि कषाय न आप में।
परम शांतप्रभु भक्त शांतिमय परिणमें॥नाम०॥298॥

ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं.....।

आप 'प्रशान्तात्मा' प्रभु अतिशय शांत हो।
आप भक्त परिपूर्ण शांति को प्राप्त हों॥नाम०॥299॥

ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'पुराणपुरुषोत्तम' सबमें श्रेष्ठ हो।
सर्व शलाका पुरुषों में भी ज्येष्ठ हो॥नाम०॥300॥

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य–शंभु छन्द

प्रभु स्थविष्ठ से पुराण पुरुषोत्तम तक नाम जपें जो भी।
वे शतक नाम धारें जग में फिर जीवनमुक्त बनें वे भी॥
मैं नामगोत्र विघ्नादि रहित निज शुद्ध आत्मपद पा जाऊँ।
इसलिये आप पदपद्म शक्ति करता हूँ फिर फिर शिर नाऊँ॥3॥

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

---

1. पिता।

जाप्य–

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

लोकोत्तर फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
नमूं नमूं तुमको सदा, करूं भक्तिभर सेव ॥1॥

गीताछंद

जय जय जिनेश्वर धर्म तीर्थेश्वर जगत् विख्यात हो।
जय जय अखिल संपत्ति के भर्ता भविकजन नाथ हो ॥
लोकांत में जा राजते त्रैलोक्य के चूड़ामणि।
जय जय सकल जग में तुम्हीं हो ख्यात प्रभु चिंतामणी ॥2॥
एकेन्द्रियादिक योनियों में नाथ ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी से प्रभो ! भ्रमता रहा ॥
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव अरु भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये ॥3॥
बहुजन्म संचित पुण्य से दुर्लभ मनुष योनी मिली।
हा ! बालपन में जड़ सदृश सज्ज्ञान कलिका ना खिली ॥
बहुपुण्य के संयोग से प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरात्मा औ अंतरात्मा का स्वयं ही परिचय मिला ॥4॥
तुम सकल परमात्मा बने जब घातिया आहत हुये।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुये ॥
फिर शेष कर्म विनाश करके निकल परमात्मा बने।
कल-देह वर्जित निकल अकल स्वरूप शुद्धात्मा बने ॥5॥
हे नाथ ! बहिरात्मा दशा को छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें हो जाऊँ मैं परमातमा ॥

संसार का संसरण तज त्रिभुवन शिखर पे आ बसूँ।
निज के अनंतानंत गुणमणि पाय निज में ही बसूँ ॥6॥

दोहा

तुम प्रसाद से भक्तगण, हो जाते भगवान ।
'ज्ञानमती' निज संपदा, पाकर के धनवान ॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां स्थविष्ठिादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम, विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें सहस्र मंगल विस्तरे ॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें ॥1॥

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं० 5

स्थापना-नरेन्द्र छंद

मोक्षमार्ग के नेता त्रिभुवन वेत्ता वर तीर्थंकर।
चिच्चैतन्य सुधारस प्यासे, भविजन को क्षेमंकर ॥
उनको इत आह्वानन करके, पूजूं मन वच तन से।
आतम अनुभव अमृत हेतू वंदूं अंजलि करके ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादि शतनाममंत्रसमूह !

अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादि शतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ

ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव

वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—गीताछंद

अगणित कुओं का नीर पीया, प्यास फिर भी ना बुझी।
इस हेतु जल से पूजहूं, अब मेट दो बाधा सभी ॥
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

भवसिंधु में भी चाह दावानल हमें झुलसा रहा।
इस हेतु चंदन से जजूं, अब दुःख नहिं जाता सहा ॥ती०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं....।

निज आत्मसुख जो सहज मेरा, खंड खंड हुआ सभी।
उसके अखंडित हेतु अक्षत, पुंज से पूजूं अभी ॥ती०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं....।

इस मदन ने बस जगत में जन, सर्व को वश में किया।
इसके निमूलन हेतु सुरभित, सुमन तुम अर्पण किया ॥ती०॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं....।

तन में क्षुधा व्याधी सदा, औषधि न कुछ उसके लिये।
इस हेतु से उत्तम सरस व्यंजन, आप ढिग अर्पण किये ॥ती०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं।

अज्ञान तम अति घोर छाया, आप पर दीखे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूं, निजज्ञान रवि प्रगटे सही॥ती०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनामंत्रेभ्यः दीपं।

इस कर्म ने मुझ संपदा को, लूट ली मुझ पास से।
इस हेतु इनको नाश करने, धूप खेऊं चाव से ॥ती०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं।

वांछित मिले इस हेतु जग में, देव सब पूजे सदा।
पर सफल अब तक ना हुआ, इस हेतु फल तुम अर्पिता ॥ती०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं....।

नीरादि में वर रत्न धरके, अर्घ्य सुंदर ले लिया।
अनमोल निज संपत्ति हेतू अर्घ्य तुम अर्पण किया ॥ती०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशत नाम मंत्रेभ्यः अर्घ्यं।

दोहा

गंगा नदि को नीर ले, श्री जिनवर पद कंज।
त्रयधारा देते मिले, मुझे शांति सुखकंद ॥10॥
शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार ॥11॥
दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

तीर्थंकर की अर्चना, भरे स्वात्म विज्ञान ।
रोक शोक दुख वंचना, करके करे महान ॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

चौपाई (15 मात्रा)

'महाशोकध्वज' आप जिनेश।
वृक्ष अशोक चिह्न परमेश।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान॥301॥

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः अर्घ्यं......।

नाथ ! 'अशोक' शोक से हीन ।
आप भक्त हों शोक विहीन ॥आप०॥302॥

ॐ ह्रीं अशोकाय नमः अर्घ्यं.........।

आप 'क' नाम आत्म आधार ।
सब भक्तों को सुखदातार ॥आप०॥303॥

ॐ ह्रीं काय नमः अर्घ्यं.......।

स्वर्ग मोक्ष की सृष्टि करंत ।
'स्रष्टा' नाम सुरेन्द्र यजंत ॥आप०॥304॥

ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'पद्मविष्टर' तुम नाम ।
आसन स्वर्णकमल तुम स्वामि ॥आप०॥305॥

ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'पद्मेश' आप विख्यात ।
लक्ष्मी के स्वामी हो नाथ ॥आप०॥306॥

ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'पद्मसंभूति' जिनेश ।
चरण कमल तल कमल हमेश ॥आप०॥307॥

ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये नमः अर्घ्यं.....।

'पद्मनाभि' पंकजसम नाभि।
वंदत मिटती सर्व उपाधि ॥आप०॥308॥

ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'अनुत्तर' तुम सम अन्य ।
श्रेष्ठ नहीं प्रभु तुम ही धन्य ॥आप०॥309॥

ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः अर्घ्यं.....।

'पद्मयोनि' माता का गर्भ ।
पद्माकृति से तुम उत्पत्ति ॥आप०॥310॥

ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः अर्घ्यं.....।

'जगद्योनि' धर्ममय जगत् ।
उसकी उत्पति कारण जिनप ॥आप०॥311॥

ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः अर्घ्यं....।

'इत्य' आप की प्राप्ती हेतु।
भविजन तप तपते बहुभेद ॥आप०॥312॥

ॐ ह्रीं इत्याय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'स्तुत्य' इन्द्र मुनि आदि।
सबकी स्तुति योग्य अबाधि॥
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान॥313॥

ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'स्तुतीश्वर' कहे ।
स्तुति के ईश्वर ही रहें ॥आप०॥314॥

ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

'स्तवनार्ह' स्तुति के योग्य ।
आप समान न अन्य मनोज्ञ ॥आप०॥315॥

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः अर्घ्यं.....।

'हृषीकेश' इंद्रिय के ईश ।
विजितेंद्रिय हो सर्व अधीश ॥आप०॥316॥

ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः अर्घ्यं....।

प्रभो ! आप 'जितजेय' अनूप ।
जीता मोह आदि अरि भूप ॥आप०॥317॥

ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः अर्घ्यं....।

करने योग्य क्रियायें सर्व ।
पूर्ण किया 'कृतक्रिय' नामार्ह ॥आप०॥318॥

ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

बारह गण के स्वामी आप।
अतः 'गणाधिप' हो निष्पाप ॥आप०॥319॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः अर्घ्यं.....।

सर्वजनों में तुम ही श्रेष्ठ ।
अतः जगत में हो 'गणज्येष्ठ' ॥आप०॥320॥

ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

गणना योग्य आप ही 'गण्य'।
चौरासी लख गुण युत धन्य ॥आप०॥321॥

ॐ ह्रीं गण्याय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्ण पवित्र आप ही 'पुण्य'।
सबको पावन करें सुपुण्य ॥आप०॥322॥

ॐ ह्रीं पुण्याय नमः अर्घ्यं.....।

सब गण शिवपथ में ले जाव।
'गणाग्रणी' प्रभु आप कहाव ॥आप०॥323॥

ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये नमः अर्घ्यं.....।

ज्ञानाद्यनंत गुण की खान।
नाथ 'गुणाकर' आप महान ॥आप०॥324॥

ॐ ह्री गुणाकराय नमः अर्घ्यं .....।

लाख चुरासी गुण की वार्धि।
'गुणाम्भोधि' हरते भव व्याधि ॥आप०॥325॥

ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये नमः अर्घ्यं.....।

राग—भरतरी

नाथ ! 'गुणज्ञ' कहावते, गुणमणि ज्ञाता आप।
सर्वदोष मुझ हान के, करो शीघ्र निष्पाप॥
नाम मंत्र मैं नित जपूं, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि॥326॥

ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

'गुणनायक' चौरासी लख, गुणमणि के हो नाथ।
रोग शोक दुखनाश कर, गुण से करो सनाथ ॥नाम०॥327॥

ॐ ह्रीं गुणनायकाय नमः अर्घ्यं.....।

सत्त्व आदि गुण आदरा, 'गुणादरी' तुम नाम।
क्रोध मोह सब नाशिये, झुक झुक करूं प्रणाम ॥नाम०॥328॥

ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः अर्घ्यं.....।

रजतम आदि विभावगुण, नाश किया प्रभु आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' भये, करो मुझे निष्पाप ॥नाम०॥329॥

ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः अर्घ्यं.....।

वैभाविक गुण हीन हो, 'निर्गुण' कहें मुनीश।
या निश्चित ज्ञानादि गुण, धरते निर्गुण ईश॥
नाम मंत्र मैं नित जपूं, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि॥330॥

ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः अर्घ्यं....।

नाथ ! 'पुण्यगी' पुण्यमय, पावनवाणी आप।
मुझ वाणी पावन करो हरो सकल भव ताप ॥नाम०॥331॥

ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं.....।

गुणयुत और प्रधान हो, अतः नाम 'गुण' आप।
भव्य आपको ही गुने, हरो सकल यम ताप ॥नाम०॥332॥

ॐ ह्रीं गुणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'शरण्य' हो जगत में, शरणागत प्रतिपाल।
सब दुख मथन करो सदा, नमूँ नमूँ नत भाल ॥नाम०॥333॥

ॐ ह्रीं शरण्याय नमः अर्घ्यं.....।

'पुण्यवाक्' प्रभु तुम वचन, भरें पुण्य भण्डार।
आतम निधि को देय के, करें मृत्यु संहार ॥नाम०॥334॥

ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं.....।

'पूत' आप पावन परम, भक्तन करो पवित्र।
अंतर आत्म उपाय से, लहूँ परमपद शीघ्र ॥नाम०॥335॥

ॐ ह्रीं पूताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'वरेण्य' मुक्तीरमा, वरण किया स्वयमेव।
सबमें श्रेष्ठ तुम्हीं कहे, करो सकल दुख छेव ॥नाम०॥336॥

ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
पुण्यसंपदा देउ मुझ, नमूँ नमूँ नत शीश ॥नाम०॥337॥

ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अगण्य' गणना नहीं, माप रहित गुण आप।
मेरे अनवधि गुण मुझे, देय हरो संताप ॥नाम०॥338॥

ॐ ह्रीं अगण्याय नमः अर्घ्यं....।

नाथ ! 'पुण्यधी' पावना, बुद्धि आपकी शुद्ध।
मुझ मन पावन कीजिये, होय आतमा शुद्ध ॥नाम०॥339॥

ॐ ह्रीं पुण्यधिये नमः अर्घ्यं.....।

'गुण्य' सर्वगण हित किया, गुण अनंत युत आप।
सर्वगुणों से पूर्ण कर, हरो दोष दुख पाप ॥नाम०॥340॥

ॐ ह्रीं गुण्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'पुण्यकृत्' आपही, किया पुण्य हरपाप।
सब जन मन पावन किया, हो पवित्र निष्पाप ॥नाम०॥341॥

ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः अर्घ्यं....।

नाथ ! 'पुण्यशासन' वहां, तुम शासन-मत शुद्ध।
आतम अनुशासन करूं, देवो ऐसी बुद्धि ॥नाम०॥342॥

ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

'धर्माराम' तुम्हीं प्रभो ! धर्मोद्यान विशाल।
छाया फल दे स्वर्ग शिव, हरिये ताप दयालु ॥नाम०॥343॥

ॐ ह्रीं धर्मारामाय नमः अर्घ्यं.....।

आप प्रभो ! 'गुणग्राम' हैं, मूलोत्तर गुण युक्त।
इंद्रियगांव उजाड़के, आप हुये जग मुक्त ॥नाम०॥344॥

ॐ ह्रीं गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं.....।

'पुण्यापुण्यनिरोधका', शुद्ध आत्म में लीन।
पुण्य पाप को रोक के, भये मुक्ति आधीन ॥नाम०॥345॥

ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधाय नमः अर्घ्यं....।

'पापापेत' तुम्हीं प्रभो ! पाप रहित निष्पाप।
मेरे सब संकट हरो, पुण्य भरो हत पाप ॥नाम०॥346॥

ॐ ह्रीं पापापेताय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'विपापात्मा' कहे, पाप हीन अतिशुद्ध।
मेरे सब अघ क्षय करो, होऊं सिद्ध विशुद्ध ॥नाम०॥347॥

ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'विपाप्मा' कर्म अघ, चूर किया भगवान्।
तुम भक्ती से भव्यजन, बने सकल धनवान ॥
नाम मंत्र मैं नित जपूं, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि॥348॥

ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः अर्घ्यं.....।

द्रव्य भाव नोकर्ममल कल्मष धोकर शुद्ध।
प्रभो ! 'वीतकल्मष' तुम्हीं मुझे करो झट शुद्ध ॥नाम०॥349॥

ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः अर्घ्यं....।

प्रभो ! आप 'निर्द्वंद्व' हैं, द्वंद्व-कलह से मुक्त।
सर्व परिग्रह हीन हैं, करो हमें भव मुक्त ॥नाम०॥350॥

ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय नमः अर्घ्यं...।

राग–वंदों दिगंबर गुरु....

प्रभु आप 'निर्मद' आठ विध मद रहित पूज्य महान।
तुम भक्त अतिशय स्वाभिमानी आत्म गौरववान ॥
तुम नाम की अर्चा करूं मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु ॥351॥

ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'शांत' क्रोधादी कषायें नष्ट कर दी आप।
तुम पद कमल की भक्ति भी करती भविक मन शांत ॥तुम०॥352॥

ॐ ह्रीं शांताय नमः अर्घ्यं.....।

'निर्मोह' प्रभु सब मोह अरु अज्ञान से भी दूर।
तुम भक्त का चारित्र दर्शन मोह करते दूर॥तुम०॥353॥

ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः अर्घ्यं....।

प्रभु आप 'निरुपद्रव' उपद्रव, उपसरग से हीन।
तुम भक्त भी जड़मूल से करते उपद्रव क्षीण ॥तुम०॥354॥

ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं....।

प्रभु दिव्यचक्षु नेत्रस्पंदन रहित विख्यात।
इससे कहें मुनि 'निर्निमेष' सुपाय ज्ञानविकास ॥तुम०॥355॥

ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'निराहार' न आपको है कभी कवलाहार।
तुम भक्त भी आहार विरहित होंय निर्नीहार ॥तुम०॥356॥

ॐ ह्रीं निराहाराय नमः अर्घ्यं.....।

'निष्क्रिय' प्रभो ! सामायिकादि क्रियाओं से शून्य।
संसार की सबही क्रियाओं से रहित सुखपूर्ण ॥तुम०॥357॥

ॐ ह्रीं निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'निरुपप्लव' विघन बाधारहित भगवान।
तुम पाद अर्चन से सभी निर्विघ्न होते काम ॥तुम०॥358॥

ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः अर्घ्यं....।

प्रभु 'निष्कलंक' कलंक-अपवादादि अघ से हीन।
संपूर्ण कर्मकलंक नाशा विश्वज्ञान प्रवीण ॥तुम०॥359॥

ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'निरस्तैना' सर्व एनस-पाप से हो दूर।
तुम भक्त भी मोहारि अघ नाशन करें बन शूर ॥तुम०॥360॥

ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं.....।

'निर्धूतआगस्' आप हैं अपराध अघ से हीन।
हे नाथ मुझ अपराध नाशो करो ज्ञान अधीन ॥तुम०॥361॥

ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'निरास्रव' संपूर्ण आस्रव रोक संवररूप।
मुझ पाप आस्रव नाशिये हो शुद्ध आतमरूप ॥तुम०॥362॥

ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! आप 'विशाल' अनुपम शांति देते नित्य।
सबसे महान- विशाल मानें नमूं मैं धर प्रीत्य ॥तुम०॥363॥

ॐ ह्रीं विशालाय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'विपुलज्योति' समस्त लोकालोकव्यापक ज्ञान।
तुमज्ञानज्योति से हनें भवि मोह ध्वांत महान् ॥तुम०॥364॥

ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अतुल' तुलनारहित जग में मुक्तिलक्षमीनाथ।
नहिं तोल सकते गुण तुम्हारे सर्व गण के नाथ॥
तुम नाम की अर्चा करूं मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु ॥365॥

ॐ ह्रीं अतुलाय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! आप 'अचिन्त्यवैभव' विभव त्रिभुवन मान्य।
मन से न सुरपति योगिगण भी सोच सकते साम्य ॥तुम०॥366॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय नमः अर्घ्यं.....।

भगवन् ! 'सुसंवृत' आप सम्यक पूर्ण संवर युक्त।
तुम पदकमल की भक्ति से हों भव्य आस्रव मुक्त ॥तुम०॥367॥

ॐ ह्रीं सुसंवृत्ताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सुगुप्तात्मा' आप आत्मा कर्मअरि से गुप्त।
तुम भक्त भी मन वचन कायिक गुप्ति से हों युक्त ॥तुम०॥368॥

ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सुबुध'' अच्छी तरह त्रिभुवन जानते हैं आप।
मुझको निजातम तत्त्व का सुखबोध देवो आज ॥तुम०॥369॥

ॐ ह्रीं सुबुधे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! 'सुनयतत्त्ववित्' सापेक्ष नय का मर्म।
जानों तुम्हीं बतला दिया जिन अनेकांत सुधर्म ॥तुम०॥370॥

ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'एकविद्य' सुएक केवलज्ञान विद्या युक्त।
मतिश्रुत अवधि मनपर्ययी चउज्ञान विद्या मुक्त ॥तुम०॥371॥

ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः अर्घ्यं....।

प्रभु 'महाविद्य' महान् केवलज्ञान विद्याधार।
अठरा महाभाषा लघु तुम सात सौ ध्वनि कार ॥तुम०॥372॥

ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः अर्घ्यं.....।

'मुनि' आप त्रिभुवन चराचर को जानते प्रत्यक्ष।
मैं आपका वंदन करूं हो स्वात्मज्ञान प्रत्यक्ष ॥तुम०॥373॥

ॐ ह्रीं मुनये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'परिवृढ' सब गुणों का वर्धन किया जिनराज।
तुम वन्दना से सर्व मेरे गुण प्रगट हो आज ॥तुम०॥374॥

ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'पती' प्राणीवर्ग को संसार दुख से काढ़।
रक्षा करो त्रिभुवनपती सुर नमें रुचिधर गाढ़ ॥तुम०॥375॥

ॐ ह्रीं पत्ये नमः अर्घ्यं.....।

वसंततिलका—छंद

कैवल्यज्ञानमय बुद्धि धरंत 'धीश'।
मेरे सुज्ञानमय ज्योति करो मुनीश॥
हे नाथ ! नाममय मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं॥376॥

ॐ ह्रीं धीशाय नमः अर्घ्यं.....।

'विद्यानिधी' स्वपर शास्त्र सुज्ञानरूपा।
भंडार आप उसके निधि है अनूपा ॥हे नाथ०॥377॥

ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः अर्घ्यं.....।

त्रैलोक्य की सकल वस्तु प्रतक्ष जानो।
'साक्षी' कहें सुरपती प्रभु ज्ञान भानू ॥हे नाथ०॥378॥

ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः अर्घ्यं.....।

मोक्षैक मार्ग प्रकटी करते 'विनेता'।
पादाब्ज में नित नमूं मुझ विघ्न नाशो ॥हे नाथ०॥369॥

ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः अर्घ्यं.....।

मृत्यु विनाश 'विहितांतक' नाम धारा।
मेरे समस्त दुख रोष मिटाय दीजे ॥हे नाथ०॥380॥

ॐ ह्रीं विहितान्तकाय नमः अर्घ्यं.....।

रक्षा करो दुर्गती दुख से बचाते।
साधू 'पिता' कह रहे सुख के जनक हो ॥हे नाथ०॥381॥

ॐ ह्रीं पित्रे नमः अर्घ्यं.....।

त्रैलोक्य के गुरु कहें सबके सुत्राता।
इससे 'पितामह' तुम्हें कहते गणीशा ॥
हे नाथ ! नाममय मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं॥382॥

ॐ ह्रीं पितामहाय नमः अर्घ्यं.....।

रक्षा करो नित भवोदधि दुःख से ही।
'पाता' कहें सुरपती मुझको उबारो ॥हे नाथ०॥383॥

ॐ ह्रीं पात्रे नमः अर्घ्यं.....।

आत्मा पवित्र कर ली निज की तुम्हीं ने।
इससे 'पवित्र' मुझको भि पवित्र कर दो ॥हे नाथ०॥384॥

ॐ ह्रीं पवित्राय नमः अर्घ्यं.....।

संपूर्ण भव्य जन को सुपवित्र करते।
'पावन' कहें मुनि तुम्हें मुझ पाप नाशो ॥हे नाथ० ॥385॥

ॐ ह्रीं पावनाय नमः अर्घ्यं.....।

संपूर्ण भव्य तप कर प्रभु आप जैसा।
होना चहें 'गति' अतः सबको शरण भी ॥हे नाथ० ॥386॥

ॐ ह्रीं गतये नमः अर्घ्यं.....।

'त्राता' समस्त जन रक्षक भी तुम्हीं हो।
पादाब्ज आश्रय लिया अतएव मैंने ॥हे नाथ०॥387॥

ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः अर्घ्यं.....।

हो वैद्य आप भव रोग विनाश कर्ता।
इससे 'भिषग्वर' तुम्हीं मुझ व्याधि नाशो ॥हे नाथ० ॥388॥

ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'वर्य' आप जग में अतिश्रेष्ठ माने।
मुक्तीरमा तुम वरण अभिलाष धारे ॥हे नाथ०॥389॥

ॐ ह्रीं वर्याय नमः अर्घ्यं.....।

इच्छानुकूल सब वस्तु प्रदान करते।
इससे 'वरद' सुरग मोक्ष तुम्हीं प्रदाता ॥हे नाथ०॥390॥

ॐ ह्रीं वरदाय नमः अर्घ्यं.....।

ज्ञानादि से 'परम' आप त्रिलोक लक्ष्मी।
धारें अतः जन सभी तुम पास आते ॥हे नाथ०॥391॥

ॐ ह्रीं परमाय नमः अर्घ्यं.....।

आत्मा व अन्य जन को भि पवित्र करते।
इससे 'पुमान्' तुम ही जग के हितैषी ॥हे नाथ० ॥392॥

ॐ ह्री पुंसे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! आप 'कवि' द्वादश अंग वर्णे।
सद्धर्म के कथन में अतिशायि पटुता ॥हे नाथ० ॥393॥

ॐ ह्री कवये नमः अर्घ्यं.....।

ना आदि नांत अतएव 'पुराण पुरुष'।
आत्मा पुराण पुरुषा प्रभु आपकी है ॥हे नाथ० ॥394॥

ॐ ह्री पुराणपुरुषाय नमः अर्घ्यं.....।

ज्ञानादि से अतिशयी प्रभु वृद्ध ही हो।
इस हेतु नाम तुम 'वर्षीयान्' पाया॥हे नाथ० ॥395॥

ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः अर्घ्यं.....।

सुश्रेष्ठ हो 'ऋषभ' नाम धरा तुम्हीं ने।
इन्द्रादि वंद्य सुरपूजित सौख्य देवो ॥हे नाथ०॥396॥

ॐ ह्री ऋषभाय नमः अर्घ्यं.....।

हे देव ! आप 'पुरु' हैं युग के विधाता।
संपूर्ण द्वादश गणों मधि मुख्य ही हो ॥हे नाथ०॥397॥

ॐ ह्री पुरवे नमः अर्घ्यं.....।

उत्पत्ति है प्रतिष्ठा गुण की तुम्हीं से।
इससे तुम्हीं 'प्रतिष्ठाप्रसवादि' नामा ॥हे नाथ०॥398॥

ॐ ह्री प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः अर्घ्यं.....।

संपूर्ण कार्य हित कारण 'हेतु' आप।
संपूर्ण ज्ञानमय नाथ ! सुज्ञानदाता ॥हे नाथ०॥399॥

ॐ ह्रीं हेतवे नमः अर्घ्यं.....।

हो एकमात्र गुरु सर्व त्रिलोक में भी।
अतएव आप 'भुवनैकपितामहा' हो ॥
हे नाथ ! नाममय मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं॥400॥

ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

प्रभु महाशोकध्वज आदि नाम सौ धारा सुरपति पूजित हो।
सौइंद्रों से वंदित गणधर मुनिगण से वंदित संस्तुत हो ॥
प्रभु सात परम स्थान हेतु मैं नित प्रति तुम गुण को गाऊँ।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको तुमपद में ही मैं रम जाऊँ ॥4॥

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

रोलाछन्द

जय जय श्री जिनदेव, तुम महिमा अतिभारी।
जय जय तुम पद सेव, करें निकट संसारी॥
जय जय मुनिगण नित्य, तुम गुण महिमा गाते।
हृदय कमल के माहिं, तुमको सहज बिठाते॥1॥
भविजन मन गृह माहिं, जब तुम वास करोगे।
उनके सब संताप, प्रभु तब क्यों न हरोगे॥
तुम तन को संस्पर्श, पवन लगे तन में जब।
अहो कौन सी व्याधि, दूर नहीं होवे तब॥2॥
सीता को जब राम, अग्नि प्रवेश कराया।
लिया आपका नाम, अग्नी नीर बनाया॥
शील माहात्म्य विकास, बहुविध कमल खिले हैं।
नाम मंत्र परसाद, जन जन हृदय मिले हैं॥3॥

वारिषेण के घात, हेतू शस्त्र चलायो।
आप नाम तत्काल, रत्ननहार बनायो॥
मनोरमा जप नाम, वज्र किवाड़े खोले।
विद्युच्चर तुम नाम, जप भव बंधन तोड़े॥4॥
मनोवती ने आप, नाम जपा था जब ही।
दर्श मिला तत्काल, देवनिमित से तब ही॥
पूज्यपाद तुम नाम, ले निज दृष्टी पाई।
मानतुंग गुणगान, कर निज कीर्ति बढ़ाई॥5॥
बहुत भक्त तुम नाम, लेकर निज दुख चूरे।
कहूँ कहां तक नाम, होय कभी ना पूरे॥
मुझको भी हे नाथ ! नाम मंत्र का शरणा।
नहीं शक्ति कुछ नाथ ! लेश मात्र गुण वरणा॥6॥
मुझ में अगणित दोष, उन पर दृष्टि न डारो।
करो हमें संतोष, अपनो विरद निहारो॥
जब तक मुक्ति न होय, चरणों में रख लीजे।
नशे महारिपु मोह, ऐसी शक्ती दीजे॥7॥

दोहा

शरणागत के सर्वथा, तुम रक्षक भगवान।
'ज्ञानमती' अविचल निधी, दे मुझ करो महान ॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें सहस मंगल विस्तरें ॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें ॥1॥

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं० ६

स्थापना-गीताछंद

तीर्थंकरों के नाम सार्थक गुणगणों से पूर्ण हैं।
इन्द्रादिगण गाते सदा अतएव अतिशय पूर्ण हैं ॥
त्रैलोक्य वंदित उन प्रभू की मैं करूं इत थापना।
पूजूं अतुल गुरु भक्ति से, चाहूं सदा हित आपना ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह।

अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह। अत्र मम सन्निहितो

भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक-नाराचछंद

सिंधु नीर से जिनेन्द्र पाद पद्म पूजिये।
स्वात्म कर्मपंक धोय पूर्ण शुद्ध हूजिये ॥
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूं।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूं ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....

चंदनादि गंध से जिनेश चर्ण चर्चिये।
मोह ताप ध्वंस के अपूर्व शांति अर्जिये ॥तीर्थ० ॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं.....।

धौत स्वच्छ श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
स्वात्म सौख्य ले अखंड पाप को नशाइये ॥तीर्थ० ॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

मोगरा जुही गुलाब वर्ण वर्ण के लिये।
कामदेव के जयी जिनेश चर्ण में दिये ॥तीर्थ० ॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

पूड़ियां इमर्तियां बनाय थाल में धरें।
पूर्णतृप्त आपको चढ़ाय व्याधियां हरे ॥तीर्थ०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

दीपवर्तिका जले समस्त ध्वांत को हरे।
पूजते तुम्हें प्रभो ! अपूर्व ज्योति को करे ॥तीर्थ०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

धूप गंधयुक्त अग्निपात्र में जलाय हूँ।
पाप कर्म को जलाय पुण्यराशि पाय हूं ॥तीर्थ०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

सेव संतरा अनार औ बदाम भी लिये।
मोक्ष सौख्य हेतु नाथ ! आपको चढ़ा दिये ॥तीर्थ०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

तोय गंध शालि पुष्प आदि अष्ट द्रव्य ले।
तीन रत्न हेतु आप अर्घ्य से जजूं भले ॥तीर्थ०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्री वृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा

तीर्थंकर जिनदेव के चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूं, होवे शांति अपार ॥10॥

शांतये शांतिधारा

वकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि चरणों करूं, करूं स्वात्मशृंगार ॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

ज्ञान दर्श सुखवीर्यमय, गुण अनंत विलसंत।
सुमन चढ़ाकर पूजहूं, हरूं सकल जगफंद ॥12॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विष्णुपद–छंद

आप नाम 'श्रीवृक्षलक्षणा' इंद्र सदा गावें।
दिव्य अशोक वृक्ष इक योजन मणिमय दशविं ॥
नाममंत्र को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके ॥401॥

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः अर्घ्यं.....।

अनंतलक्ष्मी प्रिया साथ में, आलिंगन करते।
सूक्ष्मरूप होने से भगवन् 'श्लक्ष्ण' नाम धरते ॥नाम० ॥402॥

ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः अर्घ्यं.....।

अष्ट महाव्याकरण कुशल हो, सर्वशास्त्रकर्ता।
प्रभू आप 'लक्षण्य' नामधर सब लक्षण भर्ता ॥नाम० ॥403॥

ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः अर्घ्यं.....।

'शुभलक्षण' श्रीवृक्ष शंख पंकज स्वस्तिक आदी।
प्रातिहार्य मंगल सुद्रव्य शुभ लक्षण सौ अठ भी ॥नाम० ॥404॥

ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'निरक्ष' इंद्रिय से विरहित सौख्य अतींद्रिय हैं।
इंद्रिय निग्रहकर जो ध्याते वे निज सुखमय हैं ॥नाम० ॥405॥

ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभू 'पुण्डरीकाक्ष' कहाये नेत्र कमलसम हैं।
नासादृष्टि सौम्य छवि लखते नेत्र प्रफुल्लित हैं ॥नाम० ॥406॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

'पुष्कल' आत्मगुणों से भगवन् ! तुम परिपुष्ट हुये।
भक्तजनों का पोषण करते जो तुम शरण भये ॥नाम० ॥407॥

ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभू 'पुष्करेक्षण' पंकज दल सदृश नेत्र लम्बे।
निजमन कमल खिलाने हेतू भवि तुम अवलंबे ॥नाम० ॥408॥

ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो 'सिद्धिया' स्वात्मलब्धि मुक्ती के दायक हो।
भक्तों की सब कार्यसिद्धि हित तुम ही लायक हो ॥नाम० ॥409॥

ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'सिद्धसंकल्प' सर्व संकल्प सिद्ध कीना।
भक्तों के भी सकल मनोरथ पूरे कर दीना ॥नाम० ॥410॥

ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घ्यं.....।

'सिद्धात्मा' प्रभु तुम आत्मा ने सिद्ध अवस्था ली।
सिद्ध शिला पर आप विराजे अनवधि गुणशाली ॥नाम० ॥411॥

ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं.....।

नाम ! 'सिद्धसाधन' शिवसाधन रत्नत्रय धारा।
जिनने आप चरण को पूजा उन्हें शीघ्र तारा ॥नाम० ॥412॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं.....।

ज्ञेयवस्तु सब जान लिया है नहीं शेष कुछ भी।
'बुद्धबोध्य' अतएव कहाये, लिया सर्वसुख भी ॥नाम० ॥413॥

ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः अर्घ्यं.....।

रत्नत्रय गुण विभव प्रशंसित सब जग में प्रभु का।
'महाबोधि' अतएव आप ही हरो सर्व विपदा ॥नाम० ॥414॥

ॐ ह्रीं महाबोधये नमः अर्घ्यं.....।

परम श्रेष्ठ अतिशायी पूजा ज्ञान लहा तुमने।
सदा गुणों से बढ़ते रहते 'वर्द्धमान' जग में ॥नाम० ॥415॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय नमः अर्घ्यं.....।

बड़ी-बड़ी ऋद्धी के धारक आप 'महर्द्धिक' हो।
गणधर मुनिगण वंदित चरणा आप सौख्यप्रद हो ॥नाम० ॥416॥

ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः अर्घ्यं.....।

वेद- चार अनुयोग ज्ञान के अंग- उपाय तुम्हीं।
अतः आप 'वेदांग' ज्ञानप्राप्ती के हेतु तुम्हीं ॥नाम० ॥417॥

ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः अर्घ्यं.....।

वेद- आत्मविद्या शरीर से भिन्न आतमा है।
इसके ज्ञाता भिन्न किया तनु अतः 'वेदविद्' हैं ॥
नाममंत्र को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके ॥418॥

ॐ ह्रीं वेदविदे नमः अर्घ्यं.....।

'वेद्य' आप ऋषिगण के द्वारा ज्ञान योग्य माने।
स्वसवेद्य ज्ञान वो पाते जो पूजन ठाने ॥नाम० ॥419॥

ॐ ह्रीं वेद्याय नमः अर्घ्यं.....।

'जातरूप' तुम जनमे जैसे रूप दिगंबर है।
प्रकृतरूप निर्दोष आपका भविजन सुखप्रद है ॥नाम० ॥420॥

ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः अर्घ्यं.....।

विद्वानों में श्रेष्ठ 'विदांवर' आप पूर्णज्ञानी।
तुमपद पंकज भक्त शीघ्र ही वरते शिवरानी ॥नाम० ॥421॥

ॐ ह्रीं विदांवराय नमः अर्घ्यं.....।

'वेदवेद्य' प्रभु आगम से तुम जानन योग्य कहे।
केवलज्ञान से हि या प्रभु जानन योग्य रहे ॥नाम० ॥422॥

ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं.....।

'स्वसवेद्य' प्रभु स्वयं सुअनुभव गम्य आप ही हैं।
स्वयं स्वयं का अनुभव करके हुये केवली हैं ॥नाम० ॥423॥

ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'विवेद' वेदत्रय विरहित स्त्री पुरुषादी।
हो विशिष्ट विज्ञानी भगवन् ! आतम सुखस्वादी ॥नाम० ॥424॥

ॐ ह्रीं विवेदाय नमः अर्घ्यं.....।

'वदताम्बर' प्रभु वक्तागण में सर्वश्रेष्ठ तुम ही।
सब भाषामय दिव्यध्वनी से उपदेशा तुम ही ॥नाम० ॥425॥

ॐ ह्रीं वदताम्बराय नमः अर्घ्यं.....।

दोहा

नाथ ! 'अनादिनिधन' तुम्हीं, आदि अंत से हीन।
अतिशय लक्ष्मीयुत तुम्हीं, पूजूँ भक्ति अधीन ॥426॥

ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः अर्घ्यं.....।

'व्यक्त' आप सुज्ञान से, प्रगट सर्वथा मान्य।
सर्व अर्थ प्रकटित किया, जजत मिले धन धान्य ॥427॥

ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः अर्घ्यं.....।

'व्यक्तवाक्' प्रभु तुम वचन, सर्व प्राणि को गम्य।
सभी अर्थ स्पष्ट हो, नमत जन्म हो धन्य ॥428॥

ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'व्यक्तशासन' तुम्हीं, त्रिभुवन में स्पष्ट।
सब विरोधविरहित सुमत, नमूँ नमूँ अति इष्ट ॥429॥

ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'युगादिकृत् ! कर्मभू, युग के कर्ता आप।
जीवन कला सिखाय दी, नमूँ हरो मुझ पाप ॥430॥

ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः अर्घ्यं.....।

'युगाधार' युग की सभी किया व्यवस्था आप।
राजनीति अरु धर्मद्वय, किया नमूं नित आप ॥431॥

ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'युगादि' तुम कर्मभू युग का कर प्रारंभ।
असि मषि आदि क्रिया कहीं, नमूं तुम्हें तज दंभ ॥432॥

ॐ ह्रीं युगादये नमः अर्घ्यं.....।

'जगदादिज' युग के प्रथम, आप हुये उत्पन्न।
तीर्थंकर युग के प्रथम, पूजूँ चित्त प्रसन्न ॥433॥

ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः अर्घ्यं.....।

निज प्रभाव से इंद्रगण को भी कर अतिक्रांत।
प्रभु 'अतींद्र' तुमको जजूँ, मिले सौख्य निर्भांत ॥434॥

ॐ ह्रीं अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'अतींद्रिय' ज्ञानसुख, आप अतीन्द्रिय मान्य।
इंद्रिय के गोचर नहीं, नमूँ मिले सुख साम्य ॥435॥

ॐ ह्रीं अतींद्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

'धीन्द्र' पूर्ण कैवल्यमय, बुद्धी के हो ईश।
शुद्ध बुद्धि मेरी करो जजूँ नमाकर शीश ॥436॥

ॐ ह्रीं धीन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

परम मोक्ष ऐश्वर्य का, अनुभव करते आप।
प्रभु 'महेन्द्र' तुमको नमूँ, हरो सकल संताप ॥437॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

सूक्ष्म अंतरित दूरके, अतींद्रिय सुपदार्थ।
एक समय में देखते, 'अतींद्रियार्थदृक्' नाथ ॥438॥

ॐ ह्रीं अतींद्रियार्थदृशे नमः अर्घ्यं.....।

इन्द्रिय विरहित आप हैं, आत्म सौख्य परिपूर्ण।
अतः 'अनिंद्रिय' मुनि कहे, नमत सर्व दुखचूर्ण ॥439॥

ॐ ह्रीं अनिंद्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

अहमिंद्रों से पूज्य प्रभु, 'अहमिन्द्रार्च्य' महान।
अहं अहं कह संपदा, मिले जजत ही आन ॥440॥

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्याय नमः अर्घ्यं.....।

बड़े-बड़े सब इन्द्र से, पूजित आप जिनेश।
सभी 'महेंद्रमहित' कहें नमूँ हरो भवक्लेश ॥441॥

ॐ ह्रीं महेंद्रमहिताय नमः अर्घ्यं.....।

चउविध पूजा से महित, त्रिभुवन पूज्य 'महान्'।
नमूँ सदा मैं भाव से, करो स्वात्म धनवान् ॥442॥

ॐ ह्रीं महते नमः अर्घ्यं.....।

सबसे ऊंचे उठ चुके, 'उद्भव' जगत्प्रसिद्ध।
जन्म श्रेष्ठ जग में धरा, पूजत करो समृद्ध ॥443॥

ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः अर्घ्यं.....।

धर्मसृष्टि के बीजप्रभु, 'कारण' आप प्रसिद्ध।
भविजन मुक्ती हेतु हो, नमत कार्य सब सिद्ध ॥444॥

ॐ ह्रीं कारणाय नमः अर्घ्यं.....।

युग कि आदि में सृष्टि के 'कर्ता' आप जिनेश।
असि मषि आदिक षट् क्रिया उपदेशी परमेश ॥445॥

ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

भवसमुद्र के पार को, पहुँचे 'पारग' नाथ।
मुझको पार उतारिये, नमूँ नमूँ नत माथ ॥446॥

ॐ ह्रीं पारगाय नमः अर्घ्यं.....।

भव- सागर सुपांचविध, इससे तारणहार।
'भवतारग' तुमको जजूँ भरो सौख्य भण्डार ॥447॥

ॐ ह्रीं भवतारगाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अगह्य' नहिं अन्य के अवगाहन के योग्य।
तुम गुणपार न पा सकें, पूजत सौख्य मनोज्ञ ॥448॥

ॐ ह्रीं अगाह्याय नमः अर्घ्यं.....।

योगिगम्य प्रभु अति गहन आप अलक्ष्य स्वरूप।
जजूँ 'गहन' अतिशय कठिन आप रूप चिद्रूप ॥449॥

ॐ ह्रीं गहनाय नमः अर्घ्यं.....।

'गुह्य' योगि गोचर तुम्हीं, सर्वजनों से गुप्त।
नमूँ नमूँ मुझ मन वसो, करो मोह अरि सुप्त ॥450॥

ॐ ह्रीं गुह्याय नमः अर्घ्यं.....।

उपजाति—छंद

'परार्ध्य' स्वामी सबमें प्रधाना।
उत्कृष्ट ऋद्धी सुख के निधाना ॥
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ ॥451॥

ॐ ह्रीं परार्ध्याय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! 'परमेश्वर' आप ही हैं।
उत्कृष्ट मुक्ती श्रीनाथ ही हैं ॥पूजूँ०॥452॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

अनन्त ऋद्धी प्रभु आप में हैं।
अतः 'अनंतर्द्धि' प्रभो ! तुम्ही हो ॥पूजूँ० ॥453॥

ॐ ह्रीं अनन्तर्द्धये नमः अर्घ्यं.....।

अमेय ऋद्धी मर्याद हीना।
अतः 'अमेयर्द्धि' प्रभो ! तुम्हीं हो॥
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ॥454॥

ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं.....।

अचिन्त्य ऋद्धी नहिं सोच सकते।
अतः 'अचिन्त्यर्द्धि' प्रभो ! तुम्हीं हो ॥पूजूँ० ॥455॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्यद्र्धये नमः अर्घ्यं.....।

'समग्रधी' ज्ञेयप्रमाण बुद्धी।
कैवल्यज्ञानी प्रभु आप ही हो ॥पूजूँ० ॥456॥

ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! तुम मुख्य सभी जनों में।
हो 'प्राग्रय' इससे मैं नित्य वंदूं ॥पूजूँ० ॥457॥

ॐ ह्रीं प्राग्रयाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रत्येक मंगल शुभ कार्य में ही।
तुम्हें स्मरते प्रभु 'प्राग्रहर' हो ॥पूजूँ० ॥458॥

ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं.....।

लोकाग्र के सम्मुख हो रहे हो।
'अभ्यग्र' इससे मुनिनाथ कहते ॥पूजूँ० ॥459॥

ॐ ह्रीं अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रत्यग्र्' नूतन संपूर्ण जन में।
प्रभो ! विलक्षण तुम ही कहाते ॥पूजूँ० ॥460॥

ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी सभी के तुम 'अग्रय' मानें।
मैंने शरण ली अतएव आके ॥पूजूँ० ॥461॥

ॐ ह्रीं अग्रयाय नमः अर्घ्यं.....।

संपूर्ण जन में प्रभु अग्रसर हो।
अतएव 'अग्रिम' कहते सुरेंद्रा ॥पूजूँ० ॥462॥

ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः अर्घ्यं.....।

हो ज्येष्ठ सबमें 'अग्रज' कहाते।
त्रैलोक्य में नाथ तुम्हीं बड़े हो ॥पूजूं० ॥463॥

ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः अर्घ्यं.....।

'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो ॥पूजूँ० ॥464॥

ॐ ह्रीं महातपसे नमः अर्घ्यं.....।

तेजोमयी पुण्य प्रभो ! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला ॥पूजूँ० ॥465॥

ॐ ह्रीं महातेजसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया ॥पूजूँ० ॥466॥

ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः अर्घ्यं.....।

ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो ॥पूजू० ॥467॥

ॐ ह्रीं महोदयाय नमः अर्घ्यं.....।

कीर्ती चहूँदिश प्रभु की सुफैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से ॥पूजूँ० ॥468॥

ॐ ह्रीं महायशसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो! महाधाम तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी ॥पूजूँ० ॥469॥

ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ ! मुझको निज शक्ति देवो ॥पूजूँ० ॥470॥

ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः अर्घ्यं.....।

'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी ॥पूजूँ० ॥471॥

ॐ ह्रीं महाधृत्ये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
क्षोभादि भय से नहिं आकुली थे ॥पूजूँ० ॥472॥

ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्य शाली ॥पूजूँ० ॥473॥

ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे ॥पूजूँ० ॥474॥

ॐ ह्रीं महासंपदे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो ॥पूजूँ० ॥475॥

ॐ ह्रीं महाबलाय नमः अर्घ्यं.....।

शिखरणी–छंद

'महाशक्ती' धारो त्रिभुवन गुरु आप सच में।
महा उत्साही थे बहुविध तपा आप तप भी ॥
प्रभू की नामावलि नित प्रति जपूं भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूं आत्म तन से ॥476॥

ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः अर्घ्यं.....।

'महाज्योती' स्वामी, अद्भुत परंज्ञानमय हो।
मुझे ज्ञानज्योती झटिति प्रभु दो पूर्ण सुख हो ॥प्रभू० ॥477॥

ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

'महाभूती' स्वामी, विभव अतिशायी जगत में।
प्रभो राजें सिंहासन मणिमय पे अधर ही ॥प्रभू० ॥478॥

ॐ ह्रीं महाभूतये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभू की जो शोभा 'महाद्युति' नामा धरत है।
नहीं ऐसी कांती रतनमणि में भी दिखत है ॥प्रभू० ॥479॥

ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः अर्घ्यं.....।

महाबुद्धी पूर्णा 'महामति' का नाम धरती।
हमें भी दे दीजे सुमति भगवन् ! होय सुगती ॥प्रभू० ॥480॥

ॐ ह्रीं महामतये नमः अर्घ्यं.....।

'महानीती' धारो सकल जन का न्याय करते।
महा दुष्कर्मों से अलग करके सौख्य भरते ॥प्रभू० ॥481॥

ॐ ह्रीं महानीतये नमः अर्घ्यं.....।

'महाक्षान्ती' स्वामी परम करुणा भव्य जन पे।
निकालो दुःखों से करम अरि को माफ करते ॥प्रभू० ॥482॥

ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं.....।

'महादय' हो स्वामी, सकल भवि प्राणी पर दया।
किया शिष्यों से भी सतत पलवायी अंहिंसा ॥प्रभू० ॥483॥

ॐ ह्रीं महादयाय नमः अर्घ्यं.....।

महाविद्वान् भगवान् शिवप्रद 'महाप्राज्ञ' तुम हो।
मुझे दीजे बुद्धी भवदधि तरूँ युक्ति करके ॥प्रभू०॥484॥

ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

महाभागी स्वामी सुखकर 'महाभाग' तुम हो।
महा पूजा पायी सुरपति किया भक्ति रुचि से ॥प्रभू० ॥485॥

ॐ ह्रीं महाभागाय नमः अर्घ्यं.....।

निजानंदात्मा हो सुखमय 'महानंद' प्रभु हो।
मुझे दीजे स्वामी सकल सुखकर मोक्षपदवी ॥प्रभू० ॥486॥

ॐ ह्रीं महानंदाय नमः अर्घ्यं.....।

'महाकवि' हे स्वामिन् ! सकल सुखदायी वचन हैं।
प्रभो दीजे शक्ती मुझ वचन सिद्धी प्रगट हो ॥प्रभू० ॥487॥

ॐ ह्रीं महाकवये नमः अर्घ्यं.....।

'महामह' हे स्वामिन् ! सुरपति करें आप अर्चा।
महा तेजस्वी हो अखिल जनता सौख्य भरता ॥प्रभू० ॥488॥

ॐ ह्रीं महामहाय नमः अर्घ्यं.....।

'महाकीर्ती' स्वामी सुयश तुम व्यापा भुवन में।
प्रभू पादाम्बुज को सतत प्रणमूँ स्वात्मनिधि दो ॥ प्रभू० ॥489॥

ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः अर्घ्यं.....।

'महाकान्ती' धारो अतुल छवि है आप तनु की।
सभी आधी व्याधी हरण करके स्वस्थ कर दो॥
प्रभू की नामावलि नित प्रति जयू भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूं आत्म तन से॥490॥

ॐ ह्रीं महाकान्तये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! ऊँचे देही, 'महावपु' तुम ही चरम हो।
मिटा दो बाधायें विघन हरता आप जग में ॥प्रभू० ॥491॥

ॐ ह्रीं महावपुषे नमः अर्घ्यं.....।

अहिंसा जीवों की अभयद 'महादान' करते।
हमारी रक्षा भी झटिति प्रभु कीजे जगत् से ॥प्रभू० ॥492॥

ॐ ह्रीं महादानाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! केवलज्ञानी युगपत् 'महाज्ञान' गुण से।
सभी लोकालोकं विशद त्रयकालिक लखत हो ॥प्रभू० ॥493॥

ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! एकाग्री हो शिवप्रद 'महायोग' गुण से।
स्वयं में ही साधा निजसुख महाध्यान बल से ॥प्रभू० ॥494॥

ॐ ह्रीं महायोगाय नमः अर्घ्यं.....।

गुणों की खानी हो अतिशय 'महागुण' मुनि कहें।
गुणों को दे दीजे सकल मुझ दोषादि हन के ॥प्रभू० ॥495॥

ॐ ह्रीं महागुणाय नमः अर्घ्यं.....।

सुमेरू पे तेरा न्हवन करते इंद्रगण भी।
महापूजा पायी 'महामहपति' आप जग में ॥प्रभू० ॥496॥

ॐ ह्रीं महामहपतये नमः अर्घ्यं.....।

सुरेंद्रों के द्वारा प्रभु 'प्राप्तमहाकल्याणपंचक'।
गरभ जन्मादी में उत्सव किया देवगण ने ॥प्रभू० ॥497॥

ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय नमः अर्घ्यं.....।

सभी के स्वामी हो अतिशय 'महाप्रभु' भुवन में।
निवारो मोहारी बहुत दुख देता जु मुझको ॥प्रभू० ॥498॥

'महाप्रातीहार्याधिश' चमर छत्रादिक लहा।
शतेंद्रों से पूजित त्रिभुवन विभव आप चरणों ॥प्रभू० ॥499॥

ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं.....।

'महेश्वर' हो स्वामी सुरपति अधीश्वर तुमहि हो।
सुभक्ती से वंदूँ झटिति शिवलक्ष्मी वरद हो ॥प्रभू० ॥500॥

ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

शंभु–छंद

श्री वृक्षलक्षणादिक सौ ये तुम नाममंत्र अतिशयकारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ भक्ति करूँ, पा जाऊँ निज संपति सारी ॥
बहिरात्म अवस्था छोड़ नाथ ! अंतर आतम शुद्धात्म बनूँ।
तुम भक्ति युक्ति से शक्ति पाय मुक्तीपद पा जिनराज बनूँ ॥5॥

ॐ ह्री श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः

जाप्य

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम धुनि सुन भविवृन्द नित, हरें सकल संताप ॥1॥

शंभु छन्द

जय जय त्रिभुवन पति का वैभव, अन्तर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्श ज्ञान सुख वीर्य रूप, आनन्त्य चतुष्टय निधिमय है ॥
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानीं।
जब गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी ॥2॥

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
द्वादश योजन उत्कृष्ट कही, इक योजन हो घटते क्रम से ॥
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है ॥3॥
पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, जो अनुपम शोभा धारे है॥
सब बीस हजार हाथ ऊँचा, यह समवसरण अति शोभा है।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभे ॥4॥
पंगू अन्धे रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते॥
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महावीथियां हैं।
वीथी में मानस्तम्भ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं ॥5॥
इक योजन से कुछ अधिक तुँग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं ॥
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएं राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें ॥6॥
ये अस्सी कोशों तक सचमुच, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं ॥
मानस्तंभों के चारों दिश, जल पूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अति सुन्दर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं ॥7॥
ये प्रभु का सन्निध पा करके, ही मान गलित कर पाते हैं।
अतएव सभी अतिशय भगवन् ! तेरा ही गुरुजन गाते हैं ॥
मैं भी प्रभु तुम सन्निध पाकर, संपूर्ण कषायों को नाशूँ।
प्रभु ऐसा वह दिन कब आवे, जब निज में निज को परकाशूँ ॥8॥
जिननाथ ! कामना पूर्ण करो, जिन चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो॥
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित स्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम मन तुम पद ध्यावे॥9॥

दोहा

तीर्थंकर गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार ॥10॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्रनाशें सहस मंगल विस्तरें ॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें ॥1॥

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं० ७

स्थापना-नरेन्द्र छंद

भव्यजनों को भववारिधि से, कैसे पार करूं मैं।
अतिकरुणा से धर्मध्यानमय भाव धरें नित मन में ॥
ऐसे धार्मिक मनुज तीर्थंकर प्रकृति बंध करते हैं।
उन तीर्थंकर को जजते ही शिव लक्ष्मी वरते हैं ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रसमूह। अत्र अवतर

अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रसमूह। अत्र तिष्ठ तिष्ठ

ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रसमूह। अत्र मम

सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक-भुजंगप्रयात छंद

महापुण्य भंडार हो तीर्थनामी।
जजूं नीर से मैं तुम्हें मोक्षगामी ॥
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूं।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

महाशांति सिंधू सभी शील पूरे।
जजूं आपको गंध से ताप चूरें ॥प्रभू० ॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं.....।

सुचित्पिंड आनंद कंदा तुम्हीं हो।
जजूं शालि के पुंज से आप ही हो ॥प्रभू० ॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

रतीनाथ के आप ही तो विजेता।
जजूं पुष्प से आप को मुक्ति नेता ॥प्रभू० ॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

सभी दोष से शून्य हो आप ही हो।
परं तृप्ति हेतू जजूं मैं तुम्हीं को ॥प्रभू० ॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

परं ज्योतिधारी तुम्हें दीप से मैं।
जजूं ज्योति अंतर जगे ज्ञान की मे ॥प्रभू० ॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

अगनिपात्र में धूप खेऊं रुची से।
सदा सौख्य हेतू भजूं मन शुची से ॥प्रभू० ॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

अनंनास नींबू फलों से जजूं मैं।
सुसर्वार्थसिद्धी फलों को भजूं मैं ॥प्रभू० ॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुनिआदिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

वसू द्रव्य ले अर्घ्य को नित चढ़ाऊँ।
करो पूर्ण संयम कि मैं मोक्ष पाऊँ ॥प्रभू० ॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुन्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा

सरयू नदि को नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुंजग में मुझ में सदा, करो शांति भगवंत ॥10॥

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार ॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

सब कर्मों के एक ही, मोह कर्म बलवान।
उसके नाशन हेतु मैं, पूजूं भक्ति प्रधान ॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सोरठा

'महामुनि' प्रभु आप, मुनियों में उत्तम कहे।
नाममंत्र तुम नाथ ! पूजत ही सुखसंपदा ॥501॥

ॐ ह्रीं महामुनये नमः अर्घ्यं.....।

मुनि हो मौन धरंत प्रभु 'महामौनी'[1] तुम्हीं।
नाम मंत्र पूजंत, रोग शोक संकट टले ॥502॥

ॐ ह्रीं महामौनिने नमः अर्घ्यं.....।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी' हुये।
नाममंत्र का ध्यान, करते ही सब सुख मिले ॥503॥

ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः अर्घ्यं.....।

पूर्ण जितेंद्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
नाममंत्र तुम नाथ ! पूजंत आतम निधि मिले ॥504॥

ॐ ह्रीं महादमाय नमः अर्घ्यं.....।

1. महाध्यानी पाठ आदि पु० में हैं।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
नाममंत्र नत शीश, पूजूँ मैं अतिभाव से ॥505॥

ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः अर्घ्यं.....।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
पूरण हो गुण शील, नाममंत्र मैं पूजहूँ ॥506॥

ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः अर्घ्यं.....।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया[1]।
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ायके ॥507॥

ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

अतिशय पूज्य जिनेश ! नाम 'महामख' धारते।
पूजूँ भक्ति समेत, नाममंत्र प्रभु सुख मिले ॥508॥

ॐ ह्रीं महामखाय नमः अर्घ्यं.....।

पांच महाव्रत ईश, नाम 'महाव्रतपति' धरा।
जजूँ नमाकर शीश, नाममंत्र प्रभु आपके ॥509॥

ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं.....।

'मह्य' आप जगपूज्य, गणधर साधू गण नमें।
मिलें स्वात्मपद पूज्य, नाममंत्र को पूजते ॥510॥

ॐ ह्रीं मह्याय नमः अर्घ्यं.....।

'महाकान्तिधर' आप अतिशय कांतिनिधान हो।
नाममंत्र तुम जाप, करे अतुल सुखसंपदा ॥511॥

ॐ ह्रीं महाकांतिधराय नमः अर्घ्यं.....।

सब के स्वामी इष्ट, अतः 'अधिप' सुरगण कहें।
नाशो सर्व अनिष्ट, नाममंत्र तुम पूजहूँ ॥512॥

ॐ ह्रीं अधिपाय नमः अर्घ्यं.....।

'महामैत्रिमय' नाथ ! सबसे मैत्रीभाव है।
नाममंत्र तुम जाप, त्रिभुवन को वश में करे ॥513॥

ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः अर्घ्यं.....।

---

1. होम कर

अनवधि गुण के नाथ, तुम्हें 'अमेय' मुनी कहें।
पूजत बनूँ सनाथ, नाममंत्र प्रभु आपके ॥514॥

ॐ ह्रीं अमेयाय नमः अर्घ्यं.....।

'महोपाय' तुम नाथ ! शिवके श्रेष्ठ उपाययुत।
जजत सर्व सुखसाथ, नाममंत्र को नित जपूँ ॥515॥

ॐ ह्रीं महोपायाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'महोमय' आप, अति उत्सव अरु ज्ञानयुत।
नाममंत्र तुम जाप, सर्व उपद्रव नाशता ॥516॥

ॐ ह्रीं महोमयाय नमः अर्घ्यं.....।

'महाकारुणिक' आप दया धर्म उपदेशिया।
नाम मंत्र का जाप्य करत जन्म मृत्यू टले ॥517॥

ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं.....।

'मंता' आप महान, सब पदार्थ को जानते।
जजूँ नाम गुणखान, पूर्ण ज्ञान संपति मिले ॥518॥

ॐ ह्रीं मंत्रे नमः अर्घ्यं.....।

सर्व मंत्र के ईश, 'महामंत्र' तुम नाम है।
तुम्हें नमें गणधीश, नाममंत्र मैं भी जजूँ ॥519॥

ॐ ह्रीं महामंत्राय नमः अर्घ्यं.....।

यतिगण में अतिश्रेष्ठ, नाम 'महायति' आपका।
पूजत ही पद श्रेष्ठ, नाममंत्र को पूजहूँ ॥520॥

ॐ ह्रीं महायतये नमः अर्घ्यं.....।

'महानाद' प्रभु आप, दिव्यध्वनी गंभीर धर।
नमत बनूँ निष्पाप, नाममंत्र भी मैं जजूँ ॥521॥

ॐ ह्रीं महानादाय नमः अर्घ्यं.....।

दिव्यध्वनी गंभीर, योजन तक सुनते सभी।
जजत मिले भवतीर, 'महाघोष' तुम नामको ॥522॥

ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'महेज्य' सुनाम, महती पूजा पावते।
सौ इन्द्रों से मान्य, नाममंत्र मैं पूजहूँ ॥523॥

ॐ ह्रीं महेज्याय नमः अर्घ्यं.....।

'महसांपति' प्रभु आप, सर्व तेज के ईश हो।
तुम प्रताप भवताप, हरण करे मैं पूजहूँ ॥524॥
ॐ ह्रीं महसांपतये नमः अर्घ्यं.....।

ज्ञान यज्ञ को धार, नाम 'महाध्वरधर' प्रभू।
मिले सर्व सुखसार, नाममंत्र मैं पूजहूँ ॥525॥
ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं.....।

स्रग्विणी–छंद

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
कर्म-भू आदि में सर्व में ज्येष्ठ हो॥
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ॥526॥
ॐ ह्रीं धुर्याय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रंथ भी इष्ट दातार हो ॥आप० ॥527॥
ॐ ह्रीं महौदार्याय नमः अर्घ्यं.....।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो ॥आप० ॥528॥
ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः अर्घ्यं.....।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं ॥आप० ॥529॥
ॐ ह्रीं महात्मने नमः अर्घ्यं.....।

सर्व तेजोमयी 'महसांधाम' हो।
आत्म के तेज से सर्व जग मान्य हो ॥आप० 530॥
ॐ ह्रीं महसांधाम्ने नमः अर्घ्यं.....।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महिर्षि' तुम्हीं।
ऋद्धी सिद्धी धरो आप सुख की मही ॥आप० ॥531॥
ॐ ह्रीं महर्षये नमः अर्घ्यं.....।

श्रेष्ठ भव धारके आप 'महितोदया'।
तीर्थकर नाम से पूज्य धर्मोदया ॥आप० ॥532॥

ॐ ह्रीं महितोदयाय नमः अर्घ्यं.....।

भो 'महाक्लेशअंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाश हेतू सुअंकुश सही ॥आप० 533॥

ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं.....।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ ! मेरे हरो कर्म आनंद हो ॥आप० 534॥

ॐ ह्रीं शूराय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
नाथ ! रक्षा करो आप जगदीश हो ॥आप० ॥535॥

ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः अर्घ्यं.....।

आपही हो 'गुरु' धर्म उपदेश दो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो ॥आप० 536॥

ॐ ह्रीं गुरवे नमः अर्घ्यं.....।

आप ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तू भणी ॥आप० ॥537॥

ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
नाथ ! दीजे अनंतों गुणों को अभी ॥आप० ॥538॥

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रू हना।
सर्व दोषारिनाशा सुमृत्यू हना ॥आप० ॥539॥

ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं.....।

आप इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूं चित्त को रोक के ॥आप० ॥540॥

ॐ ह्रीं वशिने नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! हो 'महाभवाब्धिसंतारि' भी।
आप संसार सागर तरा तारते ॥
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूं॥541॥

ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घ्यं.....।

आप ही 'महामोहाद्रिसूदन' कहे।
मोह पर्वत सुभेदा सुज्ञाता बनें ॥आप० ॥542॥

ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं.....।

आप ही हो 'महागुणाकर' लोक में।
रत्नत्रय की खनी भव्य पूजूं तुम्हें ॥आप० ॥543॥

ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः अर्घ्यं.....।

'क्षान्त' हो सर्वपरिषह उपद्रव सहा।
आपकी भक्ति से हो क्षमा गुण महा ॥आप० ॥544॥

ॐ ह्रीं क्षान्ताय नमः अर्घ्यं.....।

भो 'महायोगिश्वर' गणधरादी पती।
योगियों में धुरंधर जगत के पती ॥आप० 545॥

ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'शमी' शांतपरिणाम से विश्व में।
पूर्ण शांती मिले पूजहूँ नाथ ! मैं ॥आप० ॥546॥

ॐ ह्रीं शमिने नमः अर्घ्यं.....।

हो 'महाध्यानपति' शुक्लध्यानीश हो।
शुक्ल परिणाम हों नाथ ! वरदान दो ॥आप० ॥547॥

ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं.....।

'ध्यातमहाधर्म' सब जीव रक्षा करी।
शुभ अहिंसामयी धर्म के हो धुरी ॥आप० ॥548॥

ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'महाव्रत' प्रभो ! पांच व्रत श्रेष्ठ धर।
पूर्ण होवें महाव्रत बनूँ मुक्तिवर ॥आप० ॥549॥

ॐ ह्रीं महाव्रताय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'महाकर्मअरिहा' महावीर हो।
कर्म अरि को हना आप अरिहंत हो ॥आप० ॥550॥

ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नमः अर्घ्यं.....।

सुन्दरी–छंद

जिन स्वरूप विदित 'आत्मज्ञ' हो।
सब चराचर लोक सुविज्ञ हो॥
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को॥551॥

ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

सर्व देवन मधि 'महादेव' हो।
सुर असुर पूजित महादेव हो ॥जजतहूँ०॥552॥

ॐ ह्रीं महादेवाय नमः अर्घ्यं.....।

महत समरथवान 'महेशिता'।
सकल ऐश्वर धारि जिनेशिता ॥जजतहूँ०॥553॥

ॐ ह्रीं महेशित्रे नमः अर्घ्यं.....।

'सरवक्लेशापह' दुख नाशिये।
सकल ज्ञान सुधामय साजिये ॥जजतहूँ०॥554॥

ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं.....।

निज हितंकर 'साधु' कहावते।
स्वपर हित साधन बतलावते ॥जजतहूँ०॥555॥

ॐ ह्रीं साधवे नमः अर्घ्यं.....।

'सरबदोषहरा' जिन आप हो।
सकल गुणरत्नाकर नाथ हो ॥जजतहूँ०॥556॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं.....।

'हर' तुम्हीं सब पाप विनाशते।
प्रभु अनंतसुखाकर आप ही ॥जजतहूँ०॥557॥

ॐ ह्रीं हराय नमः अर्घ्यं.....।

जिन 'असंख्येय' प्रभु आप ही।
गिन नहीं सकते गुण साधु भी॥
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को॥558॥

ॐ ह्रीं असंख्येयाय नमः अर्घ्यं.....।

'अप्रमेयात्मा' जिन आप हो।
अनवधी शक्तीधर नाथ हो ॥जजतहूँ०॥559॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं.....।

जिन 'शमात्मा' शांतस्वरूप हो।
सकल कर्मक्षयी शिवभूप हो ॥जजतहूँ०॥560॥

ॐ ह्रीं शमात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रगट 'प्रशमाकर' शमखानि हो।
जगत शांतिसुधा बरसावते ॥जजतहूँ०॥561॥

ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं.....।

'सरबयोगीश्वर' मुनि ईश हो।
गणधरादि नमावत शीश को ॥जजतहूँ०॥562॥

ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

भुवन में तुम ईश 'अचिन्त्य' हो।
नहिं किसी जन के मन चिन्त्य हो ॥जजतहूँ०॥563॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'श्रुतात्मा' सब श्रुत रूप हो।
सकल भाव श्रुतांबुधि चन्द्र हो ॥जजतहूँ० ॥564॥

ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं.....।

सकल जानत 'विष्टरश्रव' कहे।
धरम अमृतवृष्टि करो सदा ॥जजतहूँ०॥565॥

ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं.....।

वश किया मन 'दान्तात्मा' प्रभो।
सुतप क्लेश सहा जिन आपने ॥जजतहूँ० ॥566॥

ॐ ह्रीं दान्तात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम्हीं 'दमतीरथईश' हो।
सकल इन्द्रियनिग्रह तीर्थ हो ॥जजतहूँ०॥567॥

ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं.....।

सकल ध्यात सु 'योगात्मा' तुम्हीं।
शुकल योगधरा जिन आपने ॥जजतहूँ०॥568॥

ॐ ह्रीं योगात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु सदा तुम 'ज्ञानसुसर्वगा'।
जगत व्याप्त किया निज ज्ञान से ॥जजतहूँ० ॥569॥

ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'प्रधान' तुम्हीं त्रय लोक में।
प्रमुख हो निज आतम ध्यान से ॥जजतहूँ० ॥570॥

ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः अर्घ्यं.....।

तुमहि 'आत्मा' ज्ञान स्वरूप हो।
सकल लोक अलोक सुजानते ॥जजतहूँ० ॥571॥

ॐ ह्रीं आत्मने नमः अर्घ्यं.....।

'प्रकृति' हो तिहुँलोक हितैषि हो।
प्रकृतिरूप धरम उपदेशि हो ॥जजतहूँ०॥572॥

ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः अर्घ्यं.....।

'परम' हो सबमें उत्कृष्ट हो।
परम लक्ष्मीयुत जिनश्रेष्ठ हो ॥जजतहूँ०॥573॥

ॐ ह्रीं परमाय नमः अर्घ्यं.....।

जगत 'परमोदय' जिननाथ हो।
परम वैभव से तुम ख्यात हो ॥जजतहूँ०॥574॥

ॐ ह्रीं परमोदयाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' जिनेश हो।
सकल कर्म विहीन तुम्हीं कहे ॥जजतहूँ० ॥575॥

ॐ ह्रीं प्रक्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं.....।

मोतीदाम—छंद

प्रभो ! तुम 'कामारी' जग सिद्ध।
किया तुम काम महाअरि विद्ध॥
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्॥576॥

ॐ ह्रीं कामारये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुम 'क्षेमकृता' अभिराम।
जगत् कल्याण किया सुखधाम ॥जजूँ०॥577॥

ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो तुम 'क्षेमसुशासन' सिद्ध।
किया मंगल उपदेश समृद्ध ॥जजूँ०॥578॥

ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रणव' तुमही ओंकार स्वरूप।
सभी मंत्रों मधि शक्तिस्वरूप ॥जजूँ०॥579॥

ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रणय' सबका तुमही में प्रेम।
नहीं तुम बिन होता सुख क्षेम ॥जजूँ० ॥580॥

ॐ ह्रीं प्रणयाय नमः अर्घ्यं.....।

तुम्हीं प्रभु 'प्राण' जगत् के त्राण।
दिया सब ही को जीवन दान ॥जजूँ० ॥581॥

ॐ ह्रीं प्राणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुम 'प्राणद' बलदातार।
सभी जन रक्षक नाथ उदार ॥जजूँ० ॥582॥

ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'प्रणतेश्वर' भव्यन ईश।
नमें तुमको उनके प्रभु ईश ॥जजूँ० ॥583॥

ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

'प्रमाण' तुम्हीं जग ज्ञान धरंत।
तुम्हें भवि पा होते भगवंत ॥जजूँ० ॥584॥

ॐ ह्रीं प्रमाणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'प्रणिधी' निधियों के स्वामि।
अनंत गुणाकर अंतर्यामि ॥जजूँ० ॥585॥

ॐ ह्रीं प्रणिधये नमः अर्घ्यं.....।

तुम्हीं प्रभु 'दक्ष' समर्थ सदैव।
करो मुझ कर्म अरी का छेव ॥जजूँ० ॥586॥

ॐ ह्रीं दक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'दक्षिण' हो सर्व प्रवीण।
सरल अतिशायि महागुणलीन ॥जजूँ० ॥587॥

ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः अर्घ्यं.....।

तुम्हीं 'अध्वर्यु' सुयज्ञ करंत।
महा शिवमार्ग दिया भगवंत ॥जजूँ० ॥588॥

ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'अध्वर' शिवपथ दर्शंत।
सदा ऋजु ही परिणाम धरंत ॥जजूँ० ॥589॥

ॐ ह्रीं अध्वराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुमही 'आनंद' अनूप।
मुझे सुखदेव सदा सुखरूप ॥जजूँ० ॥590॥

ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः अर्घ्यं.....।

सदा सबको आनंद करंत।
तुम्हीं प्रभु 'नन्दन' नाम धरंत ॥जजूँ० ॥591॥

ॐ ह्रीं नन्दनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो तुम 'नन्द' समृद्ध निधान।
सदा करते तुम ज्ञान सुदान ॥जजूँ० ॥592॥

ॐ ह्रीं नंदाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो तुम 'वंद्य' सुरासुर पूज्य।
सभी वंदन करते अनुकूल्य ॥
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्॥593॥

ॐ ह्रीं वंद्याय नमः अर्घ्यं.....।

'अनिंद्य' तुम्हीं सब दोष विहीन।
अनंत गुणों के पुंज प्रवीण ॥जजूँ० ॥594॥

ॐ ह्रीं अनिंद्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'अभिनंदन' जग आनंद।
प्रशंसित हो त्रिभुवन में वंद्य ॥जजूँ० ॥595॥

ॐ ह्रीं अभिनंदनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुम 'कामह' काम हनंत।
विषयविषमूर्च्छित को सुखकंद ॥जजूँ० ॥596॥

ॐ ह्रीं कामघ्ने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो तुम 'कामद' हो जग इष्ट।
सभी अभिलाष करो तुम सिद्ध ॥जजूँ० ॥597॥

ॐ ह्रीं कामदाय नमः अर्घ्यं.....।

मनोहर 'काम्य' सभी जन इष्ट।
तुम्हें नित चाहत साधु गणीश ॥जजूँ० ॥598॥

ॐ ह्रीं काम्याय नमः अर्घ्यं.....।

मनोरथ पूरण 'कामसुधेनु'।
करो मुझ वांछित पूर्ण जिनेंद्र ॥जजूँ० ॥599॥

ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः अर्घ्यं.....।

'अरिंजय' आप करम अरि जीत।
हरो मुझ कर्म तुम्हीं जगमीत ॥जजूँ० ॥600॥

ॐ ह्रीं अरिंजयाय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य—शंभु छन्द

प्रभु महामुनी से ले करके सौ नाम तुम्हारे जग पूजें।
जो भक्ति वंदना नित्य करें वो भव भव के दुख से छूटें ॥

मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके मेरी भव भव की व्याधि हरो।
प्रभु सात परम स्थान देय, जिनगुण संपत्ती पूर्ण करो ॥6॥

ॐ ह्रीं महामुनिआदिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलि

जाप्य

—ॐ ह्रीं अष्टोत्तर सहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

परम चिदंबर चित्पुरुष, चिच्चिंतामणि देव।
गाऊँ तुम गुणमालिका, करूँ सतत तुम सेव ॥1॥

रोला छंद

जय जय श्री जिनदेव, विषय कषाय विजेता।
जय जय तुम पद सेव करते श्रुत के वेत्ता॥
प्रभु तुमने छह द्रव्य, गुणपर्याय समेता।
दिव्यज्ञान से देख, बतलाते शिवनेता॥2॥
जीव तत्त्व हैं तीन, भेद कहे शुभ कामा।
बहिरातम अंतर आतम औ परमात्मा॥
प्रभु मैं दीन अनाथ, मैं दुखिया संसारी।
जन्म मरण के दुःख, मैं भरता अतिभारी॥3॥
मेरा होवे जन्म, मेरा ही मरणा हो।
मुझ में इष्ट वियोग, आदिक दुख भरना हो ॥
मेरे धन जन मित्र, ये परिवार घनेरे।
मैं इनका प्रतिपाल, ये सब हैं नित मेरे ॥4॥

यह बहिरात्म स्वरूप, दर्शन मोह जनित है।
इसके वश हे नाथ ! मैं दुख सह्य अधिक है ॥
निश्चय से मैं एक चिच्चैतन्य स्वरूपी।
परमानंद स्वरूप अविचल अमल अरूपी ॥5॥
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, सिद्ध स्वरूप हमारा।
कर्मकलंक विहीन, सकल जगत् से न्यारा ॥
ये वर्णादिक रूप, पुद्गल के गुण मानें।
रागादिक भी भाव, औपाधिक ही मानें ॥6॥
क्षायोपशमिक सुज्ञान, वे भी कर्म जनित हैं।
परम शुद्ध चिद्भाव, मेरा ज्ञान अमित है ॥
मैं भगवान स्वरूप, जनम मरण विरहित हूँ।
चिन्मय ज्योति स्वरूप, केवलज्ञान सहित हूँ ॥7॥
टंकोत्कीर्ण सुएक, ज्ञायक भाव हमारा।
सब प्रदेश में व्याप्त, सब कुछ जानन हारा ॥
यद्यपि मैं व्यवहार, नय से कर्म सहित हूँ।
जनम मरण दुख पूर्ण, नाना व्याधि सहित हूँ ॥8॥
फिर भी निश्चय नीति, तत्त्व स्वरूप प्रकाशे।
नय व्यवहार सदैव, धर्म तीर्थ को भाषे ॥
दोनों नय सापेक्ष, वस्तु स्वरूप बतावें।
सम्यग्दृष्टी जीव, द्वय नय आश्रय पावें ॥9॥
अविरित सम्यग्दृष्टि, जघन्य अन्तर आत्मा।
पंचम से ग्यारंत, मध्यम अंतर आत्मा ॥
बारहवें गुणस्थान, मुनिवर क्षीणकषायी।
उत्तम अंतर आत्म, जड़ से मोह नशायी ॥10॥
श्री अर्हंत जिनेन्द्र, कहें सकल परमात्मा।
नित्य निरंजन सिद्ध, रहें निकल परमात्मा ॥
इस विध जीव सुतत्त्व, बाकी पाँच अजीवा।
पुद्गल धर्म अधर्म, नभ औ काल सदीवा ॥11॥

करिए कृपा जिनेंद्र ! बहिरात्मत्व तजूँ मैं।
अंतर आतम होय, पद परमात्म भजूँ मैं॥
जब तक निज पद नाहिं, तब तक भक्ति तुम्हारी।
अचल रहे हे नाथ ! कभी न होऊं दुखारी॥12॥

घत्ता

श्री जिनपद प्रीती, अविचलरीती, जो जन मन वच तन करहीं।
सो 'ज्ञानमती' से, स्वगुणरती से, निजगुण संपत्ती वरहीं ॥13॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां महामुन्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता–छंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ति से करें।
वे पाप कर्म सहस्र नाशें सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें॥1॥

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं० ८

स्थापना-गीताछंद

जो गणधरों से वंद्य हैं बारह सभा के नाथ हैं।
निज भक्त को संसार में करते सदैव सनाथ हैं ॥
उन तीर्थकर जिनदेव को मैं आज पूजूं भाव से।
निज आत्म निधि की प्राप्ति हो अतएव थापूं चाव से ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह !
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—चाल—नंदीश्वर पूजा,

यमुना नदि का शुचिनीर, झारी पूर्ण भरूं।
मैं पाऊं भवदधि तीर, तुम पद धार करूं ॥
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूं मैं संप्रति ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं....

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे ॥तीर्थं० ॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदन.....।

मोतीसम अक्षत लाय, पुंज चढ़ाऊं मैं।
निज अक्षयपद को पाय, यहाँ न आऊं मैं ॥तीर्थं० ॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं....।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊं।
अर्पूं जिनवर चरणाब्ज, निजसुखयश पाऊं ॥तीर्थं० ॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊं।
हो क्षुधा वेदना दूर, अर्पत सुख पाऊं ॥तीर्थं० ॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोहतिमिर हर ज्योति, ज्ञानउद्योत करे ॥तीर्थं० ॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

दशगंध सुगंधित धूप, खेऊं अगनी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में ॥तीर्थं० ॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली ॥तीर्थं० ॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

जल आदिक अर्घ्य बनाय उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊं सिद्ध शिला ॥तीर्थं० ॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

सुवरण झारी में भरूं, गंगा नदि को नीर।
शांती धारा मैं करूं, मिले भवोदधि तीर ॥10॥

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला बकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्म सुख लाभ ॥11॥

दिव्यपुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्यं

दोहा

परमानंद पियूष घन, वर्षा करें जिनंद।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सर्वसुखकंद ॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भुजंगी-छन्द

'असंस्कृतसुसंस्कार' नामा तुम्हीं।
बिना संस्कारे सुसंस्कृत तुम्हीं॥
जजूँ नाम मंत्रावली भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से॥601॥

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घ्यं.....।

'अप्राकृत'[1] तुम्हीं तो स्वभावीक हो।
धरा अष्ट में वर्ष व्रत देश को ॥जजूँ० ॥602॥

ॐ ह्रीं अप्राकृताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'वैकृतांतकृत', आपही।
विकारादि दोषा विनाशा तुम्हीं ॥जजूँ०॥603॥

ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः अर्घ्यं.....।

---

1. प्राकृत है आदि पु० में हैं।

प्रभो ! 'अंतकृत' दुःख को नाशिया।
जनम मृत्यु का भी समापन किया ॥
जजूँ नाम मंत्रावली भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से ॥604॥

ॐ ह्रीं अंतकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'कांतगू' श्रेष्ठ वाणी धरो।
मुझे हो वचोसिद्धि ऐसा करो ॥जजूँ० ॥605॥

ॐ ह्रीं कांतगवे नमः अर्घ्यं.....।

महारम्य सुंदर प्रभो ! 'कांत' हो।
त्रिलोकीपती साधु में मान्य हो ॥जजूँ० ॥606॥

ॐ ह्रीं कांताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप 'चिंतामणी' रत्न हो।
सभी इच्छती वस्तु देते सदा ॥जजूँ०॥607॥

ॐ ह्रीं चिन्तामणये नमः अर्घ्यं.....।

'अभीष्टद' अभीप्सित लहें भक्त ही।
मुझे दीजिये नाथ ! मुक्ती मही ॥जजूँ० ॥608॥

ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं.....।

न जीते गये हो 'अजित' आप हो।
प्रभो ! मोह जीतूँ यही शक्ति दो ॥जजूँ० ॥609॥

ॐ ह्रीं अजिताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप 'जितकामअरि' लोक में।
विषय काम क्रोधादि जीता तुम्हीं ॥जजूँ० ॥610॥

ॐ ह्रीं जितकामारये नमः अर्घ्यं.....।

'अमित' माप होता नहीं आपका।
अनंते गुणों की खनी आप हो ॥जजूँ०॥ 611॥

ॐ ह्रीं अमिताय नमः अर्घ्यं.....।

'अमितशासना' धर्म अनुपम कहा।
मुझे आप सम नाथ कीजे अबे ॥जजूँ० ॥612॥

ॐ ह्रीं अमितशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

'जितक्रोध' हो आप शांती सुधा।
महा शांति से क्रोध जीता सभी ॥जजूँ० ॥613॥

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं.....।

'जितामित्र' कोई न शत्रू रहा।
प्रभो ! आप ही सर्व प्रिय लोक में ॥जजूँ० ॥614॥

ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः अर्घ्यं.....।

'जितक्लेश' सब क्लेश जीता तुम्हीं।
सभी क्लेश मेरे निवारो अबे ॥जजूँ० ॥615॥

ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं.....।

'जितांतक प्रभो ! मृत्यु को नाशिया।
समाधी मिले अंत में भी मुझे ॥जजूँ० ॥616॥

ॐ ह्रीं जितांतकाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप 'जिनेंद्र' हो विश्व में।
तुम्हीं श्रेष्ठ हो कर्मजयि साधु में ॥जजूँ० ॥617॥

ॐ ह्रीं जिनेंद्राय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो आप ही 'परमआनंद' हो।
मुझे आत्म आनंद दीजे, अबे ॥जजूँ० ॥618॥

ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप 'मूनींद्र' हो लोक में।
मुनीनाथ मानें नमें साधु भी ॥जजूँ० ॥619॥

ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'दुंदुभीस्वन' ध्वनी आपकी।
सुगंभीर दुंदुभि सदृश ही खिरे ॥जजूँ० ॥620॥

ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं.....।

'महेन्द्रासुवंद्या' प्रभो आपही।
सभी इंद्र से वंद्य हो पूज्य हो ॥जजूँ० ॥621॥

ॐ ह्रीं महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप -'योगीन्द्र' हो विश्व में।
सभी ध्यानियों में तुम्हीं श्रेष्ठ हो ॥
जजूँ नाम मंत्रावली भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से॥622॥

ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुम 'यतीन्द्रा' मुनी साधु में।
सदा श्रेष्ठ मानें गणाधीश में ॥जजूँ०॥623॥

ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'नाभिनंदन' तुम्हीं मान्य हो।
नृपति नाभि के पुत्र विख्यात हो॥जजूँ०॥624॥

ॐ ह्रीं नाभिनंदनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! आप 'नाभेय' हो पूज्य हो।
महानाभिराज़ा से उत्पन्न हो ॥जजूँ०॥625॥

ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः अर्घ्यं.....।

नाराच–छन्द

जिनेंद्र ! आप 'नाभिजा' शतेंद्रवृन्द पूज्य हो।
त्रिलोक में महान् हो सभासरोज सूर्य हो ॥
मुनीन्द्र आप नाममंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं ॥626॥

ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः अर्घ्यं.....।

'अजात' हो जिनेश ! जन्मशून्य आप सिद्ध हो।
मुझे प्रभो ! भवाब्धि से निकालिये समर्थ हो ॥मुनीन्द्र० ॥627॥

ॐ ह्रीं अजाताय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश ! 'सुव्रत' आप श्रेष्ठ संयमादि धारियो।
महाव्रतादि पूर्ण कीजिये मुझे सुतारियो ॥मुनीन्द्र० ॥628॥

ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः अर्घ्यं.....।

तुम्हीं 'मनू' समस्त कर्मभूमि का सुथापिया।
कुलंकरों से जन्म लेय तीर्थ चक्र धारिया ॥मुनीन्द्र० ॥629॥

ॐ ह्रीं मनवे नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश ! 'उत्तमा' त्रिलोक में महान श्रेष्ठ हो।
मुनीशवृन्द पूज्य हो असंख्य जीव ज्येष्ठ हो ॥मुनीन्द्र० ॥630॥

ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः अर्घ्यं.....।

'अभेद्य' हो किन्हीं जनों से छेद भेद योग्य ना।
समस्त जन्म मृत्यु रोग नाश के सुखी घना ॥मुनीन्द्र० ॥631॥

ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः अर्घ्यं.....।

'अनत्ययो' न नाश हो अनंत काल आपका।
मुझे सुखी सदा करो न अंत हो सुज्ञान का ॥मुनीन्द्र० ॥632॥

ॐ ह्रीं अनत्ययाय नमः अर्घ्यं.....।

'अनाशवान्' भोजनादि से विहीन आप हैं।
महान तप किया प्रभो समस्त वीश्वास्य हैं ॥मुनीन्द्र० ॥633॥

ॐ ह्रीं अनाश्वते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'अधीक' उत्कृष्ट आत्मा तुम्हीं कहे।
सुपाय वास्तवीक सौख्य को 'अधिक' तुम्हीं रहे ॥मुनीन्द्र० ॥634॥

ॐ ह्रीं अधिकाय नमः अर्घ्यं.....।

त्रिलोक के गुरु 'अधीगुरु' तुम्हीं महान हो।
नमाय माथ को सदा सुआप को प्रणाम हो ॥मुनीन्द्र० ॥635॥

ॐ ह्रीं अधिगुरवे नमः अर्घ्यं.....।

'सुगी' सुवाणि आपकी अतीव शोभना कही।
अनंत दुःख से निकाल मोक्ष में धरे वही ॥मुनीन्द्र० ॥636॥

ॐ ह्रीं सुगिरे नमः अर्घ्यं.....।

'सुमेधसा' महान् बुद्धि से सुकेवली भये।
प्रभो ! अपूर्व ज्ञान दो अनंत गुण मिले भये ॥मुनीन्द्र० ॥337॥

ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः अर्घ्यं.....।

पराक्रमी समस्त कर्म नाशहेतु शूर हो।
अतेव 'विक्रमी' कहावते अपूर्व सूर्य हो ॥मुनीन्द्र० ॥338॥

ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः अर्घ्यं.....।

त्रिलोक 'स्वामि' हो समस्त भव्य जीव पालते।
अनंत धाम में धरो भवाब्धि से निकालते ॥
मुनीन्द्र आप नाममंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं॥339॥

ॐ ह्रीं स्वामिने नमः अर्घ्यं.....।

'दुरादिधर्ष' कोई ना अनादरादि कर सके।
प्रभो ! तुम्हीं समस्त भव्य बन्धु हो जगत् विषे ॥मुनीन्द्र० ॥640॥

ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'निरुत्सुको' तुम्हीं समस्त आश शून्य हो।
सुमुक्तिवल्लभा विषे हि औत्सुक्य पूर्ण हो ॥मुनीन्द्र० ॥641॥

ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं.....।

'विशिष्ट' आपही विशेषरूप श्रेष्ठ विश्व में।
गणीन्द्र शीश नावते न फेर विश्व में भ्रमें ॥मुनीन्द्र० ॥642॥

ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश ! 'शिष्टभुक्' तुम्हीं सुसाधुलोक पालते।
अनिष्ट को निकाल सत्य ज्ञान रूप धारते ॥मुनीन्द्र० ॥643॥

ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश 'शिष्ट' श्रेष्ट आचरण तुम्हीं धरा यहाँ।
अशेष मोहशत्रु नाश के अनिष्ट को दहा ॥मुनीन्द्र० ॥644॥

ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश ! 'प्रत्ययो' प्रतीति योग्य आप एकही।
समस्त ज्ञानरूप हो पुनीत पुण्यरूप ही ॥मुनीन्द्र० ॥645॥

ॐ ह्रीं प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं.....।

सुरम्य 'कामनो' प्रभो ! त्रिलोक चित्तहारि हो।
न आपके समान रूप इंद्र नेत्रहारि हो ॥मुनीन्द्र० ॥646॥

ॐ ह्रीं कामनाय नमः अर्घ्यं.....।

'अनघ' जिनेश ! पापहीन पुण्य के निधान हो।
अनंत जीवराशि आपको नमें प्रमाण हो ॥मुनीन्द्र० ॥647॥

ॐ ह्रीं अनघाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! 'क्षेमि' सर्वक्षेम युक्त आप विश्व में।
समस्त रोग शोक दुःख मेट दो तुम्हें नमें ॥मुनीन्द्र० ॥648॥

ॐ ह्रीं क्षेमिणे नमः अर्घ्यं.....।

जिनेन्द्र ! 'क्षेमंकरो' त्रिलोक क्षेमकारि हो।
दरिद्र दुःख मेट सौख्य दो सदैव भारि हो ॥मुनीन्द्र० ॥649॥

ॐ ह्रीं क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! 'अक्षयो' तुम्हीं सदैव क्षय विहीन हो।
मुझे अखंडधाम दो सदा स्वयं अधीन जो ॥मुनीन्द्र० ॥650॥

ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं.....।

श्री छन्द

'क्षेमधरमपति' क्षेम करो हो, सर्व अमंगल दोष हरो हो।
आप सुनाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके ॥651॥

ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं.....।

आप 'क्षमी' सुसहिष्णु कहे हो। श्रेष्ठ क्षमा उपदेश रहे हो ॥आप०॥652॥

ॐ ह्रीं क्षमिने नमः अर्घ्यं.....।

आप जिनेश ! 'अग्राह्य' कहाते। अल्प सुज्ञानी जान न पाते ॥आप०॥653॥

ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः अर्घ्यं.....।

'ज्ञान निग्राह्य' प्रभो ! जग में हो। ज्ञान स्वसंविद से ग्रह ही हो ॥आप०॥654॥

ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय नमः अर्घ्यं.....।

'ज्ञानसुगम्य' सुध्यान करें जो। नाथ तभी तुम जान सके वो ॥आप० ॥655॥

ॐ ह्रीं ज्ञानगम्याय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'निरुत्तर आप कहे हो। सर्व जगत् उत्कृष्ट भये हो ॥आप० ॥656॥

ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'सुकृती' तुम पुण्य धरन्ता। पुण्य करें जन भक्ति करन्ता ॥आप० ॥657॥

ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः अर्घ्यं.....।

'धातु' तुम्हीं सब शब्द जनंता। चिन्मय धातु तनू भगवंता ॥आप० ॥658॥

ॐ ह्रीं धातवे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! तुम्हीं 'इज्यार्ह' कहाये। इन्द्र मुनी गण पूज्य सुगाय।
आप सुनाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके॥659॥

ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'सुनय' सहपेक्ष नयों से। सत्य सुधर्म कहा अति नीके ॥आप०॥660॥

ॐ ह्रीं सुनयाय नमः अर्घ्यं.....।

'श्रीसुनिवास' तुम्हीं प्रभु माने। सम्पति धाम तुम्हें मुनि जाने ॥आप०॥661॥

ॐ ह्रीं श्रीसुनिवासाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! तुम्हीं 'चतुरानन' ब्रह्मा। दीख रहे मुख चार सभा मा ॥आप० ॥662॥

ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः अर्घ्यं.....।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर पेखे। नाथ ! समोसृति में तुम देखें ॥आप० ॥663॥

ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'चतुरास्य' तुम्हें भवि वंदे। जन्म जरामृति तीनहिं खंडे ॥आप० ॥664॥

ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'चतुर्मुख' चौमुख धर्ता। द्वादश गण जनता मन हर्ता ॥आप० ॥665॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं.....।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी। दिव्य ध्वनी मय वाक्य निरूपी ॥आप०॥666॥

ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः अर्घ्यं.....।

'सत्यविज्ञान' प्रभो ! तुम ही हो। केवलज्ञान लिये चिन्मय हो ॥आप०॥667॥

ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः अर्घ्यं.....।

'सत्यसुवाक्' प्रभो सत भंगी। वाक्ससुधा तुम गंगतरंगी ॥आप० ॥668॥

ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः अर्घ्यं.....।

'सत्यसुशासन' नाथ तुम्हारा। भव्य जनों हित एक सहारा ॥आप० ॥669॥

ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

'सत्याशिष्' शुभ आशिस् देते। सर्व अमंगल भी हर लेते ॥आप० ॥670॥

ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः अर्घ्यं.....।

'सत्यसुसन्धान' सुविभु नामा। सत्य प्रतिज्ञ तुम्हें सुर मांना ॥आप० ॥671॥

ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय नमः अर्घ्यं.....।

'सत्य' प्रभो ! तुम सत्पथदर्शी। भव्य जनों हित वाक्य प्रदर्शी ॥आप०॥672॥

ॐ ह्रीं सत्याय नमः अर्घ्यं.....।

'सत्यपरायण' नाथ ! हितैषी। तीन जगत के हित उपदेशी ॥आप० ॥673॥

ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः अर्घ्यं.....।

'स्थेयान्' प्रभु नित स्थिर हो। नाथ ! मुझ स्थिर धाम दिला दो ॥आप०॥674॥

ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः अर्घ्यं.....।

'स्थवीयान्' प्रभु आप बड़े हो। सर्व गणी गण में भि बड़े हो ॥आप० ॥675॥

ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः अर्घ्यं.....।

तोटक छंद

प्रभु 'नेदिययान' निज भक्तन के। अति सन्निधि हो मन में बसते।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही। भव वारिध पार करो अब ही॥676॥

ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'दवीयान्' पाप हना। निज आत्म सुधारस पीय घना ॥तुम०॥677॥

ॐ ह्रीं दवीयसे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'दूरसुदर्शन' हो तुम ही। अणुरूप नहीं मुनि के मन ही ॥तुम०॥678॥

ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः अर्घ्यं.....।

तुम नाथ ! 'अणोरणियान्' कह्यो। अति सूक्षम योगि सुगोचर हो ॥तुम० ॥679॥

ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः अर्घ्यं.....।

'अनणू' तुम ज्ञान शरीर कहे। अणु-पुद्गल नाहिं महान् कहें ॥तुम०॥680॥

ॐ ह्रीं अनणवे नमः अर्घ्यं.....।

'गुरुराद्यगरीयस' के जग में। गुरुओं मधि श्रेष्ठ गुरु प्रभु हैं ॥तुम०॥681॥

ॐ ह्रीं गरीयसमाद्यगुरवे नमः अर्घ्यं.....।

'सदयोग' सदा तुम योग धरा। सब योगि सदा तुम ध्यान धरा ॥तुम०॥682॥

ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः अर्घ्यं.....।

'सदभोग' सुपुष्प सदा बरसें। सुर दुंदुभि आदि करें हरसें ॥तुम०॥683॥

ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः अर्घ्यं.....।

'सदतृप्त' सदाप्रभु तृप्त रहो।क्षुध प्यास नहीं प्रभु तुष्ट रहो।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही। भव वारिध पार करो अब ही॥684॥
ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सदाशिव' हो जग में। नहिं कर्म कलंक छुआ तुमने ॥तुम०॥685॥
ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सदागति ज्ञानमयी। गति पंचम मोक्ष लिया तुमही ॥तुम०॥686॥
ॐ ह्रीं सदागतये नमः अर्घ्यं.....।

'सदसौख्य' सदा प्रभु सौख्य लह्यो। सब सात असात सुखादि हर्‌यो ॥तुम०॥687॥
ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सदाविद्य' हो जगमें। शुचि केवलज्ञान धरो निज में ॥तुम० ॥688॥
ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः अर्घ्यं.....।

जिननाथ ! 'सदोदय' आप रहें। नित उदितरूप रवि आप कहें ॥तुम० ॥689॥
ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः अर्घ्यं.....।

ध्वनि उत्तम नाथ ! 'सुघोष' तुम्हीं। इक योजन जीव सुनें सबहीं ॥तुम०॥690॥
ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सुमुख' सुंदर मुख हो। विकसंत कमल मंदस्मित हो ॥तुम०॥691॥
ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सौम्य' तुम्हीं शशि सुंदर हो। तुम गावत गीत पुरंदर हो ॥तुम० ॥692॥
ॐ ह्रीं सौम्याय नमः अर्घ्यं.....।

'सुखदं' सब जीव शुभंकर हो। सुखदायि जिनेश्वर आपहि हो ॥तुम० ॥693॥
ॐ ह्रीं सुखदाय नमः अर्घ्यं.....।

'सुहितं' प्रभु सर्वहितंकर हो। मुझको निज दास करो शिव हो ॥तुम० ॥694॥
ॐ ह्रीं सुहिताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सुहृत्' सबके मितु हो। मुझ चित्त वसो सबही वश हों ॥तुम० ॥695॥
ॐ ह्रीं सुहृदे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सुगुप्त' सुरक्षित हो। तुम भक्त सभी अरि रक्षित हों ॥तुम० ॥696॥
ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'गुप्तिभृता' त्रयगुप्ति धरी। तुम भक्ति किया मुझ धन्य घरी ॥तुम० ॥697॥

ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'गोप्ता' रक्षक हो जग के। मुझ पे अब नाथ कृपा कर दे ॥तुम० ॥698॥

ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'लोकअध्यक्ष' त्रिलोकपती। मुझ व्याधि उपाधि हरो जलदी ॥तुम० ॥699॥

ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'दमेश्वर' हो नित ही। सब इंद्रिय जीत अतीन्द्रिय ही ॥तुम०॥700॥

ॐ ह्रीं दमेश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य—शंभु छंद

प्रभु असंस्कृतादि से लेकर सौ नाम पढ़े जो भव्य सदा।
सब भूत पिशाच उपद्रव भी नश जांय सभी नशती विपदा ॥
ज्वर कुष्ठ भगंदर कामल आदिक रोग सभी नशते क्षण में।
पूर्णार्घ चढ़ाकर वंदत हूँ प्रभु आप बसो नित मुझ मन में ॥7॥

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य—ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

तीन लोक में श्रेष्ठतम, जिनवर विभव प्रधान।
प्रातिहार्य की संपदा, तीर्थंकर पहिचान ॥1॥

पंचचामर—छंद

अशोक वृक्ष रत्नकाय चित्रवर्ण का धरे।
हरितमणी की पत्तियाँ हवा लगे हि थरहरें ॥
नवीन कोपलों समेत राग को स्वयं धरे।
तथापि भक्त के समस्त राग भाव को हरे ॥2॥

सुपूर्णचन्द्र के समान तीन छत्र शोभते।
अनेक मोतियों समेत भव्य चित्त मोहते ॥
जिनेन्द्र के त्रिलोक ऐश्वर्य को बतावते।
भवाग्नि ताप भव्य जीव का सभी नशावते ॥3॥
अनेक रत्न के समूह युक्त सिंह पीठ है।
सफेद सुस्फटीकरत्न से बना प्रसिद्ध है ॥
अपूर्व पद्म पे अधर जिनेंद्र देव राजते।
नमो नमो पदारविंद सर्व पाप नाशते ॥4॥
प्रगाढ़ भक्ति से समस्त भव्य मोद से भरे।
स्वहस्त जोड़ आपके सभी तरफ रहें घिरे ॥
सुधा झरी ध्वनी सुने स्वकर्म कालिमा हरें।
शनैः शनैः निजात्म ध्याय सिद्धि कन्यका वरें ॥5॥
विषय कषाय शून्य नाथ पाद शर्ण आइये।
अनंत जन्म के समस्त कर्म को नशाइये ॥
इतीव सूचना करंत देव दुंदुभी बजे।
सुभव्यजीव कर्ण से सुने प्रमोद को भजें ॥6॥
अनेक देव भक्ति से सुपुष्प वृष्टि को करें।
समस्त पुष्प वृंत को अधो किये धरा गिरे ॥
खिले खिले सुवर्ण पुष्प हर्ष को बढ़ावते।
सुदेख देख भक्त वृंद, पुण्य को बढ़ावते ॥7॥
प्रभासुचक्र नाथ आप ज्योतिपुंज रूप हैं।
अनेक सूर्य कोटि की प्रभा हरे अनूप हैं ॥
सुभव्य को सदैव सात भव दिखावता रहे।
जिनेंद्र का अपूर्व तेज नित्य पावता रहे ॥8॥
सुकुंद पुष्प के समान श्वेत चामरों लिऐ।
सुयक्षदेव ढोरते अतुल्य भक्ति को लिये ॥
चंवर सदैव ऊर्ध्व जाय भव्य सूचना करें।
जिनेंद्र भक्त नित्य एक ऊर्ध्व ही गती धरें ॥9॥

सुआठ प्रतिहार्य औ अनंत विभव धारते।
स्वभक्त को भवाब्धि से तुरन्त आप तारते ॥
सुनी सुकीर्ति आपकी इसीलिए खड़ा यहाँ।
बस एक आश पूरिये न आवना हो फिर यहाँ ॥10॥

दोहा

स्वात्म सौख्य पीयूष रस, निर्झरणी वच आप।
'ज्ञानमती' सुख पूरिये, मिटे सकल संताप ॥11॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं ... ।

शान्तये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पाप कर्म सहस्र नाशें सहस मंगल विस्तरें ॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें ॥1॥

इत्याशीर्वादः

पूजा नं० 9

स्थापना-शंभुछंद

त्रिभुवन के ज्ञाता मोक्षमार्ग के नेता तीर्थंकर होते।
ये कर्मभूमिभृत् के भेत्ता, सब राग द्वेष विरहित होते ॥
सर्वज्ञ वीतरागी हित के उपदेशी प्रभु त्रिभुवन गुरु हैं।
आह्वानन कर मैं नित पूजूं, ये सर्व हितंकर जिनवर हैं ॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद् वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर

अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो

भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक-नाराचछंद

श्री जिनेंद्र की ध्वनी समान स्वच्छ नीर है।
तीन धार देत ही मिले भवाब्धि तीर है ॥
आप नाम मंत्र को जजूं स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

नाथ के प्रतापसम सुगंध गंध सार है।
चर्ण में चढ़ावते मिले समस्त सार है ॥आप०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं.....।

धौत शालिनाथ कीर्ति के समान श्वेत है।
पूर्ण सौख्य हेतु पुंज शोभते विशेष है ॥आप०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

कुंद केतकी गुलाब गंध से भरे खिले।
आप पादपद्म अर्च ज्ञान कौमुदी खिले ॥आप०॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं .....।

मिष्ट मालपूप आदि स्वर्ण थाल में भरें।
स्वात्म सौख्य हेतु नाथ आप पास में धरें ॥आप०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

रत्नदीप लेय के जिनेश आरती करूं।
मोहध्वांत को निवार, ज्ञानभारती वरूं ॥आप०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

श्वेत चंदनादि धूप अग्निपात्र में जले।
अष्ट कर्म नष्ट हेतु आत्म स्वच्छता मिले ॥आप०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

सेव आम दाडिमादि थाल में भरायके।
मुक्ति अंगना वरूं सु आप को चढ़ाय के ॥आप०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

अष्ट द्रव्य में मिलाय रत्न अर्घ्य को लिया।
भेद औ अभेद तीन रत्न हेतु अर्घिया ॥आप०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थकराणां बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा

जिनपद में धारा करूं, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेत ॥10॥
शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार ॥11॥
दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

समवसरण प्रभु आप, त्रिभुवन की लक्ष्मी धरे।
पूजूं तुम चरणाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूं ॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल पूजों पूंजों श्री०.....

'वृहद्वृहस्पति' प्रभु नाम है। सुरपति के गुरू सरनाम हैं।
पूजते ही मिले मोक्ष धाम है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा.
सर्व कर्मों का होवे खातमा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नितही ॥701॥

ॐ ह्रीं बृहद्वृहस्पतये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'वाग्मी' तुम्हीं त्रिभुवन में। शुभवचन द्वादशों गण में
पूजते पाप नश जाय क्षण में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही॥
आवो पूजें० ॥702॥

ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'वाचस्पती' आप जग में। वचनों के स्वामि सहज में।
नाम लेते मिले शांति मन में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही॥
आवो पूजें० ॥703॥

प्रभु 'वाचस्पतये नमः अर्घ्यं.....।

तुम नाम 'उदारधी' है। ज्ञानदान का मूल वही है।
पूजते आप सुख की मही हैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही॥
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नितही ॥704॥

ॐ ह्रीं उदारधिये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'मनीषी कहाये। केवलज्ञान सद्बुद्धि पाये।
शत इंद्र सदा गुण गायें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो पूजें० ॥705॥

ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः अर्घ्यं.....।

आपको ही 'धिषण' साधु कहते। सर्वज्ञानैक बुद्धी धरते।
भक्त पूजत स्वपर ज्ञान लहते। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही॥
आवो० ॥706॥

ॐ ह्रीं धिषणाय नमः अर्घ्यं....।

आप 'धीमान्' त्रैलोक्य में हैं। ज्ञान पंचम धरें श्रेष्ठ ही हैं।
भक्त भी स्वात्म ज्ञानी बने हैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही॥
आवो० ॥707॥

ॐ ह्रीं धीमते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'शेमुषीश' आप ही हैं। सर्व ही ज्ञान के नाथ ही हैं।
दीजिये अब मुझे सुमती है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥708॥

ॐ ह्रीं शेमुषीशाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'गिरांपति' जग में। सर्वभाषामयी ध्वनि भवि में।
हो सत्य महाव्रत मुझमें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥709॥

ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः अर्घ्यं.....।

आप 'नैकरूप' मुनिगण में। विष्णु ब्रह्म महेश्वर सच में।
भक्त नाशें करमरिपु क्षण में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥710॥

ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'नयोत्तुंग' मानें। सब नयों से श्रेष्ठ बखानें।
मन अनेकांत सरधाने। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥711॥

ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं.....।

'नैकात्मा' तुम्हीं त्रिभुवन में। गुण बहुते धरें प्रभु निजमें।
गुणपूर्ण भरूँ मैं निजमें। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥
आवो पूजें० ॥712॥

ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'नैकधर्मकृत्' तुम हो। बहुधर्म वस्तु के कहहो।
निजधर्म अनंत मुझे हों। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥713॥

ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'अविज्ञेय' ही हो। जन जानन योग्य नहीं हो।
मुझ आत्म स्वभाव प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥

ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'अप्रतक्र्यात्मा'। न तर्कादि गोचर महात्मा।
मुझे कीजे तुरत अंतरात्मा। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥715॥

ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'कृतज्ञ' कहे हो। सभी कृत्य तुम्हीं जानते हो।
नाथ ! मुझमें यही गुण प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही॥
आवो० ॥716॥

ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

'कृतलक्षण' आप भुवन में। वस्तु लक्षण कहते हो ध्वनि में।
मैं धारूँ सुलक्षण हृदय में। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥717॥

ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'ज्ञानगर्भ' तुमही हो। सब ज्ञेय सुज्ञान मही हो।
मेरा भी ज्ञान सही हो। सुनाम मंत्र अर्घन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥718॥

ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'दयागर्भ' त्रिभुवन में। तुम दयासिंधु भविजन में।
मैं धरूँ दया निजपर में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही॥
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नितही ॥719॥

ॐ ह्रीं दयागर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'रत्नगर्भ' मुनिनाथा। रत्न वर्षे पंचदश मासा।
मैं नमूँ नमाकर माथा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥720॥

ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'प्रभास्वर' ही हो। त्रैलोक्य प्रकाशि रवी हो।
मुझ हृदय ज्ञान ज्योती हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥721॥

ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'पद्मगर्भ' तुम सच में। रहे कमलाकार गरभ में।
लहूँ गर्भ प्रभो ! तुम सम मैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥722॥

ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'जगद्गर्भ' तुम भासें। तुम ज्ञान में जग प्रतिभासे।
हो ज्ञान मेरा तम नाशे। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥723॥

ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'हेमगर्भ' तुम ही हो। गर्भ बसत स्वर्णमय भू हो।
मुझ रोग शोक हर तुम हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।
आवो० ॥724॥

ॐ ह्रीं हेमगर्भाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'सुदर्शन' मानें। तुम दर्शन सुखकर जानें।
पूजत सब संकट हानें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही ॥
आवो० ॥725॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रहरनकलिका-छंद

प्रभु तुम 'लक्ष्मीवन्' भुवि गुरु हो। अन्तर बहि संपद धर जिन हो।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो। दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो ॥726॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'त्रिदशअध्यक्ष' सुर गणपति हो। त्रिभुवन धन भानु अतुल रवि हो।तुम०॥727॥

ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु अतुल 'द्रढ़ीयन्' इस जग में। नहिं तुम सम हो दृढ़ मुनि जग में ।।तुम०॥728॥

ॐ ह्रीं द्रढ़ीयसे नमः अर्घ्यं.....।

सब त्रिभुवन ईश तुमहि 'इन' हो। मुझ सब अघ नाशत सुखप्रद हो ॥तुम०॥729॥

ॐ ह्रीं इनाय नमः अर्घ्यं.....!

समरथयुत 'ईशित' तुमहि कहे। मुझ अहित निवारण तुम पद हैं ॥तुम०॥730॥

ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमहि 'मनोहर' त्रिभुवन में। हरि हर परब्रह्म न तुम सम हैं ॥तुम०॥731॥

ॐ ह्रीं मनोहराय नमः अर्घ्यं.....।

तनु सुभग 'मनोज्ञांग' अतिशय ही। भवि जपत तुम्हें दुख विनशत ही ॥तुम०॥732॥

ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं.....।

अतिशय धृति 'धीर' भविक गण में। तुम जपत हि पीर टरत क्षण में ॥तुम०॥733॥

ॐ ह्रीं धीराय नमः अर्घ्यं.....।

अतिशय 'गम्भीर शासन' जग में शिवपद कर धर्म शरण जग में ॥तुम०॥734॥

ॐ ह्रीं गम्भीरशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

अभय 'धरमयूप' शुभ धरम हो। सुर सुखप्रद नाथ ! मुकति गृह हो ॥तुम०॥735॥

ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमहि 'दयायाग' सुखप्रद हो। सब अशुभ हरो सुअभयप्रद हो ॥तुम०॥736॥

ॐ ह्रीं दयायागाय नमः अर्घ्यं.....।

सुखद 'धरमनेमि' जिनवर हो। इस जग मधि आप, धरम धुरि हो ॥तुम०॥737॥

ॐ ह्रीं धर्मनेमये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमहि 'मुनीश्वर' मुनिपति हो। सब गुण मणि भूषित सुखनिधि हो ॥तुम०॥738॥

ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'धरमचक्रायुध' यम अरि हो। तुम दरसन से मुझ अघ क्षय हो।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो। दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो ॥739॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं.....।

निजगुणरत 'देव' सुरगप्रद हो। मुझ गुणमणि देव परमगति हो ॥तुम०॥740॥
ॐ ह्रीं देवाय नमः अर्घ्यं.....।

सुखद 'करमहा' अघरिपु हन हो। समरस सुखदा शिवतियपति हो ॥तुम०॥741॥
ॐ ह्रीं कर्महने नमः अर्घ्यं.....।

तुमहि 'धरमघोषण' शिव भरता। अतिशय शिव के गुणमणि करता ॥तुम०॥742॥
ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमहि 'अमोघवच' जगत में। तुम विरथ न वाक्य कबहुँ सच में ॥तुम०॥743॥
ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः अर्घ्यं.....।

भुवन मधि 'अमोघाज्ञ' तुमहि हो। निष्फल नहिं आज्ञा सुर शिर धरयो ॥तुम०॥744॥
ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु जिनवर 'निर्मल' शुचिकर हो। मल विरहित कर्म रहित शिव हो ॥तुम०॥745॥
ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनवर सु 'अमोघशासन' तुम हो। नहिं निष्फल शासन कबहुंक हो ॥तुम०॥746॥
ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमहि 'सुरूप' असुर सुर में। नहिं तुम सम रूप दिखत जग में ॥तुम०॥747॥
ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः अर्घ्यं.....।

तुम 'सुभग' महाप्रभु अतिशय हो। बहुविध शुभ ऐश्वर गुण युत हो ॥तुम०॥748॥
ॐ ह्रीं सुभगाय नमः अर्घ्यं.....।

सब कुछ पर त्याग वनन विचरें। जिनवर तुम 'त्यागि' सुरन उचरें ॥तुम०॥749॥
ॐ ह्रीं त्यागिने नमः अर्घ्यं.....।

स्वपर समय जानकर शिव भये। अनुपम प्रभु 'ज्ञातृ' शिवप्रद भये ॥तुम०॥450॥
ॐ ह्रीं ज्ञात्रे नमः अर्घ्यं।

इन्द्रवज्रा

स्वामी 'समाहित' सुसमाधि ध्यानी। प्राणी समाधान लहें तुम्हीं से।
पूजूँ सदा नाम सुमंत्र वदूँ। मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा ॥751॥
ॐ ह्रीं समाहिताय नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ ! 'सुस्थित' सुख से निवासा। मुक्तीरमा आप स्वयं वरे हैं ॥पूजूँ०॥752॥
ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः अर्घ्यं.....।

आरोग्य आत्मा प्रभु 'स्वास्थ्यभाक्' हो। संसार व्याधी नहिं पूर्णस्वस्था ॥पूजूँ०॥753॥
ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः अर्घ्यं.....।

हो 'स्वस्थ' स्वामी भवरोग नाहीं। आत्मस्थ हो सर्वविकार शून्या ॥पूजूँ०॥754॥
ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'नीरजस्को' नहिं कर्मधूली। मेरे प्रभो ! कर्म समूल नाशो ॥पूजूँ०॥755॥
ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'निरुद्धव' जग में कहाते। संपूर्ण ही उत्सव इंद्र कीने ॥पूजूँ०॥756॥
ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी तुम्हीं कर्म 'अलेप' मानें। मेरे सभी लेप हटाय दीजे ॥पूजूँ०॥757॥
ॐ ह्रीं अलेपाय नमः अर्घ्यं.....।

हे 'निष्कलंकात्मन्' इन्द्र पूजें। मैं भी सदा शीश नमाय वदूँ ॥पूजूँ०॥758॥
ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं.....।

हो 'वीतरागी' गतराग द्वेषा। रागादि मेरे मन से हटा दो ॥पूजूँ०॥759॥
ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'गतस्पृह' तुम ही यहाँ पे। इच्छा निवारी जग के गुरू हो ॥पूजूँ०॥760॥
ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी सु 'वश्येन्द्रिय' आप ही है। पांचों ही इन्द्री वश में किया था ॥पूजूँ०॥761॥
ॐ ह्रीं वश्येंद्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

मानें 'विमुक्तात्मन्' आप ही हो। कर्मारि बन्धन तुम काट डाले ॥पूजूँ०॥762॥
ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं.....।

हो 'निःसपत्ना' नहिं शत्रु कोई। सम्पूर्ण प्राणी तुम मित्र मानें ॥पूजूँ०॥763॥
ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं.....।

जीता स्व इन्द्रीय 'जितेन्द्रियो' हो। जीतूं स्व इन्द्री प्रभु शक्ति देवो ॥
पूजूँ सदा नाम सुमंत्र वंदूँ। मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा ॥764॥
ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

सम्पूर्ण शांतीश 'प्रशांत' माने। वंदूं तुम्हें शान्ति मिले मुझे भी ॥पूजूँ०॥765॥
ॐ ह्रीं प्रशांताय नमः अर्घ्यं.....।

'आनन्तधामर्षि' ऋषी गणों में। तेजस्विता आप अनन्त धारो ॥पूजूँ०॥766॥
ॐ ह्रीं अनन्तधामर्षये नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी यहां 'मंगल' आप ही हैं। नाशो अमंगल भवि प्राणियों के ॥पूजूँ०॥767॥
ॐ ह्रीं मंगलाय नमः अर्घ्यं.....।

पापारि नाशा 'मलहा' कहाये। सम्पूर्ण धोये मल कर्म जैसे ॥पूजूँ०॥768॥
ॐ ह्रीं मलघ्ने नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'अनघ' पाप निमूल नाशा। कीजे सभी पाप विनाश मेरा ॥पूजूँ०॥769॥
ॐ ह्रीं अनघाय नमः अर्घ्यं.....।

हूये 'अनीदृक्' नहिं आप जैसा। इन्द्रादि वन्दे रुचि से तुम्हें ही ॥पूजूँ०॥770॥
ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः अर्घ्यं.....।

हे नाथ! 'उपमाभुत' इन्द्र भी तो। दें आपकी तो उपमा तुम्हीं से ॥पूजूँ०॥771॥
ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः अर्घ्यं.....।

हो भव्य भाग्योदय हेतु स्वामी। 'दिष्टी' कहाते जग में इसी से ॥पूजूँ०॥772॥
ॐ ह्रीं दिष्टये नमः अर्घ्यं.....।

हो 'दैव' प्राणी शुभ भाग्य होते। वंदूँ तुम्हें दैव समस्त नाशूँ ॥पूजूँ०॥773॥
ॐ ह्रीं दैवाय नमः अर्घ्यं.....।

कैवल्यज्ञानी नभ में विहारी। होते 'अगोचर' नहिं सर्व जानें ॥पूजूँ० ॥774॥
ॐ ह्रीं अगोचराय नमः अर्घ्यं.....।

रूपादि से शून्य 'अमूर्त' स्वामी। आत्मा अमूर्तीक मिले मुझे भी ॥पूजूँ० ॥775॥
ॐ ह्रीं अमूर्तायनमः अर्घ्यं.....।

सुखमा—छंद

'मूर्तीमन्' की पूजा करिये। नाहीं मन में शंका धरिये।
नामावलि को पूजूँ नित ही। व्याधी तन से भागे झट ही ॥776॥
ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः अर्घ्यं.....।

'एक' तुम्हें ही साधू कहते। दूजा नहिं कोई भी तुमसे ॥नामा० ॥777॥

ॐ ह्रीं एकाय नमः अर्घ्यं.....।

नानागुण की पूर्ती तुम में। स्वामी तुम ही 'नैक' जगत में ॥नामा० ॥778॥

ॐ ह्रीं नैकाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'नानैकतत्त्वदृक्' तुम ही। आत्मा तज ना देखे कुछ ही ॥नामा० ॥779॥

ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे नमः अर्घ्यं.....।

'अध्यातमगम्या' हो प्रभु जी। आत्म ग्रंथ से जाने मुनि जी ॥नामा०॥780॥

ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं.....।

माने 'अगम्यात्मा' तुम हो। मिथ्यादृश ना जाने तुम को ॥नामा०॥781॥

ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं.....।

आप 'योगविद्' की जो शरणे। मुक्तीतिय को निश्चित परणे ॥नामा०॥782॥

ॐ ह्रीं योगविदे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'योगिवंदित' हो जग में। योगी जन ध्याते भी मन में ॥नामा०॥783॥

ॐ ह्रीं योगिवंदिताय नमः अर्घ्यं.....।

'सर्वत्रग' व्यापा त्रै जग को। सो ही ज्ञान अपेक्षा समझो ॥नामा०॥784॥

ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'सदाभावी' हो जग में। तिष्ठो नित ना नाश स्वपन में ॥नामा०॥785॥

ॐ ह्रीं सदाभाविने नमः अर्घ्यं.....।

हो 'त्रिकालविषयार्थ' सुदृक् ही। त्रैकालिक जाना सब कुछ ही ॥नामा०॥786॥

ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं.....।

हो 'शंकर' भी भव्यन सुख दो। नाशो मुझ दोषादी दुख को ॥नामा०॥787॥

ॐ ह्रीं शंकराय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'शंवद' शं सौख्यं कर ही। तीनों जग में वंदे मुनि भी ॥नामा०॥788॥

ॐ ह्रीं शंवदाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामिन् ! चित्त अश्व को जीता। 'दांत' कहाये धर्म समेता ॥नामा०॥789॥

ॐ ह्रीं दांताय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामिन् ! दमी इंद्रियां दमते। पूरी मन की इच्छा करते ॥नामा०॥790॥

ॐ ह्रीं दमिने नमः अर्घ्यं.....।

'क्षान्तिपरायण' मानें तुमही। ध्याते तुम को मृत्यू नशे ही ॥
नामावलि को पूजूँ नित ही। व्याधी तन से भागे झट ही ॥791॥

ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'अधिप' बखाने जग में। इंद्रादिक पूजें आनंद में ॥नामा०॥792॥

ॐ ह्रीं अधिपाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'परमानंद' तृपत हो। आत्मा मुझ आनंद मगन हो ॥नामा०॥793॥

ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः अर्घ्यं.....।

हो नाथ ! 'परात्मज्ञ' अतुल ही। जाना पर को आत्मा निज भी ॥नामा०॥794॥

ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

हो आप 'परात्पर' भी जग में। श्रेष्ठो मधि श्रेष्ठाधिप सब में ॥नामा०॥795॥

ॐ ह्रीं परात्पराय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'त्रिजगद्वल्लभ' तुम हो। तीनों जग के मनभावन हो ॥नामा०॥796॥

ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं.,...।

स्वामी तुम 'अभ्यर्च्य' सुरन से। सौ इंद्रन से साधू गण से ॥नामा०॥797॥

ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'त्रिजगन्मंगलोदय' हो। तीनों जग में मंगल कर हो ॥नामा०॥798॥

ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं.....।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' तुम हो। सौ इंद्रन से पूज्य चरण हो ॥नामा०॥799॥

ॐ ह्रीं त्रिजगन्पतिपूज्यांघ्रये नमः अर्घ्यं.....।

'त्रीलोकाग्रशिखामणि' जिन हो। लोक शिखर के चूड़ामणि हो ॥नामा०॥800॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य—शंभु छंद

वृहद्वृहस्पति आदि नाम सौ, भक्ति भाव से नित मैं पूजूँ।
सर्व अमंगल दोष नशाकर, आधि व्याधि संकट से छूटूँ ॥
भूत प्रेत डाकिनि शाकिनि भी, तुम भक्तों से दूर भगे हैं।
नित नव मंगल संपति संतति यश भाग्योदय श्रेष्ठ जगे हैं ॥8॥

ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतय शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

चाल-हे दीनबन्धु.....

हे नाथ ! आप ही तो सकल इंद्र वंद्य हैं।
इस भू पे अतः आप ही तो धन्य धन्य हैं ॥
सम्पूर्ण अतिशयों के आप ही तो सद्म हैं।
इस हेतु सभी पूजते तुम पाद पद्म हैं ॥1॥
प्रभु आपके माहात्म्य से असमय में अगीचे।
सब ऋतु के फूल फल से वे फूले फले दिखें ॥
रज आदि दूर करती सुखद वायु चले है।
सब जीव वैर छोड़ के आपस में मिले हैं। ॥2॥
दर्पण के सदृश भूमि स्वच्छ रत्नमय हुई।
गंधोद की वर्षा भी मेघ देवकृत हुई ॥
शाल्यादि खेत भी फलों के भार से झुके।
सब जीव भी आनन्द से तो झूम ही उठे ॥3॥
शीतल पवन वायूकुमार देव चलाते।
सरवर कुंआं भी स्वच्छ जल से पूर्ण हो जाते ॥
उल्कादि धूम रहित गगन स्वच्छ सही है।
जब जीवों को रोगादि की बाधायें नहीं हैं ॥4॥
सर्वाण्हयक्ष शिर पे धर्मचक्र को धरें।
चारों तरफ के चक्र दिव्य रश्मियाँ धरें ॥
शुभ श्रीविहार के समय तुम पाद के तले।
सुरकृत सुगंधि युक्त भी सुवरण कमल खिलें ॥5॥
ये देव रचित तेरहों अतिशय महान हैं।
जो आपके अनंत गुणों में प्रधान हैं ॥
कैवल्यज्ञान उदित हो जिस वृक्ष के नीचे।
वो ही अशोक वृक्ष कहाता है तभी से ॥6॥
जो आपका आश्रय सदा लेते हैं भुवन में।
उनके कहो क्यों शोक रहेगा कभी मन में ॥

इस हेतु से तुम पाद का आश्रय लिया मैंने।
निज 'ज्ञानमती' हेतु ही विनती किया मैंने ॥7॥

दोहा

भक्तों के वत्सल तुम्हीं, करुणासिंधु जिनेश।
करो पूर्ण यह याचना, फेर न मांगूँ लेश ॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां बृहद्बृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्रनाशें सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें ॥1॥

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं० 10

स्थापना-गीताछंद

जो भव्य मुनिगण वंद्य तीर्थंकर चरण को वंदते।
वे निज अनंतानंत जन्मों के अघों को खंडते ॥
इस हेतु से हम भक्ति श्रद्धा भाव से उनको जजें।
आह्वान विधि से पूज कर निज आत्म समरस को चखें ॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्र समूह ! अत्र

अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाम मंत्र समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ

ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो

भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक-नरेन्द्र छंद

नंदावापी का निर्मलजल, कंचन भृंग भराऊं।
श्री जिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊं॥
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूं।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूं ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊं।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊं ॥श्री०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं.....।

मोती सम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊं।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निज आतमपद पाऊं ॥श्री०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

समवसरण की लता भूमि से, सुरभित पुष्प चुनाऊं।
जिनवर चरणकमल में अर्पूं, निज गुण यश विकसाऊं ॥श्री०॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊं।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुख व्याधि नशाऊं ॥श्री०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञान ज्योति उद्योतन ॥श्री०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

अगुरु तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊं।
अशुभ कर्म को दग्ध करूं मैं, अग्नी संग जलाऊं ॥श्री०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

सेव आम अंगूर सरस फल लाके थाल भराऊं।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊं ॥श्री०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ्य बनाऊं।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीनरत्न निज पाऊं ॥श्री०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

दोहा

पद्म सरोवर नीर से, जिनवर पद अरविंद।
त्रयधारा विधि से करूं, हो सुख शांति अनिंद ॥10॥

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल ॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

ज्ञान चेतनारूप, परमेष्ठी चिद्रूप हैं।
पुष्पांजलि से पूज, सकल दुःख दारिद हरूं ॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अनुष्टुप् छन्द

स्वामी 'त्रिकालदर्शी' हो, सभी पदार्थ देखते।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले ॥801॥

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'लोकेश' माने हो, तीन लोक प्रभु कहे ॥नाम० ॥802॥

ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः अर्घ्यं.....।

'लोकधाता' तुम्हीं माने, तीनों जगत् पोषते ॥नाम० ॥803॥

ॐ ह्रीं लोकधात्रे नमः अर्घ्यं.....।

हो 'दृढव्रत' व्रतों में स्थैर्य धारते ॥नाम० ॥804॥

ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः अर्घ्यं.....।

'सर्वलोकातिग' स्वामिन् ! सभी जग में श्रेष्ठ हो ॥नाम० ॥805॥

ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं.....।

पूजा के योग्य हो स्वामिन् ! 'पूज्य' माने सभी सदा ॥नाम० ॥806॥

ॐ ह्रीं पूज्याय नमः अर्घ्यं.....।

अभीष्ट में पहुँचाते, 'सर्वलोकैकसारथी' ॥नाम० ॥807॥

ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं.....।

प्राचीन सबमें ही हो, माने 'पुराण' आपको ॥नाम० ॥808॥

ॐ ह्रीं पुराणाय नमः अर्घ्यं.....।

गुणों को श्रेष्ठ आत्मा के, पाया 'पुरुष' आप हैं ॥नाम० ॥809॥

ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः अर्घ्यं.....।

सर्वप्रथम होने से, 'पूर्व' माने तुम्हीं प्रभो ! ॥नाम० ॥810॥

ॐ ह्रीं पूर्वाय नमः अर्घ्यं.....।

अंग पूर्वादि विस्तारे, 'कृतपूर्वाङ्गविस्तरः' ॥नाम० ॥811॥

ॐ ह्रीं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं.....।

देवों में मुख्य होने से, 'आदिदेव' तुम्हीं कहे ॥नाम० ॥812॥

ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः अर्घ्यं.....।

'पुराणाद्य' प्रभो ! माने, प्राचीनों में सुआदि हो ॥नाम० ॥813॥

ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं.....।

'पुरुदेव' तुम्हीं माने, श्रेष्ठ देव महान हो ॥नाम० ॥814॥

ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं.....।

देवों के देव होने से, तुम्हीं हो 'अधिदेवता' ॥नाम० ॥815॥

ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं.....।

'युगमुख्य' युगादी के, माने प्रधान आप हैं ॥नाम० ॥816॥

ॐ ह्रीं युगमुख्याय नमः अर्घ्यं.....।

'युगज्येष्ठ' कहे स्वामी, युग में सर्वश्रेष्ठ हो ॥नाम० ॥817॥

ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

युगादी में उपदेशा, 'युगादिस्थितिदेशकः' ॥नाम० ॥818॥

ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घ्यं.....।

'कल्याणवर्ण' कांती से, सुवर्ण सम हो तुम्हीं ॥नाम० ॥819॥

ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'कल्याण' भव्यों के, हितकर्ता प्रसिद्ध हो ॥नाम० ॥820॥

ॐ ह्रीं [illegible]णाय नमः अर्घ्यं.....।

'कल्य' नीरोग होने से, तत्पर मुक्ति हेतु हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले ॥821॥

ॐ ह्रीं कल्याय नमः अर्घ्यं.....।

लक्षण हितकारी हैं, अतः 'कल्याणलक्षणः' ॥नाम० ॥822॥

ॐ ह्रीं कल्याण प्रकृतये नमः अर्घ्यं.....।

'कल्याणप्रकृती' स्वामी, हो कल्याण स्वभाव ही ॥नाम० ॥823॥

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं.....।

स्वर्णवत् प्रभु दीप्तात्मा, 'दीप्रकल्याणआतमा' ॥नाम० ॥824॥

ॐ ह्रीं दीप्रकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं.....।

'विकल्मष' तुम्हीं स्वामी, कालिमाकर्म शून्य हो ॥नाम० ॥825॥

ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः अर्घ्यं.....।

चंपकमाला-छंद

कर्म कलंकादी निरमुक्ता। हो 'विकलंका' कर्म हरो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा। आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा ॥826॥

ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः अर्घ्यं.....।

देह कला से हीन रहे हो। नाथ ! 'कलातीते' जग में हो ॥पूजन०॥827॥

ॐ ह्रीं कलातीताय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'कलिलघ्न' तुम्हीं अघ हीना। पाप हमारे क्षालन कीजे ॥पूजन०॥828॥

ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'कलाधर' सर्व कला से। पूर्ण तुम्हीं हो सर्व गुणों से ॥पूजन०॥829॥

ॐ ह्रीं कलाधराय नमः अर्घ्यं.....।

'देवदेव' हो तीन जगत् में। नाथ ! सुदेवों के अधिदेवा ॥पूजन०॥830॥

ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'जगन्नाथा' जगस्वामी। जन्म मरण के दुख्ख हरोगे ॥पूजन०॥831॥

ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'जगद्बंधू' भवि बंधू। भव्यजनों के पूर्ण हितैषी ॥पूजन०॥832॥

ॐ ह्रीं जगद्बंधवे नमः अर्घ्यं.....।

आप 'जगद्विभु' तीन भुवन में। पालक हो सामर्थ्य समेता ॥पूजन०॥833॥

ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः अर्घ्यं.....।

'जगत् हितैषी' तीन जगत में। सर्वजनों को सौख्य दिया है ॥पूजन०॥834॥

ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः अर्घ्यं.....।

आप कहे 'लोकज्ञ' जगत् को। जान लिया है पूर्ण तरह से ॥पूजन०॥835॥

ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

'सर्वग' तीनों लोक सभी में। व्याप्त हुये हो ज्ञान किरण से ॥पूजन०॥836॥

ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'जगदग्रज' ज्येष्ठ जगत में। सर्व दुखों को दूर करोगे ॥पूजन०॥837॥

ॐ ह्रीं जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'चराचरगुरु' कहे हो। स्थावर त्रस के पालक भी हो ॥पूजन०॥838॥

ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नमः अर्घ्यं.....।

'गोप्य' मुनी रक्खें मन में ही। नाथ करो रक्षा अब मेरी ॥पूजन०॥839॥

ॐ ह्रीं गोप्याय नमः अर्घ्यं.....।

हे प्रभु 'गूढ़ात्मा' तुम आत्मा। गोचर इन्द्री के नहिं होती ॥पूजन०॥840॥

ॐ ह्रीं गूढ़ात्मने नमः अर्घ्यं.....।

'गूढ़ सुगोचर' गूढ़ तुम्हीं हो। योगिजनों के गम्य तुम्हीं हो ॥पूजन०॥841॥

ॐ ह्रीं गूढ़गोचराय नमः अर्घ्यं.....।

हे प्रभु 'सद्योजात' कहे हो। तत्क्षण जन्मे रूप रहे हो ॥पूजन०॥842॥

ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः अर्घ्यं.....।

आप 'प्रकाशात्मा' मुनि मानें। ज्ञान सुज्योतीरूप बखानें ॥पूजन०॥843॥

ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हो। अग्निप्रभा सी कांति धरे हो ॥पूजन०॥844॥

ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

रविवत् 'आदित्यवरण' स्वामी। हो प्रभु तेजस्वी जग नामी ॥पूजन०॥845॥

ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वर्ण छवी 'भर्माभ' कहाये। देह दिपे भास्वत् शरमाये ॥पूजन०॥846॥

ॐ ह्रीं भर्माभाय नमः अर्घ्यं.....।

'सुप्रभ' शोभे कांति तुम्हारी। सूर्य शशी क्रोड़ों लजते हैं ॥
पूजन करते सौख्य मिलेगा। आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा ॥847॥

ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'कनकप्रभ' स्वर्ण प्रभा सी। कांति दिखे उत्तुंग तनु हो ॥पूजन०॥848॥

ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ 'सुवर्णवर्ण' सुर गायें। देह सुवर्णी दीप्ति धराये ॥पूजन० ॥849॥

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं.....।

आप प्रभो ! 'रुक्माभ' कहाये। स्वर्ण छवी सी दीप्ति करो मे ॥पूजन०॥850॥

ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः अर्घ्यं.....!

मंदाक्रांता-छंद

'सूर्यकोटीसमप्रभ' विभो ! क्रोड़ सूरज लजाते।
दीप्ती ऐसी तुम तनु विषे आत्मदीप्ती अनोखी ॥
पूजूँ नामावलि तुम प्रभो ! सर्वव्याधी निवारो।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो मोहशत्रू भगाके ॥851॥

ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

तप्ते सोने सदृश 'तपनीयनिभ' दीप्ती धरे हो।
कर्मों का भी मल सब हटा स्वात्म निर्मल किया है ॥पूजूँ० ॥852॥

ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं.....!

ऊँचीदेही धर कर विभो ! 'तुंग' माने गये हो।
ऊँचे भावों सहित तुमही मोक्ष प्रासाद पाया ॥पूजूँ० ॥853॥

ॐ ह्रीं तुंगाय नमः अर्घ्यं.....।

'बालार्काभो' प्रभु तनु धरा ऊगते सूर्य कांती।
मेरी आत्मा सुवरण करो कर्म पंकील धो दो ॥पूजूँ० ॥854॥

ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः अर्घ्यं.....।

आत्मा शुद्ध्या 'अनलप्रभ' हो अग्नि कांती सदृश हो।
मेरी आत्मा निरमल करो श्रेष्ठ तप से तपाके ॥पूजूँ० ॥855॥

ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

---

1. कीचड़

संध्यालाली सदृश छवि है नाथ ! संध्याभ्रबभ्रू।
भक्ती लाली शुभ तम रहे नाथ मेरे हृदय में ॥पूजूँ० ॥856॥

ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे नमः अर्घ्यं.....।

आत्मा निर्मल सुवरण तनू आप 'हेमाभ' माने।
रागादी को हृदयगृह से दूर कीजे अभी ही ॥पूजूँ० ॥857॥

ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः अर्घ्यं.....।

'तप्ताचामीकरप्रभ' तपे स्वर्ण जैसी प्रभा है।
मेरी आत्मा अतिशय धुला कर्म से मुक्त होवे ॥पूजूँ० ॥858॥

ॐ ह्रीं तप्तचामीकरप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

शुद्धात्मा हो जिनवृषभ ! 'निष्टप्तकनकच्छाय' हो।
कांती धारी अद्‌भुत महादीप्त त्रैलोक्य स्वामी ॥पूजूँ० ॥859॥

ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घ्यं.....।

देदीप्यात्मा जिनवर 'कनत्कांचनासन्निभ' देही।
कैवल्यात्मा चमचम करे नाथ ! कीजे अबे ही ॥पूजूँ० ॥860॥

ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय नमः अर्घ्यं.....।

मुक्तीकांतावर प्रभु 'हिरण्यवर्ण' इंद्रादि गायें।
दीजे शक्ती निजसम खिले चित्तपंकज सुहाये ॥पूजूँ० ॥861॥

ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः अर्घ्यं.....।

सोने जैसी छवि तुमहिं 'स्वर्णाभ' साधु जनों में।
व्याधी हीना मुझ तनु बने रत्नत्रै साध लूँ मैं ॥पूजूँ० ॥862॥

ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः अर्घ्यं.....।

भव्यों को भी करत शुचि भो ! 'शांतकुंभनिभप्रभ' हो।
मेरी आत्मा स्वपर विद हो ज्ञानज्योति जला दो ॥पूजूँ० ॥863॥

ॐ ह्रीं शांतकुंभनिभप्रभाय नमः अर्घ्यं.....।

सुंदर सोने सदृश तनु है आप 'द्युम्नाभ' स्वामी।
दीजे सिद्धी निजसुख मिले ना पुनर्भव कभी हो ॥पूजूँ० ॥864॥

ॐ ह्रीं द्यु ाभास नमः अर्घ्यं.....।

जन्मे जैसे विकृति रहिते 'जातरूपाभ' स्वामी।
रागादी मुझ विकृति हरिये दीजिये मुक्ति लक्ष्मी॥
पूजूँ नामावलि तुम प्रभो ! सर्वव्याधी निवारो।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो मोहशत्रू भगाके॥865॥

ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः अर्घ्यं.....।

'तप्तजांबूनदद्युति' प्रभो ! श्रेष्ठ स्वर्णिम शरीरी।
दीजे शक्ती द्विदश तपसे आत्म शुद्धी करूँ मैं ॥पूजूँ० ॥866॥

ॐ ह्रीं तप्तजांबूनदद्युतये नमः अर्घ्यं.....।

धोये उज्ज्वल कनक से हो पाप क्षालो हमारे।
दीपे आत्मा जिनवर 'सुधौतकलधौतश्री' हो ॥पूजूँ० ॥867॥

ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः अर्घ्यं.....।

दीपे देही जिनरवि 'प्रदीप्त' आप लोकाग्र राजें।
जो भी पूजें सकल दुख भी नाशते सौख्य देते ॥पूजूँ० ॥868॥

ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी हो 'हाटकद्युति' तनू स्वर्ण दीप्ती लजाते।
मैं भी ध्याऊं हृदय धरके आपको शीश नाऊं ॥पूजूँ० ॥869॥

ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी सौ भी सुरपति जजें आप 'शिष्टेष्ट' मानें।
प्रीती से शिष्ट जन सब तुम्हें इष्ट भगवान् मानें ॥पूजूँ० ॥870॥

ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः अर्घ्यं.....।

पुष्टी कर्ता त्रिभुवन जनों आप 'पुष्टिद' कहे हो।
स्वामिन् ! पोषो दुखित मुझको पास आया इसी से ॥पूजूँ० ॥871॥

ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः अर्घ्यं.....।

परमौदारिक तनुधर प्रभो ! 'पुष्ट' हो सौख्यभृत हो।
मेरी पुष्टी तुरत करिये रोग शोकादि हरके ॥पूजूँ० ॥872॥

ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः अर्घ्यं.....।

केवलज्ञानी युगपत् तुम्हीं लोक को जानते हो।
कर्मों का मुझ तुरत क्षय हो 'स्पष्ट' स्वामी तुम्हीं से ॥पूजूँ० ॥873॥

ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः अर्घ्यं.....।

वाणी प्रभु की विशद अतिशै 'स्पष्टाक्षर' इसी से।
मेरी वाणी हितकर करो दिव्यवाणी बने भी ॥पूजूँ० ॥874॥

ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं.....।

सामर्थ्यात्मा प्रभु 'क्षम' तुम्हीं मोह शत्रू हना है।
शत्रू मृत्यू अति दुख दिया नाथ ! नाशो इसे ही ॥पूजूँ० ॥875॥

ॐ ह्रीं क्षमाय नमः अर्घ्यं.....।

आर्या छंद

कर्म शत्रु को मारा, इसीलिये 'शत्रुघ्न' सुरेंद्र कहें।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी ॥876॥

ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अप्रतिघ' तुम्हीं हो, शत्रु न कोई रहा यहां जग में ॥
नाम० ॥877॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'अमोघ' हो नित ही, स्वयं सफल हो किया सफल सबको ॥
नाम० ॥878॥

ॐ ह्रीं अमोघाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'प्रशास्ता' तुमहो, सर्वोत्तम उपदेश दिया तुमने ॥
नाम० ॥879॥

ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो 'शासिता' तुमही, रक्षा करते सदैव भक्तों की ॥
नाम० ॥880॥

ॐ ह्रीं शासित्रे नमः अर्घ्यं.....।

'स्वभू' स्वयं जन्मे हो, मात पिता बस निमित्त बने सचमें ॥
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी ॥881॥

ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः अर्घ्यं.....।

शांतिनिष्ठ' प्रभु तुमहो, पूर्ण शांति को पाया पाप हना ॥
नाम० ॥882॥

ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'मुनिज्येष्ठ' कहाते, गणधर मुनि में बड़े तुम्हीं माने ॥
नाम० ॥883॥

ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'शिवताति' जगत में, सब कल्याण परंपरा देते ॥
नाम० ॥884॥

ॐ ह्रीं शिवतातये नमः अर्घ्यं.....।

'शिवप्रद' नाथ तुम्हीं हो, भविजन को सब सुख शिवसुख भी देते ॥
नाम० ॥885॥

ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः अर्घ्यं.....।

'शांतिद' नाथ सभी को, शांति दिया है सुख भरपूर दिया ॥
नाम० ॥886॥

ॐ ह्रीं शांतिदाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'शांतिकृत्' जग में, शांति करो मुझको भी शांति करो ॥
नाम० ॥887॥

ॐ ह्रीं शांतिकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'शांति' हो जग में, त्रिभुवन में भी शांति करो भगवन् ॥
नाम० ॥888॥

ॐ ह्रीं शांतये नमः अर्घ्यं.....।

'कांतिमान्' प्रभु मानें, सर्व कांतियुत सभामध्य तेजस्वी ॥
नाम० ॥889॥

ॐ ह्रीं कांतिमते नमः अर्घ्यं.....।

'कामितप्रद' भगवंता, भक्तों के मनरथ पूर्ण किया है ॥
नाम० ॥890॥

ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः अर्घ्यं.....।

'श्रेयोनिधि' जिनराजा, भविजन के हित तुम सब सुख के दाता ॥
नाम० ॥891॥

ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः अर्घ्यं.....।

'अधिष्ठान' तुमही हो, त्रिभुवन में दयाधर्म आधारा ॥
नाम० ॥892॥

ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं.....!

'अप्रतिष्ठ' हो भगवन् ! परकृत बिना प्रतिष्ठा के पूजित हो ॥
नाम० ॥893॥

ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं.....!

नाथ ! 'प्रतिष्ठित' जग में, नर सुरगण में महायशस्वी हो ॥
नाम० ॥894॥

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सुस्थिर' त्रिभुवन में, अतिशय थिरता मिली तुम्हें निजमें ॥
नाम० ॥895॥

ॐ ह्रीं सुस्थिराय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! तुम्हीं 'स्थावर' हो, समवसरण में गमन रहित राजें॥
नाम० ॥896॥

ॐ ह्रीं स्थावराय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'स्थाणु' कहाये, अचल रूपधर यहीं विराजे हो ॥
नाम० ॥897॥

ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं.....।

'प्रथीयान्' प्रभु मानें, अतिशय विस्तृत कहें सुरासुर भी ॥
नाम० ॥898॥

ॐ ह्रीं प्रथीयसे नमः अर्घ्यं.....।

भगवन्! 'प्रथित' तुम्हीं हो, त्रिभुवन में भी प्रसिद्ध अतिशायी ॥
नाम० ॥899॥

ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः अर्घ्यं.....।

'पृथु' ज्ञानादि गुणों से, गणि मुनिगण में महान हो प्रभुजी ॥
नाम० ॥900॥

ॐ ह्रीं पृथवे नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य—शंभु छंद

प्रभु त्रिकालदर्शी से लेकर नाम शतक अतिशायी हैं।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति भी नाम जपें सुखदायी हैं ॥
सुरपति खगपति पूजन करते वंदन कर शिर नाते हैं।
हम भी पूजें अर्घ चढ़ाकर निज समकित गुण पाते हैं ॥9॥

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

नित्य निरंजनदेव, अखिल अमंगल को हरें।
नित्य करूं मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें॥1॥

सखी छंद

जय जय जिन देव हमारे, जय जय भविजन बहु तारें।
जय मुक्तिरमापति देवा, शतइंद्र करें तुम सेवा॥2॥
मुनिवृंद तुम्हें चित धारें, भविवृंद सुयश विस्तारें।
सुरनर किन्नर गुण गावें, किन्नरियां बीन बजावें॥3॥
भक्तीवश नृत्य करे हैं, गुण गाकर पाप हरे हैं।
विद्याधर गण बहु आवें, दर्शन कर पुण्य कमावें॥4॥

भव भव के त्रास मिटावें, यम का अस्तित्त्व हटावें।
जो जिनगुण में मन पागे, तिन देख मोह रिपुभागे॥5॥
जो प्रभु की पूज रचावें, इस जग में पूजा पावें।
जो प्रभु का ध्यान धरे हैं, उनका सब ध्यान करे हैं॥6॥
जो करते भक्ति तुम्हारी, वे भव भव में सुखियारी।
इस हेतु प्रभो तुम पासे, मन के उद्गार निकासे॥7॥
जब तक मुझ मुक्ति न होवे, तब तक सम्यक्त्व न खोवे।
तब तक जिनगुण उच्चारूँ, तब तक मैं संयम धारूं॥8॥
तब तक हो श्रेष्ठ समाधी, नाशे जन्मादिक व्याधि।
तब तक रत्नत्रय पाऊँ, तब तक निज ध्यान लगाऊँ॥9॥
तब तक तुम ही मुझ स्वामी, भव भव में हो निष्कामी।
ये भाव हमारे पूरो, मुझ मोह शत्रु को चूरो॥10॥

घत्ता

जय जय चिन्मूरति, गुणमणि पूरित, जय जिनवर वृषचक्रपती।
जय 'ज्ञानमती' धर, शिवलक्ष्मीवर, भविजन पावें सिद्धगती॥11॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पापकर्म सहस्रनाशें सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फले ॥1॥

इत्याशीर्वादः

पूजा नं० 11

स्थापना-शंभुछंद

पांच भरत पण ऐरावत में चौथा काल जभी हो।
चौबीस चौबिस तीर्थंकर प्रभु जन्म धरें सुकृती हो॥
इक सौ साठ विदेह क्षेत्र में सतत तीर्थंकर होते।
इन सबका आह्वानन कर हम, भव भव कल्मष धोते ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्र समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक-चामरछंद

सिंधुनीर स्वच्छ स्वर्ण भृंग में भराइये।
श्री जिनेंद्रदेव पादपद्म में चढ़ाइये॥
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहां कभी धरेंगे जन्म ना ॥1॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः जलं.....।

अष्ट गंध लेय नाथ पाद में चढ़ाइये।
मोहताप शांतिहेतु भक्ति को बढ़ाइये॥देव०॥2॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं.....।

चन्द्ररश्मि के समान धौत शालि थाल में।
नाथ अग्र पुंज देय सर्व सौख्य हाल में॥देव०॥3॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं.....।

पारिजात चंपकादिपुष्प लेय पूजिये।
काममल्ल चूरके निजात्म तृप्त हूजिये॥देव०॥4॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं.....।

मालपूप मोदकादि व्यंजनादि लाइये।
नाथ पाद पूज भूख व्याधि को नशाइये॥देव०॥5॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं.....।

स्वर्णपात्र में कपूर ज्वाल आरती करूँ।
मोहध्वांत नाश स्वात्मज्ञान भारती वरूँ॥देव०॥6॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः दीपं.....।

अग्निपात्र में सुगंध धूप खेवते सदा।
कर्मपुंज को जलाय पाउं स्वात्म संपदा॥देव०॥7॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः धूपं.....।

द्राक्ष आम औ बदाम श्रीफलादि लाइये।
स्वात्म सौख्य पान हेतु आपको चढ़ाइये॥देव०॥8॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः फलं.....।

नीर गंध अक्षतादि अष्ट द्रव्यलाइये।
अर्घ्य को चढ़ायके अखंड सौख्य पाइये॥देव०॥9॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं.....।

सोरठा

जिनवर पद अरविंद, जल से त्रयधारा करूं।
पाऊं निज गुणकंद, परम शांति अद्भुत सदा ॥10॥

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज, पुष्पांजलि अर्पण करूं।
मिटे सर्व दुख शोक, स्वात्म सुधारस पान हो ॥11॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

सिद्धिवधू भरतार, निज में ही रमते सदा।
भुक्ति मुक्ति करतार, पुष्पांजलि से मैं जजूं॥1॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शालिनी छंद

'दिग्वासा' हो वस्त्र दिश् ही तुम्हारे।
ऐसी मुद्रा हो कभी नाथ मेरी ॥
श्रद्धा से मैं पूजहूँ नाम मंत्रं।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ ॥901॥

ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी सुन्दर 'वातरशना' तुम्हीं हो।
धारी वायू करधनी है कटी में ॥श्रद्धा०॥902॥

ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी 'निर्ग्रंथेश' हो बाह्य अंतः।
चौबीसों ही ग्रन्थ से मुक्त मानें॥श्रद्धा०॥903॥

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथेशाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी भूमी पे 'दिगंबर' तुम्हीं हो।
धारा अम्बर दिक्मयी शील पूरे॥श्रद्धा०॥904॥

ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः अर्घ्यं.....।

'निष्किचन' हो नाथ सर्वस्व त्यागा।
आत्मानंते सद्गुणों से भरी है॥श्रद्धा०॥905॥

ॐ ह्रीं निष्किचनाय नमः अर्घ्यं.....।

इच्छा त्यागी हो 'निराशंस' स्वामी।
आशा मेरी पूरिये सिद्धि पाऊँ॥श्रद्धा०॥906॥

ॐ ह्रीं निराशंसाय नमः अर्घ्यं.....।

केवलज्ञानी ज्ञान ही नेत्र पाया।
स्वामी मेरे 'ज्ञानचक्षू' तुम्हीं हो॥श्रद्धा०॥907॥

ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घ्यं.....।

नाशा मोहारी 'अमोमुह' कहाये।
स्वामी मेरे मोह रागादि नाशो॥श्रद्धा०॥908॥

ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः अर्घ्यं.....।

'तेजोराशी' तेज के पुञ स्वामी।
चंदा से भी सौम्य शीतल भये हो॥श्रद्धा०॥909॥

ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः अर्घ्यं.....।

नंते ओजस्वी 'अनंतौज' स्वामी।
मेरी शक्ती को बढ़ा दो सभी ही॥श्रद्धा०॥910॥

ॐ ह्रीं अनंतौजसे नमः अर्घ्यं.....।

हो 'ज्ञानाब्धी' ज्ञान के सिंधु स्वामी।
स्वामी मेरे ज्ञान को पूर्ण कीजे॥श्रद्धा०॥911॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाब्ध्ये नमः अर्घ्यं.....।

शीलों से भृत 'शीलसागर' तुम्हीं हो।
अठरा साहस्र शील को पूरिये भी॥श्रद्धा०॥912॥

ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः अर्घ्यं.....।

'तेजोमय' हो नाथ ! तेजः स्वरूपी।
आत्मा तेजोरूप मेरी करो भी॥श्रद्धा०॥913॥

ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः अर्घ्यं.....।

'अमितज्योती' आप ज्योती अनंती।
मेरी आत्मा ज्योति से पूर दीजे॥श्रद्धा०॥914॥

ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

'ज्योतिर्मूर्ती' ज्योतिमय देह धारा।
मेरे घट में ज्ञान ज्योती भरीजे॥श्रद्धा०॥915॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं.....।

मोहारी हन के 'तमोपह' तुम्हीं हो।
मेरे चित का सर्व अज्ञान नाशो॥श्रद्धा०॥916॥

ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः अर्घ्यं.....।

सकल 'जगच्चूड़ामणी' आप ही हो।
तीनों लोकों के शिखारत्न स्वामी॥श्रद्धा०॥917॥

ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये नमः अर्घ्यं.....।

देदीप्यात्मा 'दीप्त' स्वामी तुम्हीं हो।
मेरी आत्मा दीप्त कीजे गुणों से॥
श्रद्धा से मैं पूजहूँ नाम मंत्रं।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ॥918॥

ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः अर्घ्यं.....।

'शंवान्' स्वामी सौख्य शांती तुम्हीं में।
मेरी आत्मा सौख्य से पूर्ण कीजे॥श्रद्धा०॥919॥

ॐ ह्रीं शंवते नमः अर्घ्यं.....।

स्वामी मेरे 'विघ्नवीनायका' हो।
मेरे विघ्नों को हरो नाथ ! जल्दी॥श्रद्धा०॥920॥

ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः अर्घ्यं.....।

तीनों लोकों में 'कलिघ्ना' तुम्हीं हो।
मेरे कलिमल नाश के सौख्य दीजे॥श्रद्धा०॥921॥

ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं.....।

मेरे स्वामी 'कर्मशत्रुघ्न' ही हो।
दुष्कर्मों को नष्ट कीजे प्रभू जी॥श्रद्धा०॥922॥

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'लोकालोक प्रकाशक' जिनेशा।
देखा तीनों लोक आलोक भी तो॥श्रद्धा०॥923॥

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं.....।

जागे आत्मा में 'अनिद्रालु' स्वामी।
मेरी आत्मा मोह निद्रा तजे भी॥श्रद्धा०॥924॥

ॐ ह्रीं अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं.....।

आलस नाशा हो 'अतन्द्रालु' स्वामी।
मेरी आत्मा ज्ञान से स्वस्थ होवे॥श्रद्धा०॥925॥

ॐ ह्रीं अतंद्रालवे नमः अर्घ्यं.....।

लोल तरंग-छंद

जाग्रत संतत 'जागरूक' हो।
मोह कि नींद हरो तुम ध्याऊँ॥
नाम सुमंत्र जपूँ मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं॥926॥

ॐ ह्रीं जागरूकाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो।
ज्ञान गुणाधिक हो मुझ आत्मा॥नाम०॥927॥

ॐ ह्रीं प्रमामयाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वामिन् ! 'लक्ष्मीपति' जग में हो।
नंत चतुष्टय श्रीपति जिन हो॥नाम०॥928॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'जगज्ज्योती' कहलाये।
ज्योति भरो तम को हर लीजे॥नाम०॥929॥

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

धर्म दयापति 'धर्मराज' हो।
नाथ हृदे मुझ धर्म विराजे॥नाम०॥930॥

ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'प्रजाहित' सर्व प्रजा की।
पालन रीति नृपाल सिखायी॥नाम०॥931॥

ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'मुमुक्षु' कहें मुनि ज्ञानी।
इच्छुक कर्म अरी सब छूटें॥नाम०॥932॥

ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं.....।

'बंधमोक्षज्ञा' हो तुम स्वामी।
जानत बंध रु मोक्ष विधी को॥नाम०॥933॥

ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'जिताक्ष' जिता पण इंद्री।
जीत सकें विषयों को हम भी॥
नाम सुमंत्र जपूँ मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं॥934॥

ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'जितमन्मथ' काम विजेता।
काम अरी मुझ मार भगावो॥नाम०॥935॥

ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'प्रशांतरसशैलुष' हो।
किया प्रदर्शन शांतिरसों का॥नाम०॥936॥

ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषाय नमः अर्घ्यं.....।

'भव्यनपेटकनायक' मानें।
भव्य समूह कहें तुम स्वामी॥नाम०॥937॥

ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घ्यं.....।

धर्म प्रधान कहा युग आदी।
'मूलसुकर्ता' आप बखाने॥नाम०॥938॥

ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

सर्व पदारथ पूर्ण प्रकाशा।
नाथ ! 'अखिलज्योती' सुर गाते॥नाम०॥939॥

ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'मलघ्न' सभी मल हाने।
सर्व अघों मल नाश करो मे॥नाम०॥940॥

ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः अर्घ्यं.....।

'मूलसुकारण' मुक्ति सुपथ के।
नाथ! मुझे शिवमार्ग दिखा दो॥नाम०॥941॥

ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः अर्घ्यं.....।

'आप्त' यथारथ देव तुम्हीं हो।
नाथ ! तपोनिधि दो सुखदाता॥नाम०॥942॥

ॐ ह्रीं आप्ताय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'वागीश्वर' दिव्यधुनी के।
लोलतरंग वचोऽमृत गंगा॥नाम०॥943॥

ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः अर्घ्यं.....।

हो 'श्रेयान्' प्रभो ! श्रिय दाता।
अंतर बाहिर श्री मुझको दो॥नाम०॥944॥

ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः अर्घ्यं.....।

'श्रायसउक्ति' हितंकर वाणी।
नाथ ! मुझे निज रत्नत्रयी दो॥नाम०॥945॥

ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं.....।

सार्थकवाच 'निरुक्तवाक्' हो।
आप धुनी मन शांति करेगी॥नाम०॥946॥

ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! 'प्रवक्ता' श्रेष्ठ वचों से।
धर्मसुधा बरसा जन तोषा॥नाम०॥947॥

ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः अर्घ्यं.....।

नाथ ! तुम्हीं 'वचसामिश' मानें।
धर्म वचन के ईश्वर ही हो॥नाम०॥948॥

ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः अर्घ्यं.....।

'मारजीता' प्रभु कामजयी हो।
सर्व मनोरथ पूर्ण करो जी॥नाम०॥949॥

ॐ ह्रीं मारजिते नमः अर्घ्यं.....।

'विश्वभाववित्' तीन जगत् को।
जान लिया मुझ ज्ञान सुधा दो॥नाम०॥950॥

ॐ ह्रीं विश्वभाववित्रे नमः अर्घ्यं.....।

त्रिभंगी छंद

हे नाथ ! 'सुतनु' हो, उत्तमतनु हो, अतिशय दीप्ती, धारत हो।
हन आधी व्याधी, मेट उपाधी, पूर्ण निरामय कारक हो॥

प्रभु नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति घालें, निज आतम में तृप्ति धरें॥951॥

ॐ ह्रीं सुतनवे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु देहरहित हो, ज्ञानदेह हो, 'तनुनिर्मुक्त' कहाते हो।
तनु बंधन काटूं, अघ अरि पाटूं, भवितनुमल, को नाशे हो॥
प्रभु० ॥952॥

ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्तये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'सुगत' तुम्हीं हो, अधर गमन हो, आत्मरूप में लीन रहे।
मुझ सुगति करोगे, सौख्य भरोगे, दो शक्ती शिवमार्ग लहें॥
प्रभु० ॥953॥

ॐ ह्रीं सुगताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'हतदुर्नय' हो, स्वयं सुनय हो, मिथ्यानय को दूर किया।
जो नहिं निरपेक्षी, नित सापेक्षी, सम्यक्नय का कथन किया॥
प्रभु० ॥954॥

ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम्हीं 'श्रीश' हो, मुक्ति ईश हो, अंतर बाहिर लक्ष्मी से।
श्री आदि देवियां, मात सेविया, तुम महिमा सुर भक्ती से॥
प्रभु० ॥955॥

ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः अर्घ्यं.....।

श्री-लक्ष्मी सेवित, चरणकमलयुग, प्रभु 'श्रीश्रितपादाब्ज' तुम्हीं।
धन लक्ष्मी इच्छुक, भविजन अर्चत, सभी सौख्य श्री देत तुम्हीं॥
प्रभु० ॥956॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'वीतभी', प्राप्त अभयधी, भविजन को निर्भीक करो।
हत जन्म मरण भय, शिवपद निर्भय, देकर मुझभय शीघ्र हरो॥
प्रभु० ॥957॥

ॐ ह्रीं वीतभिये नमः अर्घ्यं.....।

भगवन 'अभयंकर' जग क्षेमंकर, भव्य हितंकर आप कहे।
मेरे दुख टारो, भव निरवारो, मुझ आत्मा निज सौख्य लहे॥
प्रभु० ॥958॥

ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः अर्घ्यं.....।

'उत्सन्नदोष' हो, रत्नकोश हो, सब दोषों को दूर किया।
मुझ दोष दूर हों, सौख्य पूर हो, इस आशा से शरण लिया॥
प्रभु० ॥959॥

ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं.....।

सब विघ्न विरहिते, मंगल सहिते, कर्म हते, निर्विघ्न भये।
मुझ शिवमारग में, दिन प्रतिदिन में, विघन घने, तुम जजत गये॥
प्रभु० ॥960॥

ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु अतिशय सुस्थिर, ज्ञान धराधर, मुनिगण 'निश्चल' तुमहिं कहें।
मुझ चित्त विमल हो, ध्यान अचल हो, पद भी निश्चल, शीघ्र लहें॥
प्रभु० ॥961॥

ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमपद प्रीती, सद्गुण नीती, हरत अनीती, प्रेम भरे।
तुम 'लोकसुवत्सल', हरत करममल, भरत महाबल, नेह धरें॥
प्रभु० ॥962॥

ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम 'लोकोत्तर' सर्व अनुत्तर, नमत सुरासुर, भविक भजें।
जो तुमपद ध्यावें, निज सुख पावें, कर्म नशावें, सुगुण सजें॥
प्रभु० ॥963॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'लोकपती' हो, त्रिजग अधिप हो, भवि रक्षक हो, त्रिभुवन में।
अतिशय सुखदाता, हरत असाता, मोक्ष विधाता, मुनिगण में॥
प्रभु० ॥964॥

ॐ ह्रीं लोकपतये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु भविक नयन हो, 'लोकचक्षु' हो, जगत लखत हो, प्रतिक्षण में।
मुझ ज्ञाननेत्र दो, भ्रम तमहर दो, निज रुचि भर दो, रग रग में॥
प्रभु नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें॥965॥

ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु तुम 'अपारधी', अनवधिबुद्धी, हरत कुबुद्धी, ज्ञानमयी।
मुझ कुमति हटा दो, सुमति बढ़ा दो, मोह मिटा दो, दुःखमयी॥
प्रभु० ॥966॥

ॐ ह्रीं अपारधिये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'धीरधी' सुस्थिर बुद्धी, अतुलित बुद्धी, महामना।
मुझ ज्ञान विमल हो, सौख्य अमल हो, जन्म सफल हो, धर्मघना॥
प्रभु० ॥967॥

ॐ ह्रीं धीरधिये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु भवदधि पारग, भवि शिवमारग, आप 'बुद्ध सन्मार्ग' कहे।
पथ स्वयं चले हो, कहत भले हो, तुमसे ही, जन मार्ग लहें
॥प्रभु० ॥968॥

ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु आप 'शुद्ध' हो, स्वात्मसिद्ध हो, भविजन शुद्ध, बने तुमसे।
मुझ कलिमल नाशो, आत्म प्रकाशो, मन में भासो, नमूं रुचि से॥
प्रभु० ॥969॥

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु सत्यपवित्रा, वचन धरित्रा, 'सत्यासूनृतवाक्' तुम्हीं।
तुम वचन औषधी, सर्व औषधी, मेटत जामन मरण मही॥
प्रभु० ॥970॥

ॐ ह्रीं सत्यसूनृतवाचे नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु चरमसीम पे, बुद्धी पहुंचे, 'प्रज्ञापारमिता' तुम हो।
मुझ ज्ञान अल्पश्रुत, बने पूर्ण श्रुत, ज्ञान ध्यान शिव कारक हो॥
प्रभु० ॥971॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'प्राज्ञ' कहाये, मोह नशाये, सुरगण गायें, गुण नित ही।
मुझ विद्यादाता, दो सुखसाता, हरो असाता, हो सुख ही॥
प्रभु० ॥972॥

ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु विषय विरत हो, स्वात्म निरत हो, महाव्रतिक हो, 'यति' तुमही।
इंद्रिय विषयन को, कषाय गण को, दूर करो जो, दुखद मही॥
प्रभु० ॥973॥

ॐ ह्रीं यतये नमः अर्घ्यं.....।

प्रभु 'नियमित इंद्रिय' जित पण इंद्रिय, जीत लिया हिय, जिन तुमही।
मुझ इंद्रिय मन की, जीतन शक्ती, दीजे युक्ती, नमित मही॥
प्रभु० ॥974॥

ॐ ह्रीं नियमितेंद्रियाय नमः अर्घ्यं.....।

भगवन् ! 'भदंत' तुम, पूज्य कहें मुनि, सुरनर यतिगण, तुम बंदे।
हम तज बहिरात्मा, अंतर आत्मा, हों परमात्मा गुण मंडे॥
प्रभु० ॥975॥

ॐ ह्रीं भदंताय नमः अर्घ्यं.....।

पृथ्वी-छंद

प्रभो ! तुमहिं 'भद्रकृत्' सकल लोक कल्याणकृत्।
नमूँ अतुल भक्ति से त्वरित सौख्य दीजे मुझे॥
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे॥976॥

ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुमहिं 'भद्र' हो सकल जीव श्रेयस् करो।
अमंगल हरो सदा अखिल विश्व मंगल करो॥जजूँ०॥977॥

ॐ ह्रीं भद्राय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुमहिं 'कल्पवृक्ष' मन चाहि वांछा भरो।
अतः सकल भव्यजीत नित भक्ति से पूजते॥जजूँ०॥978॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

'वरप्रद' जिनेशा एक वरदान दे दीजिये।
मिले तुरत सिद्धिधाम बस और ना चाहिये॥
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे॥979॥

ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश ! यम नाशके 'समुन्मूलिकर्मारि' हो।
उखाड़ जड़मूल से करम शत्रु नाशा तुम्हीं॥जजूँ०॥980॥

ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारये नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! तुम 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' लोक में।
समस्त अठ कर्म ईंधन जलावते अग्नि हो॥जजूँ०॥981॥

ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घ्यं.....।

समस्त शिव कार्य में निपुण आप 'कर्मण्य' हो।
प्रभो ! निमित आप पाय सब कार्य मेरे बनें॥जजूँ०॥982॥

ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः अर्घ्यं.....।

समस्त कर्मारि के हनन में सुसामर्थ्य है।
अतेव कर्मठ तुम्हीं सकल कार्य में दक्ष हो॥जजूँ०॥983॥

ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः अर्घ्यं.....।

समर्थ प्रभु आप ही सतत 'प्रांशु' सर्वोच्च भी।
समस्त अघ नाश के सकल सौख्य संपद् भरो॥जजूँ०॥984॥

ॐ ह्रीं प्रांशवे नमः अर्घ्यं.....।

जिनेश ! बस आप 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
हिताहित विचारशील तुम सा नहीं अन्य है॥जजूँ०॥985॥

ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घ्यं.....।

समस्त जग जानते प्रभु 'अनंतशक्ती' तुम्हीं।
अनंत गुण पूरिये हृदय में सदा राजिये॥जजूँ०॥986॥

ॐ ह्रीं अनंतशक्तये नमः अर्घ्यं.....।

न छिन्न भिन्न हों कभी प्रभु सदैव 'अच्छेद्य' हो।
मुझे स्वपर ज्ञान हो स्वयम् ही स्वयंभू बनूँ॥जजूँ०॥987॥

ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! 'त्रिपुरारि' हो त्रिविध कर्म को नाशके।
जरा जनम मृत्यु तीन पुर नाश कीने तुम्हीं॥जजूँ०॥988॥

ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं.....।

'त्रिलोचन' त्रिकालवर्ति सब वस्तु को देखते।
जिनेंद्र ! श्रुतज्ञान से विमल स्वात्म चिंतन करूं॥जजूँ०॥989॥

ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं.....।

'त्रिनेत्र' तुम जन्म से मति श्रुतावधी ज्ञानि थे।
पुनः त्रिजग देख के सकल ज्ञानधारी भये॥जजूँ०॥990॥

ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं.....।

त्रिलोक पितु आप 'त्र्यंबक' कहें मुनीनाथ भी।
मुझे भी प्रभु पालिये निजगुणादि से पूरिये॥जजूँ०॥991॥

ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! 'त्र्यक्ष' हो सतत रत्नत्रैरूप हो।
मुझे भि त्रय रत्न दो सकल लोक स्वामी बनूं॥जजूँ०॥992॥

ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः अर्घ्यं.....।

स्वघाति चउ नाश 'केवलसुज्ञानवीक्षण' बनें।
विघात घन घाति मैं सकल ज्ञान पाऊं प्रभो॥जजूँ०॥993॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! तुम 'समंतभद्र' सब ओर मंगलमयी।
अमंगल हरो सभी भुवन में सुमंगल करो॥जजूँ०॥994॥

ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! सकल शत्रु शांतकर आप 'शांतारि' हो।
मुझे करम शत्रु शांतकर शक्ति दे दीजिये॥जजूँ०॥995॥

ॐ ह्रीं शांतारये नमः अर्घ्यं.....।

सुधर्म संस्थाप के तुमहि, 'धर्म आचार्य' हो।
प्रभो सकल विश्व में सदय[1] धर्मनेता तुम्हीं॥
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे॥996॥

ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं.....।

'दयानिधि' तुम्हीं सभी जन दया के भंडार हो।
दयालु मुझपे दया अब करो दुखी जान के॥जजूँ०॥997॥

ॐ ह्रीं दयानिधये नमः अर्घ्यं.....।

पदार्थ सब सूक्ष्म भी लखत 'सूक्ष्मदर्शी' प्रभो।
मुझे अतुल शक्ति दो सकल लोक आलोक[2] लूं॥जजूँ०॥998॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं.....।

स्वकाम अरि जीत के प्रभु तुम्हीं 'जितानंग' हो।
अभीप्सित सुपूरिये विषय काम को नाश के॥जजूँ०॥999॥

ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः अर्घ्यं.....।

'कृपालु' करके कृपा सकल पाप को नाशिये।
अनन्त सुख दीजिए भुवन शीश पे थापिये॥जजूँ०॥1000॥

ॐ ह्रीं कृपालवे नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! भुवि 'धर्मदेशक' तुम्हीं सुधर्माब्धि हो।
मुझे स्वपर भेदज्ञानमय धर्म दीजे अबे॥जजूँ०॥1001॥

ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं.....।

'शुभंयु' शुभ युक्त हो प्रभु सुखामृताम्भोधि हो।
मुझे शुभमयी करो तुरत शुद्ध आत्मा बने॥जजूँ०॥1002॥

ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! 'सुखसाद्भूत' अनुपं सुखाधीन हो।
अनंत सुख दो मुझे गुणसमूह से पूर्ण जो॥जजूँ०॥1003॥

ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः अर्घ्यं.....।

---

1. दया सहित, 2. देख लूं

जिनेश ! तुम 'पुण्यराशि' शुभ पुण्य भंडार हो।
पवित्र निज को किया मुझ पवित्र आत्मा करो॥जजूँ०॥1004॥

ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः अर्घ्यं.....।

'अनामय' प्रभो ! तुम्हें सकल व्याधि पीड़ा नहीं।
समस्त तनु रोग नाश भव व्याधि मेरी हरो॥जजूँ०॥1005॥

ॐ ह्रीं अनामयाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! तुम 'धर्मपाल' जिन धर्म को रक्षते।
अनंत जिनधर्म हे हृदय में विराजो सदा॥जजूँ०॥1006॥

ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः अर्घ्यं.....।

प्रभो ! 'जगत्पाल' हो भुवन प्राणि को रक्षते।
मुझे सतत रक्षिये जगपते ! मनोरक्ष हो॥जजूँ०॥1007॥

ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः अर्घ्यं.....।

जिनेंद्र ! जगमध्य 'धर्मसाम्राज्यनायक' तुम्हीं।
सुमोक्षप्रद सार्वभौम जिनधर्म के ईश हो॥जजूँ०॥1008॥

ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य—शंभु छंद

दिग्वासादिक नाम एक सौ, आठ आपके सुरपति गाते।
नाममंत्र को मन में ध्याकर, योगीजन निज संपति पाते॥
मैं भी प्रतिक्षण नाममंत्र को, हृदय कमल में धारण कर लूं।
प्रभु ऐसी दो शक्ती मुझको, तुम भक्ती से भवदधि तर लूं॥10॥

ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

घाति चतुष्टय घातकर, प्रभु तुम हुए कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ ॥1॥

चाल–हे दीनबन्धु श्रीपति.....

प्रभु दर्श मोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है॥
चारित्रमोह का विनाश आपने किया।
क्षायिक चारित्र नाम यथाख्यात को लिया॥2॥
संपूर्ण ज्ञानावरण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया॥
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनन्ता।
सब लोक औ अलोक को लखते हो तुरन्ता॥3॥
दानांतरायनाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम कैवल्य दान जो॥
लाभांतराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंत लाभ का तब लाभ प्रभु लिया॥4॥
जिससे परम शुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना॥
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
कुछ हीन पूर्व कोटि वर्ष तक टिका रहे॥5॥
भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदक वृष्टि शोभ हैं॥

पद के तले वर पद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्यशीत पवन आदि सौख्य शर्मदा॥6॥
उपभोग अंतराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी॥
सिंहासनादि छत्र चमर तरू अशोक हैं।
सुरदुंदुभी भाचक्र दिव्य ध्वनि मनोज्ञ हैं॥7॥
वीर्यान्तराय नाश से आनन्त्य वीर्य हैं।
होते न कभी श्रांत आप महावीर हैं॥
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया॥8॥
प्रभु आप सर्वशक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना॥
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये यदि मानिये अरजी॥9॥

दोहा

गुण समुद्र के गुण रतन, को गिन पावे पार।
मात्र अल्पमती मैं पुनः, क्या कह सकूँ अबार॥10॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां दिग्वाससादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाजंलिः।

गीता–छंद

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम विधान भक्ती से करें।
वे पाप कर्म सहस्रनाशें सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों कामनायें भी फलें॥11॥

इत्याशीर्वादः।

समुच्चय जयमाला

चाल (हे दीन बन्धु.....)

जै जै प्रभो ! तुम सिद्धि अंगना के कांत हो।
जै जै प्रभो ! आर्हन्त्य रमा के भी कांत हो॥
हे नाथ ! आपकी सभा अनुपम विशाल है।
उसके लिए इस जग में न कोई मिशाल है॥1॥
पृथ्वी से पांच सहस धनुष उपरि गगन में।
प्रभु आपका समोसरण है मात्र अधर में॥
सोपान पंक्ति बीस सहस श्रेष्ठ मणिमयी।
बस एक मुहूरत में सभी चढ़ते हैं सही॥2॥
बहुरत्नमयी धूलिसाल कोट प्रथम है।
उसमें हैं चार द्वार नाम विजय आदि हैं॥
चारों दिशा में चार मानस्तंभ बताये।
जो कोस अड़तालीस तक भी दर्श कराये॥3॥
है चैत्यभवन भूमि रम्य द्रह वनादि से।
जिन बिंबनिलय से पवित्र तुम प्रसाद से॥
आगे है रम्य खातिका जो स्वच्छ जल भरी।
फूले कमल से हंस आदि रव से चित्त हरी॥4॥
है तीसरी लतावनी वकुलादि कुसुम से।
बल्ली के मंडपों से रम्य व्याप्त सुरभि से॥
उद्यानभूमि चौथि चार दिश में चार वन।
अशोक सप्तछद तथा चंपक व आम्रवन॥5॥
इनमें है चैत्यवृक्ष जैन बिंब को धरें।
मुनिगण भी जिनकी वंदना बहुभक्ति से करें॥
आगे है ध्वजा भूमि जो अगणित ध्वजा धरें।
हंसादि चिन्ह दश तरह से युत ध्वजा धरें॥6॥
दशविध सुकल्पतरु से कल्पवृक्ष भू कही।
सिद्धार्थ वृक्ष सिद्ध बिंब युक्त धर रही॥
इनकी जो वंदना करें त्रिकाल भक्ति से।
वे सर्वसिद्धि प्राप्त करें स्वात्म शक्ति से॥7॥

आगे की भूमि में कहीं महलों की पंक्तियां।
जिन भक्ति नृत्य आदि करें देव देवियां॥
भू आठवीं जो बारहों कोठों को है धरे।
मणि स्फटिक की भित्ति से विभक्त गण धरे॥8॥
कोठे प्रथम में श्रीगणेश साधुगण रहें।
क्रम से है कल्पवासिनी देवी वहां रहे॥
है तीसरे में आर्यिका औ श्राविका घनी।
फिर ज्योतिषी औ व्यंतरी व भवनवासिनी॥9॥
फिर व्यंतरों ज्योतिष्क भवनवासि के कोठे।
आगे हैं कल्पवासि मनुष औ पशू कोठे॥
द्वादश गणों के जीव ये चारों तरफ घिरे।
जिनदेव की वाणी सुनें सम्यक्त्व गुण धरें॥10॥
आगे की प्रथम पीठ पे यक्षेन्द्र खड़े हैं।
चउ दिश में यक्ष धर्मचक्र शिर पे धरे हैं॥
हैं पीठ दूसरी पे चिन्ह युक्त ध्वजायें।
तृतीय पीठ को भी रत्नरचित बतायें॥11॥
इसके उपरि है गंधकुटी नाथ की बनी।
जिस पर हैं चमर आदि व बजती हैं किंकणी॥
मणिस्फटिक से बना रत्नजटित सिंहासन।
जो गंध कुटी मध्य में है कमल इवासन॥12॥
इस पे जिनेन्द्र चार अंगुल अधर राजते।
त्रैलोक्यनाथ अतुल विभवयुत विराजते॥
चौंतीस अतिशयों व आठ प्रातिहार्य से।
आनन्त्य चतुष्टय सहित अनुपम विभासते॥13॥
ये ग्यारहों हि भूमियां अद्‌भुत निकेत हैं।
इन मध्य मध्य कोट त्रय व पांच वेदि हैं॥
सब रत्न की रचना वहां नव निधि भरी पड़ीं।
गोपुर व द्वार नाट्य शालायें बड़ी बड़ी॥14॥
प्रेक्षा सदन अभिषेक सदन आदि वहां पे।
मंडप सभागृहादि भी श्रुत केवलि ताके॥

वापी सरोवरों में वहाँ फूल खिले हैं।
वापी में कर स्नान सात भव भी दिखे हैं॥15॥
कोठों का लघू क्षेत्र तो भी जिन प्रभाव से।
प्राणी असंख्य बैठते निर्वैर भाव से॥
आतंक रोग भूख प्यास आदि ना वहाँ।
मिथ्यात्वि असंज्ञी अभव्य शूद्र ना वहां॥16॥
अंधे भी वहां देखते गूंगे भी बोलते।
लंगड़े चढ़े सब सीढ़ियां बहिरे भी हैं सुनते॥
विष भी वहां निर्विष बने सब शोक टले हैं।
सब जात विरोधी वहां आपस में मिले हैं॥17॥
स्तूप बनें तीन लोक आदि के वहां।
जो सर्व सृष्टि, रूप धरें शोभते वहां॥
बहु धूपघड़ों में सभी सुधूप खे रहे।
निज कर्म धूप को उड़ा आनंद ले रहे॥18॥
इत्यादि विभव है अपूर्व कौन कह सके।
गणधर गुरु सुरगुरु भी नहिं पार पा सके॥
जो एक बार समोसरण में चले गये।
वे भव्य मोक्ष पथिकों की कोटी में आ गये॥19॥
जो भक्त एक बार भी तुम अर्चना करें।
निश्चित वे कर्म प्रकृतियों की खंडना करें॥
फिर वे कभी यमराज के चंगुल में ना पड़ें।
हो पूर्ण ज्ञानमती मोक्ष महल में चढ़ें॥20॥

दोहा

सर्व सात सौ बीस जिन, पंचकल्याणक ईश।
हो कल्याणक कल्पतरु, नमूँ नमूँ नत शीश॥21॥

ॐ ह्रीं तीर्थकराणां अष्टोत्तर सहस्रनाममंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता–छंद

जो भव्य श्रेष्ठ 'सहस्रनाम विधान' भक्ती से करें।
वे पाप कर्म सहस्र नाशें, सहस मंगल विस्तरें॥
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो, हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों, कामनायें भी फलें॥1॥

इत्याशीर्वादः

प्रशस्ति

शंभु-छंद

जो पंच कल्याणक के स्वामी, जिन धर्मचक्र के ईश्वर हैं।
मैं उनको प्रणमूं बार बार, वे त्रिभुवन के परमेश्वर हैं॥
ये भूत भविष्यत वर्तमान, त्रयकालों के चौबिस चौबिस।
इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र के, बहत्तर जिन प्रणमूँ नित॥1॥
महावीर प्रभू के शासन में, श्रीमूलसंघ जगमान्य कहा।
श्री कुंदकुंद आम्नाय में ही, बस सरस्वति गच्छ प्रधान रहा॥
विक्रम संवत् बीसवीं सदी में, शांतिसागराचार्य हुए।
चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर, इस युग में प्रथमाचार्य हुए॥2॥
इनके ही प्रथम शिष्य, पट्टाधिप वीरसागराचार्य हुए।
आर्यिका ज्ञानमति मुझे किया, ये पहले पट्टाचार्य हुए॥
ईस्वी सन् उन्नीस सौ त्रेपन में, आचार्य देशभूषण गुरु से।
क्षुल्लिका वीरमती बन करके, स्वाध्याय किया श्रुत भक्ती से॥3॥
ईस्वी सन् पचपन म्हसवड़ में, चौमास किया गुरुभक्ती से।
स्तोत्र सहस्रनाम से मंत्र, बनाये जिनवर भक्ती से॥
यह पहली रचना थी मेरी, इसका मुद्रण था तभी हुआ।
फिर कल्पद्रुम विधान मैंने, इन सहस अर्घ्य से पूर्ण किया॥4॥
ईस्वी सन् उन्निस सौ चौरानवे; वीर संवत् पचीस सौ विंशति।
चौबिस फरवरी प्रसिद्ध हुई, थी माघ शुक्ल तेरस की तिथि॥

श्री ऋषभदेव की जन्मभूमि, वर तीर्थ अयोध्या नगरी में।
त्रय चौबीसी जिन प्रतिमा के, हुये पंचकल्याणक मंदिर में॥5॥
श्री ऋषभदेव जिन प्रतिमा का, हुआ महामस्तकाभिषेक तब।
जिन जन्मभूमि अतिशय ख्याती, को प्राप्त हुई इस जग में अब॥
फिर टिकैतनगर में मैं आई, यहां वर्षा योग हुआ सुंदर।
आश्विन सुदि शरद पूर्णिमा को, यह विधान पूर्व हुआ मनहर॥6॥
मुझषष्टी पूर्ति समारोह, इकसठवीं मंगल जन्मतिथि।
उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, श्री मोतीलाल वोरा अतिथि॥
मम जन्मभूमि में जन्मजयंति हुई अभूतपूर्व सुंदर।
जिनवर के चरणों में अर्पित, विधान सहस्रनाम सुन्दर॥7॥
मुझ "ज्ञानमती" कृत यह विधान, तिहुँ जग में मंगलकारी हो।
सब विघ्न उपद्रव दूर करे, धन धान्य भरे सुखकारी हो॥
जो एक हजार आठ व्रत कर, विधि से उद्यापन करते हैं।
वे इस विधान को भक्ति सहित कर महामहोत्सव करते हैं॥8॥
जिन नाम स्थापन द्रव्य क्षेत्र, अरु काल भाव निक्षेप कहे।
इन छह से जिन भक्ती करके, कैवल्य ज्ञानमती पूर्ण लहें॥
जब तक इस जग में सूर्य चन्द्र, जब तक जिन धर्म प्रकाश करे।
यह सहस्रनाम पूजन विधान, तब तक सब वाञ्छित सिद्ध करें॥9॥

इति शं भूयात्। वर्धतां जिनशासनम्।

लेजर टाईपसैटिंग :
मूनिक कम्प्यूटर सैन्टर, शारदा रोड, मेरठ। ✆ (0121) 517403